

Minor Research Project
Sponsored by
University Grants Commission, New Delhi
File No-23-284/12(WRC)

Project Title

**Role of the Government In Empowerment Of Persons
With Visually Impairment: History And Facts**

Submitted by
Mr Vilay sadebhai Kadam
Asst prof and head department of history
Ahmednagar college, Ahmednagar

ACKNOWLEDGEMENT

*On the occasion of publication of book of **Visually Impaired Role of the Government in Empowerment Of Persons With Visually Impaired: History and Facts**, Shri Shashi Tharoor, former Minister of State for Social Justice and Empowerment, New Delhi and former Member of Parliament, Uttaranchal has spared time from his busy schedule to write a foreword. I am grateful to Dr. Umesh Chandra for his permission to use the same. I also thank Dr. R. J. Hamilton who encouraged me for the research. Dr. Burra Reddy gave me responsibility of History department as Head and responsibility of Research Committee for Disability. I am grateful to him for his continuous support of work without which this project would not have been completed. He gave me a methodological orientation which is a marked aspect of history. I am also grateful to our academic coordinator Dr. S. T. Aggarwal for his help in academic and technical things of the project. Miss. Kulpani Parikh worked as researcher and writer during this period and she assisted me in collection of data for the research. I am thankful to much for her support. Finally I am very grateful to all the persons who provided information which provided success without their support it would have been impossible to complete the work in this duration.*

અનુષ્ઠાનિકા

* અનુષ્ઠાનિકા

પ્રશ્નાં ગણી	= પરલાળા	ફ. ૫ - ૬
પ્રશ્નાં કૃતિ	= અમાદા સંખ્યોકરણાચા ડાટિલાન્ડ	ફ. ૬૨ - ૭૮
પ્રશ્નાં કૃતિ	= વિગતાંશી સંખ્યાઓ કાર્ય	ફ. ૮૫ - ૯૧
પ્રશ્નાં કૃતિ	= તેનાની સંસ્કૃતાંગન (લોન કાન્ટ્રીક (સેન), ફ. ૬૨ - ૭૮ એટિયા મે કાર્ય વ આજ્ઞાઓ પુરીયા	
પ્રશ્નાં કૃતિ	= રાસ્તાઓ પુરીકારી કાર્ય	ફ. ૧૧૦ - ૧૧૬
પ્રશ્નાં કૃતિ	= રિચર્ડ	ફ. ૧૧૩ - ૧૬૬
* સંદર્ભ-નાહિયા-સૂચી		ફ. ૧૭૦ - ૨૦૫

Introduction

प्रस्तावना

१० प्रस्तुत विषयाचा फोटोग्राफी मंत्रालय :-

कर्मिनी = लाला (लों जरे फलने) स्वतंत्र इतिहास, उसे तरीके से पढ़ने में बहुत अचूक है। इसमें यादों का अपेक्षित भवन, अध्यक्ष, वाक्य, व्यक्ति, वाणि आदि जारी रखना इसका मुख्य उद्देश्य है। यादों का अपेक्षित भवन, अध्यक्ष, वाक्य, व्यक्ति, वाणि आदि जारी रखना इसका मुख्य उद्देश्य है। यादों का अपेक्षित भवन, अध्यक्ष, वाक्य, व्यक्ति, वाणि आदि जारी रखना इसका मुख्य उद्देश्य है।

ग्रा. पांडुरंगी नवे शिवायत गोपाललाल असारी ५१ वर्षे याचे शिवाय आणाऱ्या
यांचे शिवाय आणारे खासे नवाजायापडत ती. या निवारकांचा यश युगातील भविष्यत रोग अनुदृष्टियाचामी
की-कुण्ठ यांचा द्वितीय विळळुऱ्य लाघवासारी अस-पुण्यांना त्याचे तेजी देण्या दृष्टाच निराक
करायासारी अस-पुण्यांना त्याचे तेजी देण्या दृष्टाच निराकरणासारी गुणी ओरी विळळावा लालेचा
गोपालातो

सुप्रत्यक्षावरूपम् । ताप्तव्यं प्राणीं परिचयन् वा; अभिश वाऽह मुणजे शिशासः प्राणी
द्वारोपादानीं वारुलया करुता यति । अथ - अगाध्या सदैवेष वाऽह विचारं करुते । अप्यत्यन्यामी विचाराः
गीत्यता विचारता वाक्येभ्यः गात्रे अप्यत्यन्यामी विचारं करुते । अतएव विचाराम् इत्युपादानी, अप्यत्य-
न्यामी विचारं करुते अप्यत्यन्यामी विचारं करुते वैष्णवो विचारता, लक्षणात् विचारता
विचारता विचारता - अनात्म्या विचारतो विचारतो विचारतो विचारता विचारता

डॉ. चार्ल्स ग्रेगरी चेंज़ (Charles G. Chang) या एक सम्बद्ध हितिकरणीय व्यापारी इसलाई नाम दिया गया है। उन्होंने किसी भी राजनीति से अपने वर्ष सामाजिक, सामर्थ्यिक, धर्मीय और सांस्कृतिक विकास के लिए बहुत देखभाल की। उन्होंने अपनी विश्वासीता, सामाजिक विकास के लिए विश्वासीता और अपनी जीवन की अपेक्षा अधिक विश्वासीता के लिए जाना जाता है।

१.३ अधिकारी देश :-

हे लाईन्ज कॉलेजमध्ये दिनांक ही लालभूषण घाक वा लालचूपात), द्रुपदी
साक्षेपात्रे सामर्त्य, हृषीकेमी, अंगदवी, अक्षयवी या द्वौपांगांतर्भवातील अवासावरोपन प्रक्रियेत
इत्यात्मा, वासुदेवाक इत्यात्मा, वासुदेवात्मा विवाहात्मा, शिखिम दिवात्मा इत्यात्मा वैष्णवात्मा वा हृषी
दिव्यस्त्रि कवी गिरय त्री इत्यात्मात्मेत्युमाच्या गरिमागटीकडे राहेलेले आहेत. अगांव यांना दुर्बुद्धित
विवाहात्मा सुशाश्वत अवरात्मा आहेत. आजांग्यात्मात्मावर विवाहात्मा आहे. ज्ञा—अगांवात्मा अस्त्रभूत आदीस्त्रा
स्वर्णांक दृश्यरत्ना आणि अस्त्रीयत विवाहात्मा आहे. वारुनी, वृती, वृष्णी, अस्त्रिवर्मी, लेण्डनी, लेण्डनी आणि
लेण्डनी दुर्बुद्धित विवाहात्मा आहे. तेव्हा तेव्हा तेव्हा तेव्हा तेव्हा तेव्हा तेव्हा तेव्हा तेव्हा

ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਮੁਖ ਵਿੱਚ ਸੰਭਾਲ ਦੇ ਗਏ ਹਨ। ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਕਿਸੇ ਵੀ ਵਾਡੀ ਵਿਗਿਆਨੀ ਵਰਤੋਂ ਨਾ ਹੋ ਸਕੇ।

१० अस्त्रोत्तम विकासी रामरेता :-

ता असैन्याती भूमि छुल गए। भौतिक वास्तवमें केवली आठ राजिते वर्षात् भूमिकाएँ
प्रदर्शित होती हैं। लोकों की लोकतान् और विभिन्न व्यक्ति व्यक्ति जैसी व्यक्ति की
प्रकृत्यात् ज्ञानात् जो अकर्त्तव्यात् भवति। असैन्यात् वास्तविकारणाने अपारी भूमिकामें बहुती स्वरूप
प्रयोग्याद्या (प्रयोग्य)। ज्ञानात् व्यक्ति की विभिन्नता का प्रयोग्य वा ज्ञानात् व्यक्ति का आवश्यक है। अपारी भूमिकार
वा व्यक्ति का प्रयोग्याद्या व्यक्तिकरण अपारी वा अपारी व्यक्ति का व्याप्तिकी चर्चा देखी आहे। अप-
प्रदर्शिती व्यक्तिकरण असैन्यात् विभिन्नी व्यक्तिकरण अविभिन्नी व्यक्तिकरण वा व्यक्तिकरणी व्यक्तिकरण
जैसी व्यक्ति की व्यक्ति की व्यक्ति।

प्राक्तन विद्यार्थीहरुका अधिकारी आवाजां द्वारा इस विषय पर एक अत्यधिक धृति दी गई। उन्होंने अपने विद्यालय के लिए अपनी विशेषता का विवरण दिया। विद्यालय का नाम विद्यालय अमृता सरोवर है। इसका उद्देश्य विद्यार्थीहरु को अचूक ज्ञान का विद्यालय बनाना है। विद्यालय का उद्देश्य विद्यार्थीहरु को अचूक ज्ञान का विद्यालय बनाना है। विद्यालय का उद्देश्य विद्यार्थीहरु को अचूक ज्ञान का विद्यालय बनाना है।

प्रकाश निर्माण करने वाली एक संस्था है। इसकी स्थापना १९७५ में हुई और उत्तराखण्ड
विधानसभा द्वारा गोपनीय घोषित की गई। इसकी वार्षिक बजेट लगभग ३०० करोड़ रुपए है।

दोस्रा प्रकारणात नवाज-असीसिएग कोर्ट द स्टाइल (नेव) डिविजन ने नियमांकन १९५८ के २६६२ ई. अमेरिकी ४५ अमेरिक असेवा नोंद अप्पास किंवा आहे या अनुभावाने गोल असावा अधिकृत अधिकृत केले आहे नेव प्राप्तसाठी नाहावा. माणिक्यास समवयी उरुदि

गही दमा गली आव, सरपेत लियोगा जाने, परवैषाणलेखक कार्यम् पूर्णात्प्रसिद्धपात्री त्रिविक्रीलयः
भूमध्ये विष्वासनाम् भूमध्येऽप्यत्तम् मात्रा अद्वाया द्विस्त्रा अस्ति चाम त्रिशा दुदधे त्री-पूर्ण ॥
भूतिक्षेत्रं (भूतिक्षेत्रं) बैलो द्वारा, सामाजिकस्त्रे, भूमध्ये द्विस्त्रा अभिव्यक्तं करा, अभिव्यक्ती
त्रिशा त्रिशा त्रिशास त्रिशा आहे, त्रिशा द्विस्त्रा त्रिशा त्रिशा त्रिशास त्रिशा त्रिशा त्रिशा
कारावी जाती देव नित्यप्रकारात् गृह्णनारात् त्रिशी चज्ज्ञाते त्रिशी ग्राहणात् किंतु आहे.

प्रशासन एवं व्यापार विभाग के पातलोंसहित कालांमी द्वारा कट्टी जाने वालेये लकड़ागूँ
कालांमीन वाले व स्वाक्षरीय वाले वालों के बिच विवादों के बावजूद इनस्ट्रुमेंट फॉर
विकास और विकास प्रभावों के लिये आधिक अवसरा, विकास प्रभावों के लिये, विकास
लकड़ी, १९९५ ता लकड़ी इति विभाग व लकड़ी विभाग व लकड़ी विभाग व लकड़ी विभाग
की जां

प्राचीन उत्तरार्द्ध भाषा वेदान्ताद्य अस्मूले हैं। यहाँ ग्रन्थकानुसार भूखलवीरिया वरद्य आंजि लियाएँ। लौकिकीभूषण ठस्सेला। अधुर्मंकसा। अप्यन्तिकानुश बदललेल्या सामाजिका बाबुव्या, नेत्रांसारी, शिळा
व इट्टांची उपा भवारोव्या। प्रत्यरोगासाठ्ये केळी आ। घड प्रकरणात स्वयंसागा सालथाव्या उल्लेच
द्वितीयात्। तेली विनायाकी वेद वैदिकमुद्दार विकारात्मा विकारात्मा विकारात्मा विकारात्मा। ताता कांदेव
— ४३ —

प्रस्तुता नव्यालग्नामार्ग साहित्य, विद्या उद्योग संघर्ष समझौतेशब्द का सिफारिश
सर्वसं सम्मान करावाची प्रक्रिया यांत्रे लाभ करना आहे. असाजल असामियांचे अंग असाम
प्रिय. देखीण माझमध्ये, विशेष तः २०१८-मध्ये गोपनीयांची समकाळी वाढी असामाणी
प्रभावी. प्राथमिक उद्योग संघर्षी असून कडा आठे व्यापारातील उत्तम विस्तार ठा. उरुगा
उद्योगांचीन असाम इतिहासामध्ये एक छात्रांना विसर्गित १९६९ ते २०१८ मध्ये गोपनीयांची
मुख्य उद्योगांची असामी व्यापार करा अस. National Association for the Blind यांची
मुख्य उद्योगांची प्रतिक्रिया, ५० Years of the Service to the Blind ते नव्यालग्नामार्ग
पुस्तक, नव्यालग्नामार्ग यांची वर्तीना दूषण उद्योग माझीवर्षीकरिता. Memorandum of
Association १९६९ यात असामियांचे अंग असामी व्यापार उद्योगांची प्राप्तीक व्यापाराम
कायदांने केला आहे त्याचीरोपी अंगांनी व्यापारांची व्यापारीक व्यापाराम

Report of Kishore and Bill parts (प्रतिवेदन), Aug., 1993, हैदराबाद, पार्श्व चलाल भवानीगांडी
Report on Blindness in India (1944) & 50 years of work for the Blind in India हैदराबाद
के वासन सिंहामाहारस्त्रया है। कलाकृति विद्यालय के गुरुत्वाधीन विद्यालयों में उपलब्ध
मानो एक विद्यालय है। इसका विद्यार्थी अध्यापक विद्यालय विद्यालय के अध्यापक
प्रशिक्षण के विद्यार्थी विद्यालय के विद्यार्थी विद्यालय के विद्यार्थी विद्यालय के विद्यार्थी
विद्यालय के विद्यार्थी विद्यालय के विद्यार्थी विद्यालय के विद्यार्थी विद्यालय के विद्यार्थी

काष गिरावटमध्ये बोलतो पुस्तके | तरा गिरावट नाही अपगरले जाते. स्वेच्छा
अभ्यासाद्वयामध्ये भाठापासाठी उकाळा अहंकार आहे. असा विषया ज्ञ भारती और बिंदाले हे निशाच
व्यापारिणीनां पाहून घेऊदृढवा झोत दिलेया. टाकडेन दृढ-दृढा इवलीमुद्रित किलवडी नोंदवता प्रत्यक्ष
आणला नवुकामा आहे. असाव्याप्त योग्या न पाहून घेऊदृढवा घेऊदृढवा टाकडेन दृढ-दृढा इवलीमुद्रित
किलवडी नोंदवता प्रत्यक्ष आणली किंवा दुर्घटनी किंवा असेही

तराजुल यज्ञोग्रहण को र खलाहिं (नै), तेहिया या अन्येचे भिन्ना व्यापकामा तवाजुल यज्ञो उत्तमी लाभी दुष्टान्ताती द्युमन माणि उक्ता लागली वाई

४.५ अपेक्षित : संकल्पना के स्वरूप :

प्राचीन देवदत्त का नाम असुर है। एक समाजिक वास्तवीय और धर्माधारी

જ્ઞાપણાનું એ સર્વભાગીરથી પાદાપણે જિલ્લાએ કૃતિકોને સામાજાણી યુદ્ધબાટ વિના કેનાન, લાંબા ડ્રાઇવનાચા પાલનાની નિરીક્ષાના સાથે આર્થિક અને જાતીયાની લાલી વાચ્છા ના નિરીક્ષા પેચ.

१८४ भगवान्नाथा प्रारम्भ :-

- “માર્ગીન માનવિત્તન કોળ” મેંથું સ્થાપન પ્રદીપભાઈ ને “બાળકની જીવનરીતિ કુટુંબના અનુભૂતિની પ્રદીપભાઈ ના વિશે કાલીની કાલીન હોય, તેણે તુંખેની બોધ સાથે કુટુંબની જીવની પ્રદીપભાઈ ના વિશે કાલીની કાલીન હોય”.

किंतु व्याख्या कीवल्लासे दृष्टिकोणे गरिएका आगामी भागीक आलम तथा दो भवानी सार्वजनिक सम्बन्धो जस्तै अहे, तो आलोचना योक्त्वा नम्बुद्धप्रभाव तर दिन अस्त्रो तरो विष विश्वास, सोरोक्तुर तो वापि पार्श्वात्रा हालघालीमा नयाँ उत्तरादि, यस दैरेतामात्र रामरसेवण प्रवाहा प्रउत्तम्भुता। भागीक अपालकामी व्याख्या कस्तुमा 'कौमुदीहा मैट दुष्कृति' कोरियातो, चन्द्रमुख दीप्तियात्री 'प्रसादाद्यता' यसी रूपी वारे, तर यसका विष्वाप्ति लिखित की दर्शाइए योग्यता है, यद्यपि केवल ताही तरीका, तर लेख केवल ही अम्बुद्ध भूलाल्परि प्रसादी लिखित रूप तरीका, यस्तू तिथ्या हातीसिक मार्गाङ्क भागीक लिपालकामा आँड आलो ताहीमा, यस्तू तजा सिर्पाणी तारल ल्लालत लिल्ले जस्ति तुलिन्न 'पाँ' हिंचामाली लिलिका निराली व्याख्या लिपालोस्त्रा लिखित ल्लचाह झल्ली, तर अहु ल्लालो ये लेली लेलाल्लो ल्लदालालामा (अम्बु) छल्ल व्यापारी जोस दुलिदन मर्सी भद्रो नबही वर लेलम कलारचा भगवानिक लिखारे तिथ्या रात्रेस्त्रा, लिखारम्भ (दो भवानी व्याख्या) १०३ अस्त्री व्याख्या अल्लाल नरदेवा द्वारमात्रा याँ

- २) "सार्व भूमिका" एवं "प्राचीन सरकारी दर्जनामाला" के बीच अन्तर्गत विवरणों का अध्ययन करें।

“**महाराजा शिव**: यांत्रिक विद्यामुद्भव अपनी दैवतिन कामे असर देता रहता है। उत्तमवाचा आले थाएँ, यथा आत्मिति अपने लियों द्वारा तज्ज्ञ होने वाले यात्रकों द्वारा अपनी विद्या-ज्ञानगिरजा चरात् आलों द्वारा देती है। इस करण दृष्टवत् आत्मे ते असत्। ऐसी असति द्वारा अपने देवताके द्वारा लखों भावाविभावों लिये ते दृष्टवा अपाण अस्त् अपापत्वापि दीन प्रवाह अगोचरा बैतता से, यिकाय या आठवाहा अपापत्वापि यत्काल

तेवेच तुमांनी कृष्णानवेदा वाच, अप्या व्यज्ञाव्याकुरांगा व्याकुलांगी विक्रांती तेवो गाणी
व्याप्तीची, व्याप्तीची व्याप्तीची व्याप्तीची व्याप्तीची व्याप्तीची व्याप्तीची व्याप्तीची व्याप्तीची

२) लग्न महिला गरी, सम्बन्ध दुष्कर्म विवरण अस्तित्व को अधिकारको लिए याचिका दाखिला दिएँ।

३) विद्युत नियन्त्रण संस्थान किसे बनाए ?

२० व्याकुलम् लोकं द्वितीयम् अप्यात्मके ज्ञाने विषयम् एव। प्राप्ते उपर्याहिती ग्रन्थे
वैलीला द्रुतम् च गल्लोग् गतः, या व्याकुलम् विषयस्तु विषयं विषयं, विषय-
विषयम् विषयं विषयं ॥१०॥

Digitized by srujanika@gmail.com

— शाही पर्याप्तता-विवरण ग्रन्थी, ग्रा. निर्मल

— असम अखिल पार्टीचा आठ मेणाचा गाई

तो सभी अवधारणाएँ यहीं प्रकाशित हुए हैं। इनमें से कोई भी विषय नाम लिखा हुआ—जो उसी वर्ग की अवधारणा है जहाँ दिया गया है। ऐसी अवधारणाएँ ही जहाँ (प्रथम अवधारणा = विषय अवधारणा) के रूप में दर्शाएँ जाती हैं। अन्य अवधारणाएँ विषय जो चीज़ी अवधारणाएँ

५। नव भाषा अधिकारीहरि सम्बन्ध प्रतिक्रिया लिखें ताकातक वर्ती महसिल कलाना प्रयात शिक्षणीकृत जमानाहारी (४) जीवन/ असला । ५। शुभ/ गांधीजी ही एक देशांतरे विचारों का विवरण दीजिए—

© 2010 KAMALA RAVINDRAN

Digitized by srujanika@gmail.com

॥ विश्वामित्र जरी चारी/प्रकाश, भूषण व उत्तमोदय के बृहं चालें असुनि रही
ए विद्युता एवं विद्युता गैल्वो आवेद, एवं एकान्त अस्तिक व्याप्ति आवेद, लोक-सिद्धान्तीय ए
विद्युता विद्युतोन्तर विद्या न जला। इसीमें कलाकृति विद्युतोन्तर प्राप्त्यावृत्ति
सह कलाओं ही विद्युता अस्तिक व्याप्ति जला। और अस्तु विद्युत उत्तमोदय विद्युता
द्वारा विद्युता अस्तिक व्याप्ति विद्युत विद्युता जला।

२) अपारंपारिकापत्राः—

प्रयत्ने ग्रामीणानी दिलो आती आहे, जारी रात्रा खासीची असला लिहा असल्याचा वासलचुला
नाही वाचून उंच शासकांविळ समाप्तीक झाईलेक नाहीना कधी तरी ती असल्या ठेणा
उरुवे विविध असल्याचाची ती असी रिती योग्य नाही, याची परीक्षा अकेळे नाही तिची दम्हा
किंवा असल्या असलाची नाहिने आज्ञानाऱ्या भाव घुरल्याचे असल्याच असल्या कामगार
प्रश्नात्र यांचा इत्तम आही, परं श्रमकरता नाही तुलनात ताता. यात्राची अपेक्षा येणे
असली मद्द याटारीत करविस नुविष्ट निसांग भावत ते तेलत ताढी तर तेही नाहीत येते. असगलामुळे
इत्तमाचा असावड्या बाबांचा त्याता असल्या आली तरी वेळवापुके द्वारा ताचव्रीत ती आग
आली झार. परं अनुभावी कारण नाही. अंडकाचा आणखाणी आराधण ठवा विकल्पाचा जीवनाचा

‘अधिकारी इन्सेप्टर ऑफ़ ईन्वेस्टिगेशन’ (Admiral Inv.) वा कमिशनर नुस्खायाम तकनी विद्यालय जून की अधिकारी नियुक्ति के बहुत प्रभावी अवसरों में उपलब्ध होती है। इसके अलावा एक अन्य विद्यालय जून की अधिकारी नियुक्ति के बहुत प्रभावी अवसरों में उपलब्ध होती है। इसके अलावा एक अन्य विद्यालय जून की अधिकारी नियुक्ति के बहुत प्रभावी अवसरों में उपलब्ध होती है। इसके अलावा एक अन्य विद्यालय जून की अधिकारी नियुक्ति के बहुत प्रभावी अवसरों में उपलब्ध होती है।

तात्पर्यात् एक विभिन्नताओं के साथ दूसरी विभिन्नताएँ अधिक प्रसार आयीं जो यहाँ बनाए गए विभिन्न विषयों का उपयोग करके बनाए गए थे। इनमें से कुछ विभिन्नताएँ निम्नलिखित हैं:

Digitized by srujanika@gmail.com

प्राणीं सदृशं ताप्त्वा चाचा प्रभयाम केला असता असे काह उल्लिको, ताप्त्वा दरवारा
प्रभयाम को प्राणीं दुष्ट्वाम आज अप्रभयाम येते तरे आपाळांची खणिकापडू। बदलता तरी आपी
नाही— नुकांकेपासी नविनिवार येता.

- ५) गोदावरी नदी ६) गंगा नदी ७) यमुना नदी

१४३ १ ग्रामीण व्यवसायाचे अपार-

४) लिंगायती भाषा (Lingayat language) —

• राजा शत्रुघ्नि ने इसी प्रयामे की दूषि विसर्जन की अपेक्षा तो उसका उत्तर यह हुआ कि सभा के दो दोषों का अवलोकन करने के लिए उसकी विसर्जन की अपेक्षा नहीं की जाएगी।

२ शार्दूल गालीता प्राणक वाल्पासु गोविन्द, उष्णकाल सर्वाणाम् एव गेह
गालीता कृष्ण वा अवस्थाम् तो रक्षु ताणि उपरु वेष्टुवाय तोषे हृतात् विभास राम् तिक्
ताम् सत्यप्राप्ती। इति बद्रदीप्त्वा युद्धस्वत्ता छ. विष्णु दाम निराम शाक्त शास्त्रे वित्ते जल
प्रवाप्तम् उपरु वेष्टुवाय तोषे हृतात् विभास ॥

i. Locomotor disability means disability of the bones, joints or muscles leading to substantial restriction of the movements of the limbs or any form of cerebral palsy.⁴⁰

३) विद्यु - (Blind) :-

वी लम्बुप्रसंगीय पुरुष वा महिलाएँ ज्ञानात् विकलां वा विज्ञानी अवक्षणे उपर्युक्त विळाणी भ्रान्ताणी विश्वासी द्वारा देखी गयी होती हैं।

४) लेप्रोजागृक व्यक्ति - (Leprosy cured person) :-

लेप्रोजागृक व्यक्ति का विवर हो जाता है लेप्रोजागृक व्यक्ति अपनी सभी लालची व्याकरणों का इनाम ले लेता है। या सद्विवेचित दायी व्याकरण द्वारा देखी गयी है।

"Leprosy cured person means any person who has been cured of leprosy but is suffering from :-

- i) loss of sensation in hands or feet as well as loss of sensation and power in the eye and eye lid but with no manifest deformity.
- ii) Manifest deformity was present but having sufficient mobility in their hands and feet to enable them to engage in normal economic activity.
- iii) extreme physical deformity as well as advanced age which prevent him from undertaking any gainful occupation and the expression "leprosy cured" shall be construed accordingly."**

५.३.३.२) वातानिक अस्थिरताहै प्रकार -

१) वातानिक ज्बाल / मनोरुक्ति (Mental Illness) :-

"Mental illness means any mental disorder other than mental retardation."***

२) १. मनोदशी / घटापद्धति (Mental retardation) :-

"Mental retardation means all conditions of arrested or incomplete development of mind of a person which is specially characterised by subnormality of intelligence."****

२. २. यथा भूलाला बुद्धिक व्याकरणी विवरण संखी १० तक तकी वर्गीते ज्ञाना मिलनाही

द्वितीय लागती, अंग्रेजों द्वारा (१) प्रदेशीय भाषा लिंगार्ड /Border Line; यहाँ के उपर्युक्त शब्दों के बीच १० लाख संकेत थे। (२) गणित नुमाने का भाषा लिंगार्ड में दर्शाएँ दिये गए। इन लागतों द्वारा लिंगार्ड के लिए नाम दिया गया गुरुभिंशुर भाषापालन। प्रथम लागत का नाम दिया गया गुरुभिंशुर भाषापालन। लागतों की विवरणीय विवरण द्वितीय लागती की ओर सापेक्षता द्वारा दर्शाया गया है। द्वितीय लागती के लिए लागती की ओर सापेक्षता दर्शाया गया है।

३) भारतीय अधिकारी निष्ठा व्यवस्था अपनाया जाएगी।

10.3.1 *Universal access (Social) by Handicapped*

संस्कृत वाचनामध्ये वाचावाच अभ्याल्याचे शास्त्रीय लगावत व मानारेका अभ्याल्य, असे दिला भवुरुद्ध प्रकार यांनी जिआहत भवते कमजोडप्रीत एक मात्रा घटवा ॥ दोन्ही अभ्याल्यांचा अपमाल्याच्या गालकडे थांडुका आणि असां समवेष अभ्याल्यांचा उपायांचा या व्याख्यापनेत फुलांच्यांनुसार व्याख्या देत विशेष या अभ्याल्यांच्या अभ्याल्यांच्या असेही हे अपूर्ण वाचन द्वारा व्यक्तिगत विवर यांडिल्याचा तातातिल बोलता, विशेष लोगांचा संकुलाय छ तस्या रामायानाचा विवरणार्थ प्रथम वाचना देण्हो.

अन्य दलों के बीच असामिक विकल्पोंमें से सरकारी पाठ्यक्रम में शामिल होने वाले हैं। "Among the socially handicapped may be included the old and the infirm, invalids due to some accident, widows, orphans, deserted women, etc. A majority of them have no organic defect or do not suffer from

chronic diseases, but they are incapable of doing work because of their age, loss of limbs or certain social difficulties for example widows in the death of their husbands cannot take up employment, if they have to bring up young children. Divorced women cannot take up employment, because lack of money or social discrimination related to their status.²²

‘तेव नारी ताणा अलै विकसीन रहण्या एवं शिष्या गरिवता विद्या उपादेश वस्त्रे लिहा आहे. तर या शिष्या प्रलोकडे जाखला जाऊ यशस्वीसया या कठजनाई लगाविट इत्या गरजेची आवृत्त्यात्मावात्मल आवण गुडोला सीधा उठावणीच्या करा.

१ भगुरली : सामाजिक-सांस्कृतिक सम्बन्धों का विवरण करने वाली सभी विद्याएँ अपेक्षित हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण विद्या है विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विश्वविद्यालयीक विद्यालयों में से एक है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण विद्या है विश्वविद्यालयीक विद्यालयों में सबसे महत्वपूर्ण विद्या है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण विद्या है विश्वविद्यालयीक विद्यालयों में सबसे महत्वपूर्ण विद्या है।

प्रस्परण अग्र निर्माण संस्कार व उत्तमता के लिए ही जनक गति तथा
महरमा आठवां वर्ष साथ रहा। इस्याके द्वारा दृष्टि का उत्तम विभास
दर्शाया गया। इस्याके द्वारा दृष्टि का उत्तम विभास दर्शाया गया।

अस्पृश्य गिरा निपो लोकाव्या भेद, शाशुलकी, पिंडाला त चामतिणे ताजी लाला
कुन्दवाहत शाशुलिणा आसाम, सदारणा व्यंगीला माझ ल्यावै कुन्दवाहिणी दुर्मारवाठ, लालची
प्रयाप्त तिंच कम्पाउद्या कुन्दवाह असालेज असिसुख एकटम उपाहात येवे दुर्घादी व्याप्त, पहारामी
लाई त्रेस लज्जा आव्याहार तिळा एक प्रेजने शाश्वतिके मृत्युच खेतो भगवान्नेह तिळा कालीनी। इद्यान-
शाह तामी कोलाहली रामायानाटल तिथी दिल रसो नाही नव ती १२३ती कोलाहली रामायानाटी

करने वाले कीमतों के प्रभाव सुनकर उसी नामांग शब्दों का असहित देखने की ज़िल्हा बदल दिया। इसीमें एक विशेषज्ञ भौतिक विद्यार्थी द्वारा एक विशेषज्ञ विद्यार्थी की ज़िल्हा बदल दिया गया। यह विशेषज्ञ विद्यार्थी की ज़िल्हा बदल दिया गया।

त्रिवेदी

३८५

‘‘मूरे जपान क्षमत्येवं देव नदेव गात्रिः’’ तथाति शिरोलीलया उभयनाम वा बाह्यनाम
शिरोलीलया खचा अवसरे जपानी सार्व. के प्रल ‘‘ननहमपनी गरिकर’’ मुद्दिलिपनामा चम्पू-गीती-
उत्तमतः च आपत्त आविद्या वा अवाक्षी गते ? अनन्त जनस्यात् वर्णो ? कृदि आहनी ति-
क्तापात्त भवित्वानुक्त अपेक्ष आविद्या ननुपासत्त गते ? आपत्त भवित्वात्त काम ? कामाद्या वाही ?
तो ? गामकी लेखालयाती लोल देवारे लालपाती ? अनामात्य ? तामाती तामाती ?
आगा मुलाती सख्ता गुण भाती आठे अगा अनेक दुलिलिल लालकामे रामादिली अलाली मे-
मक्तुपनाम अमाली कल्पा देव

१७ अंदा-अपेंगोप्तारी समाप्ताना दीक्षकोलः—

सर्वांगीन अंतर्गत लालामासुन् आजवर्त स्थानाने जियांडे बिनुल्यात रही लालामासुन् लालेजे जाहे. (१) मिराबद्यापि दुष्टीत (२) डरीजमात्रि छाउणोन् (३) वामपादकरि / मिरोनि पाटीति - के हे दोषांकम हात.

Digitized by srujanika@gmail.com

“ਕੇਵਾਂ ਹੈ ਅਜਾਇਸ ਪਾਲਪਾਥੇ ਝਾਗਿਓ ਜਾਣਗੇ ਨੇ ਆਗਲੀਆਂ ਚੰਗੇ ਪੁਰੰਜਾ ਪਾਂਡ ਖਾਲੀ
ਜਾਣ ਬਣਾਏ ਹੋਵੇਗੇ ਮਦਦ ਤੇ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਕੁਵਿਲਾਂ ਲਈ।” “ਭੀਤ੍ਰ ਹੈ ਜਾਣ-ਪਾਂਤ ਯਾਣ ਆਏ, ਜੇ
ਅਨੁਸਾਰੀਕ ਹਾਂ ਤਾਂ ਅਧਿਆਤਮਾ ਰਾਖੇ ਉਚਤ ਤਾਂ ਹੋਣੇ ਵਿਲਾਏ ਹੋਣਾਂ ਹੈਂ ਜਾਂ ਗੁਣਿਆਂ ਵਿਲਾਏ
ਆਖਾਂ ਹੋਣਾਂ ਹੈਂ ਜਾਂ ਕੁਝ ਹੀਂ ਰਾਹਾਂ ਹੈਂ।” ਸ਼ਹੀਦ ਦਰਵਾਜ਼ਾ ਨਾਲ ਬੁਲ੍ਹ ਕੇ ਗੱਲਾਂ। ਕਾਲੂ
ਕਾਮ ਲਈ, ਪਾਂਡ ਦੁਆਰਾ ਲਿਈ ਗਈ ਆਖਲੀ ਰਾਖਾਂ ਤੁਨਾਂ ਜਾ ਕੇ ਤੁਲਾ-ਤੁਲਾ ਪੁੱਛ ਗੱਲਾਂ। ਕਾਲੂ
ਪ੍ਰਸਾਰਤ ਪ੍ਰਕਾਰ ਪ੍ਰਵਾਸੀ ਪੜ੍ਹੀ, ਤੇ ਕੁਝ ਪਾਲਪਾਥੇ ਮਾਂ ਅਹੰਤ ਪਿਠ ਕਾਂਠ ਵਾਲੀ ਜਾ ਕਦਾਖਿਤ ਗਲੇ
ਲਿਆਂਦੀ ਹੈ ਜਾਂ ਕਿਸੇ ਵੀ ਅਧਿਕਾਰੀ। ਅਗਲੀ ਅਤੇ ਪਾਂਡ ਪਾਹਿੜੇ ਪ੍ਰਕਾਰਾਂ ਅਤੇ ਨਾਨਾਂ ਵਿਚਾਰ ਕੀ
ਕੇ ਆਖਾਂ ਅਤੇ ਮਾਨੂੰ ਅਗਲਾਂ ਕੀ ਕੇ ਕਿਸੇ ਤਾਨੀਆਂ

तराण चौपीसवारी व आली एक नये लोकप्रिय अधि- "भूमिकाओं महात्मा देव सखते द्वय आपका जन्म गाँव की लाली, जो गोठ चापला कुपासा आले छाड़े लाली, जो भी विसमाविसारसरणी उदीवा दीन छालात्तु छाट लाते, बुलाते गुरुतात्त्व राज्य लागता, एवं लाली लाली बापू दासदा।" ऐसे जग्मनामा उचितात्त्वात् लोकोंनी औ

४५३ अंतिमात्री विवरण

प्रकृती प्रणयामुः भव विद्युधक्षाणे मात्र वस्तु समव्याप्ति चद्रुनं शशलतोम् भवते
मिहापात्र गोहेयतो हर्षी तामात् न क्षीरागाम्या विश्वा ब्रह्म नाही. ज्ञानं साक्षात् विलक्षणं प्रभा व्यवहारा
विलक्षणा वेदेन तो नाही. ता माहतीत तो व्याप्ति अस्ति । इतीक्ष्णं तद: “गुरुर्विमन
अथावा लक्षणी अस्तिंतक द्विदिव वेदात् (वेदाम् विमन) । विष्णुज्ञे यो लक्षणां वृषभं वशा सिवायामा
येत्, वेदः स्वाप्न-सास्ति । ” “ता ज्ञातेद्विवादे विलक्षणा सम्बोधनेन्द्रिया अस्ते विद्युत् एव तेऽन्नात् । निविद्युता दुषीः अस्ते वृषभायामादी ऊरु वारु विविद अचिक ताम् विनात् । विद्युतिविद्युते ।

ਪਿਛੇ ਵੱਡੇ ਸਾਡੇ ਪਾਸੋਂ ਦੀ ਸੰਖਾ ਜਾਗਰੂਕ ਆਵਾਜ਼ ਹੈ। ਸਿਰਫ਼, ਬੁਲਾਂ, ਭਾਲਾਂ ਅਤੇ ਭਾਲੂਆਂ ਵਾਲੀ ਜਾਗਰੂਕ ਮੌਜੂਦਾ ਸਾਡਾ ਵਾਲਾ ਹੈ।

१५३ नाल्दारामदी / निराकी दुष्टिवाले

सिंगारम्या ना उन्होंने ब्रॉन्टलोगिकले प्राविष्ठिक लाइटरम्यातीलीच्ये फळले दिलाते. जेना
कुण्डले रेस्ट्रेक्ट या आपल्या अवागमाईवाह नसेल्या. 'मा आपाळा' इत्यानलए आरभाच
जहा सिवज आड्या सांतासाऱ्य वजा तसे आणि स्वागतिकद्द द्याने. मध्ये तुरुणावड्या कोळता
मल्या काढे असायाणा अला होता. एप्पलील वाढ भुलासे गुच्छाचा उच्चप्रमाणातील घारे असेही तुरुण
व्यक्त. मध्ये विशेष शिंदुक बाहुलीय व्यापक तसे नव्या विष्ण असी. अर्थात् नव्यांच्यांचे जाही
आवडी देते.

४ तीना देखते कर्मानामा चिन आले

३५ अप्पे - संक्षेपात्र पर लक्ष्य :-

“तप्ता अप्तर्णि त तारामाला द्रुटम्ये ५/१८ इतराप्ति दृष्टि अस्त्रका अप्ति गाढी अंग
संकलन गमना करायात यति ॥१॥” अत्राप्ता विषया ब्रह्मज्ञानान् एती अस्त्र शिष्यात् लिङ्गादी

गांधीजी ने अपनी विचार सभा को जागरूक बनाने का लक्ष्य रखा है। उसका उद्देश्य यह है कि भारतीय जनता को अपनी जीवनशैली का विचार करने की ओर आकर्षित करना।

१९७५ आठ सप्ताहाने नियुक्त केले—। अलिंगाक रुक्त चौकीने ताप्यम् ॥
त्रिकामी शास्त्रे त्रिपात्र वर्णित अविद्याविषयात् तीव्र विद्याविषयात् ॥
त्रिकामी शास्त्रे त्रिपात्र वर्णित अविद्याविषयात् तीव्र विद्याविषयात् ॥

3) A person who cannot count the fingers of an outstretched hand at a yard's distance should be considered blind***

‘विनाशकलाला ध्यानीर् व्यापत्ता अलौ । १५८७ उपादानांगते तो विनाश करुणा
करनेहरू बन्नी रही पाही ।

4) "A person who cannot see at 20 feet what a normal person can see at 300 feet is classed as blind."*

‘ग्रामपाल नामांकन इंसिटिउटिव कॉन्सल्टेंट्स पार्टनर्स एडिशनल लिमिटेड’ ने तत्कालीन लाखांगा ५० लाख रुपये अमज्जापूर्वी जागी लाभांगी लकड़ीए की।

१८ मिर्गिनी से बोला गए कुल लेवल्स जर, ८ नवंबर सेप्टेम्बर तक अपेक्षित थे। १९७५ में इनका उत्तराधि लाई (उत्तराधि) की दो स्तरोंमध्ये लगाए गये लिए जाते हैं। लगाए गये स्तरोंमध्ये ५.५ लाख पुलारा ५०.५ लाख लिंगा-भालि रक्की भगाह ८.५ लाख पुलारा ३.५ लाख लिंगा-भालि रक्की भगाह आगे लगाए गए तीसरी लिंगा-भगाह लिंग का लिंग लगाया गया। लिंग का लिंग लगाया गया। लिंग का लिंग लगाया गया।

4) "A person was deemed to be visually disabled if that person did not have high perception, both eyes taken together or had light perception but could not correctly count fingers of a hand from a distance of 5 meters in good day light..."

प्राप्त रखारेका *Trichobius control pilot project* (T.C.P.P.) ने भूमिगती विधुती का एक नियन्त्रित विलोम अंदराली वास्तविक पूर्ण उपग्रहण किया है।

Economically Blind = persons who with both eyes open cannot count

Distance at which 10% letters 77

"Some countries consider blindness as they define it as visual acuity less than 10% of normal at a distance of 6 meters."

4) "No practical and uniform definition of blindness has been worked out. Several study group definitions have been devised, such as inability to distinguish form or colour, to count upon the hand at a distance of twelve inches, to read writing or print in large characters or to recognize the human face. What is sometimes known as "Industrial blindness" is commonly defined as insufficient sight even with the aid of eye glasses for the execution of economic tasks."

"Section 6 A of the English Education Act 1921 defines the word blind as meaning to blind to be able to meaning to blind to be able to read the ordinary school books used by children."

"Another term: visually impaired are people whose visual ability is less than 60% of normal."

5) "Central visual acuity of 20/200 or less in the better eye with corrective glasses or central visual acuity of more than 20/200 if there is a field defect in which the peripheral field has contracted to such an extent that the angular diameter of visual field subtends no visual distance no greater than 20 degrees."

"Vision is speaking the blind are those defective of sight. As more popularly accepted the term includes all those whose vision is so defective that it cannot perform its normal function. As indicated among the educational institutions for the blind established through out the country.

to the individual person's welfare rights as defective as a result of their education in equal terms with normal children at the ordinary public schools.¹⁰⁰

दृष्टिकोण संसाधनों परिवर्तन बोला। विश्वास अवधारा की एक दृष्टिकोण परिवर्तन
के लिये उपर्युक्त विवरण दिया गया है।

In the United States it is generally defined as 20 centimetres visual acuity of 20/200 or less in the better eye with correcting lenses. It is not usually the same as the standard used in Britain and by other members of the Commonwealth and it has been recommended by some international groups.

१४) प्रधान अमेरिकी गवर्नर का विवरण दिया गया है। इसकी संख्या ११५८०। उत्तर प्रश्न के अनुसार यहाँ की आमता बोल्डेमारा निवासियों का होता है। यह कल्पनात जगह लोकों की जाति का नाम है।

(i) "Disability" refers to a condition where a person suffers from any of the following conditions, namely:

Total absence of light

(ii) Visual acuity not exceeding 6/60 or 20/200 in one limb in the better eye with correction lenses, or

iii) Limitation of the field of vision subtending an angle of 20 degrees or more.

iii) "Persons with low vision ~~are~~ are persons as certified by with impairment of visual function even after treatment of standard refractive correction but who ~~use~~ is potentially capable of using vision for the abiding or essential of work with appropriate auxiliary device."'

करीने भी यात्रियों के साथ ही जगता अब लेनदेन के लिए भी यह सब आवश्यक है।

2

५। यहाँ प्रति २३ लाख रुपये की विद्युतीकरण की जगह अब आवास विकास की दृष्टि से एक बड़ा विद्युतीकरण परियोजना की जा रही है। इसकी दूसरी घटनी विद्युतीकरण की जगह ऐसी एक बड़ी विद्युतीकरण परियोजना की जा रही है। तीसरी घटनी विद्युतीकरण की जगह ऐसी एक बड़ी विद्युतीकरण परियोजना की जा रही है।

१.७ असेक्युरिटी व्यापी :-

परं भावेन्द्रानुजे इगत्तारा कै, ॥ जगद् युक्ते लोकवस्तुप्य ॥ १५६ लोक ॥ ४३-४४
पाद ॥ असा आहा ॥ १४ गावात निरवेळा हायमात्रा अडव्यांनी भिरव वाराठ वा त्या लोकांपुढी
गावात सलजाळ वार वापा. असाडेहा असाणाना अकोराहा तिळाडा असावता.
नापातमित्याची द्वारीहा ॥ द्वारापामात्रा तिळाडा कृष्ण उपास ॥ वा कृष्ण वापना अप्या विकीर्त तिळाडा
तिळाडा विकीर्तव्यात्य असेहा अंगुष्ठामुळे कुटुंब विकीर्तीहा तोमे ॥ अप्या विकीर्तव्या फृद्यामात्याची
तिळाडा विकीर्त मारी गाव नाते त्यानुजे वयाचाची अमाती त्या अन्तर्विष्टपाप ताणणे उडुणे. अप्या
तिळाड्यां तिळाडाचे लोक वा तिळाड्याच्या द्वार तिळाडी तोकीमध्ये ताळात तोकीमध्ये प्रा चर्व तोकीमध्या
विश्वान विस्वादा अप्यमात्याची भावां प्रतिष्ठा एडी पानी तिळाड्या गोक्तोमेहा विळाडाचे खेळे गोदी

“**अनुपलिङ्ग वाराणी**, अंगराजे किंतु या दोन लक्षणाची आवश्यकता नाही.

करते थे। लगभग २००० से अधिक जितों हासाही लायी। वर्ष १०, अट्ट हैनारे दुखी कोवाचा
यांत्री यांत्री लगभग ३००० जितों हासाही लायी। इसमें बुद्धानी भांडी अवश्यकता विद्यालय व्यापार
सामाजिक शालें भी—पुला आणि तिळापिण डुस्टा। उपर्युक्त उपहारांमध्ये खाली आवश्यक उपका गा
म्यांचांची आवश्यकी नाही ॥ तिळिः ग्रामाचार्यः विद्यालयामध्ये व्यापारांमध्ये उपकारांमध्ये उपकारांमध्ये
पुला अंडा आणि घोटी घोटी तांडा ठेंडा बांडा लिंगेलाचा मांगलाचा तोळाची
सामग्री लायक नाही आणी इल्ला, तिळांची लुचसीला दृष्टिलाई उकापांचन व्यापारी तेला
प्राप्त्यां तांडिकांचा विकार करत्याचे होयता। गांडीजयं/स्वामीनारायण लाला या विश्वालं विश्वालं
व्यापार प्रैंट ब्राह्मणांकांची अच्छा ज्ञानाचा आठीचक फर पोटी आहे। एरु द्यावा ज्ञानाचा आपां
म्यांचांची वापरांना वापरेनना। इथमा, व्यापार कृ वर्दं बुल श्वासाचा, खर्च गोरीराचा। एकांका
प्राप्त्यां विकारी, अंतर्मुखी, व्यापारी व्यापारी, अण व्यापारी, व्यापारी व्यापारी, या कृंभवत व्यापा
व्यापारी आहे।

अल्पालेवरीले नवा जर्नल यशील अपाराव्या पुस्तकांतर विषयाचे उमरारेषट्र॒ दो, हेची विषयाका
प्राप्त्या संहार्युपारे, “दुष्याळ, विश्वास॑ एवं गुण॑ ३ कारणाते अपाराव्या प्राप्त विवरण्या लोकांगी, तज्ज्ञा
ज्ञानप्रविधा त्याक्षेत्रातीला २५ वा पाचांसुटी वर्ष॑, ““त्याघमन्याणे इथागाडीची मरणताम, “अपारेणित
दृष्ट्या, विश्वास॑ एवं गुण॑ अपारिवर आपारिवारातीला उपरात १० तिंब्या वर्षांनी योकाळाता
कै-कैविं ४-५ लोक याप्यास द्वारा, असेहु संस्कैत्यां त्यागमन्यांची सख्यांची तीडी गोपी, याव्यासंवा
द्याव्यापिष्ठाता ॥ तज्ज्ञा एवं गुण॑ ३

प्राचीन भाषा की विद्या

१३१ आज अपनी दिवाने भवति श्रीमद्भागवतः

वार्षिक लोगोंसंख्या	वार्षिक वृक्षसंख्या	वार्षिक वृक्षप्रति
30,24,00,232	26,74,24,264	1.29-14.92%
30.0%	29%	3%

¹⁰ See *India's Democracy, Report 14, Structure of Congress, Government of India, New Delhi, 1996*, p. 11.

१७३१. क्या जनागर संसार आगमी है?

लागतमी	विक्री
शर्त	क्रमांक
१०३१८००	५४२
२,३९,२७१	२७६
१,४८,५९५	४२३
१,४०,३०९	४७४
११,००,८००	३००५

Int'l J. Crim. Justice, Criminology & Law, Vol. 5, No. 3, 1994, p. 135

क) अमरीकी लोकतंत्रज्ञा - १९४७ वर्षात् नेताराजनगुरुतांगी १०००४०० ब्रिटिशप्रिंस १०५, ३५३, लोको केम्बल, अमरीकाके अपने लोके साथा आर्हे १४, ८६, ८८३ अमा डेस, अपारा १८८३ अमरीकी लोको गवर्नरम्ब आणि गोपन्याजी उत्तरामी अमरीका, अमेरिकार वैद्यावाच संदर्भातः उत्तरामी, अमेरिका द्वारा अमेरिकार इयावाच मटक संग्रह करता वैतात

३००६ अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ भवहारी नियन्त्रण

	संक्षिप्त	प्रामाणी	गहरी
लाली	१,३२,५४,५७,०९६	१०,८२,४९,२५६	१२,४९,९७,८८८
मुम्पे	११,८५,८२,३५७	१०,८६,३२,८५९	१४,३६,२०,८२८
गोवा	२४,४८,२८,४४	११,८६,०१,१००	१५,२८,११,८५०
कोलकाता	११,८६	१३,५७	१८,५७

www.EasyEngineering.net Page- 2 series-38 Maheshwari

¹ Census of 1860, Government of India, New Delhi 2001, p. 34.

આજ માટે ૧૬૨૫ રુપાય પણ વાસ્તવિક લોકશ્રમાં કે એ પણ નથી. અને જો આજાની રૂપાય કે આજાની રૂપાય હોય તો એ કુદાની રૂપાય હોય. કે કુદાની રૂપાય કે કુદાની રૂપાય હોય.

२०५ ई संवा ज्ञानालयातील शारदावील ऊर्ध्वगांधी संस्कार

प्रकार वर्ग	सिंग	लेखा	प्रतीक्षा	संख्या
प्रमुख वर्षा	भारती	२,११,५८,७४७	४,८३,६०,३१८	१५,७०,६४८
	दूसरी	१,२८,३८,५४९	१४,७०,३६४	१५,५८,७५८
	संकेत	१,११,९१,४४४	१३,३०,५३४	१२,२४,८३४
वर्षा	भारती	१,२५,२४,८८१	१०,२४,३,३०१	२४,४७,२४८
	दूसरी	१,१८,२२,९३८	१२,७२,१५८	१५,३८,२४८
	संकेत	१,११,९२,४४४	१३,३०,५३४	१२,२४,८३४
प्रसू	भारती	१८,४०,८५०	१२,८३,६५१	३,४०,८५०
	दूसरी	१,२८,३८,५४९	१४,७०,३६४	१५,५८,७५८
	संकेत	१,११,९१,४४४	१३,३०,५३४	१२,२४,८३४
सूखी	भारती	१३,६१,८२२	१०,२४,२१८	२०५,७०१
	दूसरी	१,१८,२२,९३८	१२,७२,१५८	१५,३८,२४८
	संकेत	१,११,९२,४४४	१३,३०,५३४	१२,२४,८३४
उचितवाहन	भारती	१,१२,५८,७४७	११,७१,६१८	१८,४४,८५०
	दूसरी	१,१८,३८,५४९	१४,७०,३६४	१५,५८,७५८
	संकेत	१,११,९१,४४४	१३,३०,५३४	१२,२४,८३४
प्राकृतिक	भारती	२२,५२,०२१	१४,८०,१००	३,४०,८५०
	दूसरी	१२,१८,०६५	१४,८१,१०३	१५,४०,८५०
	संकेत	१,११,९१,४४४	१३,३०,५३४	१२,२४,८३४

Digitized by srujanika@gmail.com

ਜਾਂ ਕਲੋਇ ਤਾਂਡੀਲੀ ੮੮.੫% ਨੂੰ ਕੋਈ ਅਸਥਾਨੂੰ ਜਾਣ ਆਵੇਂ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸੀ ਪਾਰਿਵਾਰਿਕ ਤੌਰ 'ਤੇ ਯੂਨੀਟੀਵੀ ਅੰਤਰੀਮ ੧.੬% ਦੀ ਪਾਸ ਆਵੇਂ। ਏਹ ਸਾਰੀ ਸੁਕਾਰੀ ੫੪.੨% ਜ਼ਿੰਮੇ ਵਾਲੀਆਂ ਵਿੱਚੋਂ ਪਾਪੀਂ ਖਾਲੀ ਪ੍ਰਾਂਤਾਂ ਦੇ ਪ੍ਰਮਾਣ ਵਾਲੀਆਂ ੧੮.੮% ਦੀ ਅਤੇ ਅਨੇਕ ਆਕਸ਼ਰਤਾਵਾਂ ੨.੮% ਅਤੇ ਅਨੇਕ ਆਕਸ਼ਰਤਾਵਾਂ ੧.੮% ਦੀ ਹਨ।

अमरनेत्रामध्ये विषयाचीची शुद्धिकालातील व्याप्ती कमी असी. प्रयोगीत आव यस्तु तरी
न दृष्टी. आधिकारांना गाड्या गिरा. विषयकीला शासनातील प्रकारीकरणावर उड प्रकारवर तो वा अपारप्रत्येक
कलाती सहजी गी. असार्थ पुढील्यो व्रज्ञा नाहीला नवरक्षणाद्यावस्थेले नाहीलो. असारप्रत्येक
विषयात जाणासी दुर्भाग्यात रुक्खावरील अग्रकात, संवादाची निकायातील मुद्द्यांचीमध्ये घटन, विषयी
प्रभावी, नियोगातील एवं एकांकिका कलातील व्याप्तीची व्याप्ती. नियोगात यांचा उभयक्षया
विषयातील व्याप्तीची व्याप्ती. नासारातील व्याप्ती. उभयात नासारातील व्याप्तीची व्याप्ती. उभयातील
दृष्टी.

संकेतपत्र

- १) हायलोग, इलिजास महाने काळ ?; अ. राणे अस.पुणी, १९६८, ५, ३
- २) लिंगावृत्ति {१}
- ३) लिंगावृत्ति {२}
- ४) लिंगावृत्ति {३}
- ५) लिंगावृत्ति {४}, डॉ. आरेकर आणि भावानुवाची इलिजास लिंगावृत्ति पुणी, २००४, ७, ५
- ६) लिंगावृत्ति
- ७) समा. लिंग (संघ.), भारतीय सभासंविधान संघ, ग्रन्थालय पुणी, नेशनल २४५
- ८) असामाजिकी लिंग (संघ.), समाजी विश्वकोश, लेन्डर, नुस्खा, १८९१, १३३४
- ९) उषा नाहिनी, असामाजिक विषय, पुणी, १९६८, ११४
- १०) लिंग, गुरु १०
- ११) S.V. Sobhom, A New Approach Dictionary of Living English, Pune, 2006, p. 167, 180, 193
- १२) लिंगावृत्ति, असामिक, १२४
- १३) Gurdip Singh Mehta, India's Social Problems, Vol.2, New Delhi, 1994, p. 128.
- १४) विशेष लिंगावृत्ति गरज्ञा असामाजिक असी ग्रालकर्त्तारी शोषणवरोग, निराकृत लिंगावृत्ति गरज्ञा असामिक लिंगावृत्ति लिंगावृत्ति, पुणी, असामाजिक विषय, १९६८
- १५) लिंग
- १६) उषा नाहिनी, असामिक, गुरु १४
- १७) हंडे विस्तारी, बंगु लिंगावृत्ति लिंगावृत्ति, निराकृत लिंगावृत्ति, पुणी, १९७६, ११५३१२
- १८) उषा नाहिनी, असामिक, १२४
- १९) असामाजिक असामिक लिंगावृत्ति लिंगावृत्ति, २००४, ११५
- २०) उषा नाहिनी (संघ.), असामिक, १२४
- २१) Persons with Disabilities (Equal opportunities, protection of rights and full participation), Act, 1995, Delhi, 2004, p. १

२१। भारतीय जनगणना २००१। अमृतपद्म अध्यापकरिता रुपगा पुस्तिका, गांधीजी पर्यावार एवं जनगणना विषयों का विवरण, निष्ठा जनगणना संस्था, बड़ी दिल्ली, २०००, पृ. ६५

३५। जिता:

२२। *Prisoners with Disabilities Act, 1995*, op.cit. p. 2.

२३। भारतीय जनगणना २००१, अमृतपद्म अध्यापकरिता रुपगा पुस्तिका, गुरुग्राम, पृ. ८८

२४। विशेष जीवनान्वयन विभाग असलनामा (भारत भाषावाचारी) भीषणरुपी, पुस्तिका, गुरुग्राम, पृ. ५

२५। अमृतपद्म जीवनान्वयन विभाग, पुस्तिका, पृ. २५०

२६। भारतीय जनगणना २००१। कठुमसिक अध्यापकरिता रुपगा पुस्तिका, पृ. ८८

२७। *Prisoners with Disabilities Act, 1995*, op.cit. p. 3.

३६। जिता:

२८। उल्ल., p. 4.

२९। विशेष जीवनान्वयन विभाग असलनामा विशेष जीवनान्वयन भीषणरुपी, पुस्तिका, पृ. ५

३०। जिता:

३१। डॉ. गोपीनाथ गुप्ता, उपचारी, असलनामा विशेष जीवनान्वयन विभाग, विशेष जीवनान्वयन विभाग, गुरुग्राम, पृ. ३५

३२। जिता, पृ. 4.

३३। डॉ. गुरुप्रसाद गुप्ता, उपचारी, असलनामा विशेष जीवनान्वयन विभाग, विशेष जीवनान्वयन विभाग, गुरुग्राम, पृ. ३५

३४। जिता, पृ. 4.

३५। डॉ. गुरुप्रसाद गुप्ता, उपचारी, असलनामा विशेष जीवनान्वयन विभाग, विशेष जीवनान्वयन विभाग, गुरुग्राम, पृ. ३५

३६। जिता:

३७। अमृतपद्म, अध्यक्षान्वयन विभाग, लक्ष्मी शास्त्री शास्त्री (एमी अपालन-लक्ष्मी शास्त्री अध्यक्षान्वयन), एमी शास्त्री (गोपीनाथ), पुस्तिका, असलनामा विभाग, विशेष जीवनान्वयन विभाग, गुरुग्राम, पृ. ३५

३८। असलनामा विभाग (संघ), पुस्तिका, पृ. २५५

३९। *Report on Blindness in India*, Government of India, 1964, p. 11.

४०। TIN: Indian and Other (Ed.), *Encyclopedia of Social Work in India*, Vol. 3, New Delhi, 1987, p. 325

- ४२] भाद्रा, पृ. 385
- ४३] S. N. Dube (Ed.) *Encyclopedia of Social work in India*, Vol. I, New Delhi, 1968, p. 55.
- ४४] Edwin R.A. Seligman (Ed.), *Encyclopedia of Social Science*, Vols. I & II, New York, 1924, p. 587.
- ४५] William Benton (Ed.), *Encyclopedia Britannica*, Vol. 3, Chicago, 1955, p. 779.
- ४६] Frederick George Beach (Ed.), *The Encyclopedia Americana*, Vol. 4, New York, 1963, p. 81.
- ४७] Walter Miller (Ed.), *The Standard American Encyclopedia*, Vol. 1, Chicago, p. 337.
- ४८] David L. Sills (Ed.), *International Encyclopedia of the Social Sciences*, Vol. 2, U.S.A., 1968, p. 27.
- ४९] Private-Written Bill (S. No. 1), 1995, pp. 67, p. 3.
- ५०] इनसीलर, वर्ष समाजिकी, अनु समाजी द्वय, पुस्तकालय, मुमुक्षु
- ५१] राजीव राजीव, पुस्तक, पु. ३ वर्ष समाज
- ५२] लक्ष्मणरामी लोही (पाता), पुस्तक, पु. ३ वर्ष समाज
- ५३] डा. दीपिका, पुस्तक, पु. ३ वर्ष समाज
- ५४] विश्वविद्यालय (गोपी), गोपी, p. 264.
- ५५] University of Jodhpur 2001, New Delhi, 2005, p. 61.

प्राकृति दुर्लभ

अध्यात्मा महाविद्याराजा इतिहास

८.९ अधिकारी सम्बन्धे प्रवालिता गोपनीयः

पित नामाचार्य अस्त्राद्वय विष्णु आत्मा पृथिवी एव भूमध्ये जगत्पाता
नम तारण चो ला, रघुकृष्णालि इन-करमना, प्रभवद्वा, कही वरया न तुरामाहो तो
केवलकाल्पना कृष्णा [Mythology] वाचाभर्य सामडने, “आदेश काली अवस्था न (समये असे
उपासना विष्व ज्ञानावाव आपाकार उपासना) अस्त्वाने वज्रा मौर्विष्य पराक्रम अवस्था कर्ता
नाम भूमध्ये ईन भूमि आस्त्राद्वयाद्वय विष्णु वाचाने तदे उत्तरीवर वैष्णव देवता वैष्णव
जन, देवता मुख्या वाचा वृद्धोत्तीर्ण वाचुः देवते वैष्णवोत्तीर्ण देवता वाचावानुम विष्णवानोत्तीर्ण
कृष्ण विष्णव “तत्त्वे देवता अन्तो विष्णव कम्बुन त्वामामादे इतु—नक्तीना वृष्ण वृष्णव
जाहे तजे लग्नात ही त्वं त्वामाने तुह मात्रां वाहु तुह अस लोक असामानु त्वाम
विष्णवानामु अन्ता उहात, वाहु विष्णव त्वामाने त्वामानां विष्णवाने इतर असांही तो तामिल
अशी शेळा सामाजिका ग्रनात बसलानी होती, वाहु त्वामाने त्वामानी विष्णवान, तुम्हाने त्वामानानी
त्वामाने विष्णु “मुर्वीन काळो मिष्ट उषाव इष्ट व्याप उजला यष्टव्यास आज आर्द्धक त्वाम
त्वामाने त्वामानी त्वामाने त्वामाने त्वामाने त्वामानी त्वाम असे त्वाम विष्णवाने त्वाम
त्वाम *** त्वामाने असामु त्वामाने त्वामाने त्वामाने त्वामानी त्वाम असे त्वाम विष्णवाने त्वाम
त्वाम विष्णवाने त्वामु त्वामाने त्वामाने त्वामानी त्वाम असे त्वाम विष्णवाने त्वाम

प्रतिक्रिया के समावेशील व्यापक व्यवस्था का नाम है। इसमें 'प्रतिक्रिया' व्यवस्था की व्यापकता, व्यवस्थाएँ तथा विभिन्न व्यवस्थाएँ व्यापक रूप से सम्बन्धित होती हैं। इसमें व्यवस्था की व्यापकता व्यवस्था की व्यापकता की व्यापकता है।

“हिंगने वर्तमानमा प्रसादके गतात्मीच्या समोगे कृष्णलाई बुझलायामार्थी ही विशेष
पात्रा विसर्ज्या विभवके समे आजी नाही असे आहे.”—हनुमतीची यापनमार्थी विसर्ज्या विशेष
किंवा तिथे यापनाची विसर्जनक्रिया, समाधाराची विसर्जनक्रिया ही मनकालामानद्य विषयी “विशेष-विभा
विभवामध्ये विसर्जनी घेणी याची कामेची विषयी”

Digitized by srujanika@gmail.com

卷之三

www.industryinfo.com

2020 RELEASE UNDER E.O. 14176

ताता जी, बगलम्या लॉटीर और तोले तो नम ग़ज़ाना काढ़ा रामलाल विस्तकार नै देता छाड़ा।
साथे प्राकृतिक रामपदीर उसको असा भावी अप्रकृति हड्डी धारा एस्टर विदीया
किंवा आद्युत असल तरी एका शारीर दूषित हो जाऊ निष्ठान्मुख शहिरा भरा।

‘त्रिलोकानुभवात् अप्याकृद् वाचमनाम् गार्भिता वृत्तिमया तुष्टिमयात् शहिता आहे ग्राहे’ असणी एक व्याख्यात ग्रन्थाला द्वितीय अध्यायात उपर्युक्त वाचमनाम् आवला ‘My myself myself & myself’ आ वृत्तिमया प्रकल्प आहे. एक दिवशी तो मध्यग्राम वालन उद्यापन तुष्टिमया आहे तो वृत्ति असल्याने एक वाचमनाम् आहे ॥ देवास ग्राहीना हस्त लाग्दी की त्याच्या वाळातले घास नुक्त उडू शकता ॥ ५८४३॥ याचिके वाईने वरदेवा घराती ज्येष्ठा-तुष्टिमया कठोराती वृत्तिमया तितो ज्येष्ठायामध्ये असुंकेलण्यात वीचगायत्री वृत्तिमया असरतें परंतु असामयावे, असामयावे जीवन सुखारात्री वृत्तिमया आहे तर युग्म कराविले. तो शिराप ज्येष्ठिमयाती वृत्तिमयात आवले वृत्तिमयी मुक्ता साब नवीनी वित्ती.

आलासाल आपावी गोरान्वित हो गोपने गांगे भवती रहुने भी तो रात

ଲେଖକ ପାଠ୍ୟବିଷୟ ବିଷୟ ।

४५ विजय अमरनाथ

Digitized by srujanika@gmail.com

শৈক্ষণিক বাচন || পঞ্জিকাৰণ || ২০

गांधीजी द्वारा लिखे गए निष्पत्र

Digitized by srujanika@gmail.com

卷之三

कल्पना करने वालों की समीक्षा

पारदृग शुद्ध नमस्ता क्षेत्रप्रसरणी अर्थात् ज्ञानप्रवर्तना विमुक्ता या सुधारणाकालाच्छी कल्पनात्मक दृष्टि विभूता। समाजविधारकावृत्त उपर्युक्त अपार्था अवधीन अस्तावज्जी एही भावा

आजमार, ती परिस्थिती बदलकरी नियां लिको आज टाक्का आग असा कसागा
चुनी दाख लेण्यांने आवधि दामडी इत्यत्त्वां ती दुगांचा माणुस चाहून घासावे नाही असीकार त्यामा
मिळू नाही एही दूधांचे जाती की प्राणाचा ५ सम्प्रतीक विषायाचा (प्राणाच्याचे विषाया)
आणखी दालाचा दुहिता चुपावाने चुक्का आहे ता बहुतारील वेळा तोयाचमा लिकावा
लिकावा, तीही असलो वर्गाचा तोत्त्वाचील असले, तपकटी तत्त्वाची तेली आणि प्रम-
सठवाची उत्तमवर्ण भुजाचा तारुण्याली आहे. ती विष वाती त्याचमा ती यो व्याधाचा लिकिलो

२२ असाधारण विषय

डिरीचा प्रणाली-क्लूजी। सम्याचिन् तुली-गोपाळ पक्ष धूमार्थी देहना निपाट
होता ॥ सम्याचिन् परिक्लूजीत सङ् परिमाल्या-प्राणाके तो व्याप्ति, अस तयारीत त्रुत्यम्
प्रवृद्धा देहाती व्याप्त्यात् ए भीज प्राणास्यासाठी घटलान्ना उमाच्या प्रदानात्तेडी लेपते ग्यारुलाना
उभाजा आपेही रुच अनाऱ्या तात्पुरी नियाती केली असफलासाध वारी तात्पुरावी हा
तेक प्रस्तुतगती तसेही

१३५ परिलक्षण अंत विकासात्मक विषयाः ॥

अपाराह्न तिष्ठद्युत्तमाः प्रसा साव तेऽया सङ्क्षापर खोल्या प्रसर्वत्ता हारा
हारा शिराय अशब्द आहे. एसा शिराशिरापूर्णी केळ आणि वेला गुंज उत्तमांग घटाई मठाव
मुळी जसे भारत कामते तोला. असा निरापांक अवधारणा वृक्षांगांने वृषभ वृषभान
विलाप्याची जांची उपर्युक्त लेला लिली. या लेपकी जात साधनांच्या लेला लेला. नामां उपर्युक्त
लेला शिराला बाली, तिळा-त्यात्रा आणि लेला लेला जो गुडा तेलाची जांध जांध
त्यातो निरापांक आहे. या गिरारावर निरवास दैवताचा तो अगाला गोहल आप्पूरी होता. तांना
विकरालाचा वृषभ लेला लेला आहे. निरापांक विकराला विकराला विकराला विकराला
हाते दूसांना दूसांना अंग फाटा फोरम्प्रांग देले आहे. निरापांक वृषभ आप्पा होता. या वृषभान
तो नामा असावी आहे. असावी तेंवाची गोड अप्पा गोड. असावी आप्पा वृषभ
विकराला वृषभ त्याला निरापांक या लेला गोड वृषभानी क्रृष्ण हैरेन्द्रानं तो निरापांक

को भूमि का लिया गया तो करारा करका ही उत्तराधिकारी अपनी जगह पर ले लिया। आमल भी छेत्र के लिए विभिन्न संस्कृत विद्या का अध्ययन करने वाली शिक्षा संस्था है।

१११४१ वा स्टेटसाहितीने पांडु की लोक राजाओं के पक्ष दरवाजाले खिले उत्तमाना।
इसका अद्यतना नजरमा आए दृश्य प्रदूषे। भोगिन् एवं बोकी लहरव्यामाह लम्बावी दूष एवं
आम दूष एवं प्रदूष हेतुपार्वती जगते रहे ताकि वहाँभाइकर शाहीधरण अप्राप्य गाहित नहीं
होता। दूषावी लगावी लगाव शाहीधरण अप्राप्य दूष मुहूर्त अन्नीदलपाती अपी दूष
बोगिन् बोगारारो लाव कान असरहाया दूषावी शाहीधरण विनिमित्त योग्यता दूष
दूष राजावार बोग्यहाया असरहारे नवाच्यामाह विवाहां त गाहरी करुरी रामे दूषला गाली
हीरी व द्वयावा रामी विवाह दूषपाता अन्नीलती दूष (Nootion) विवाह आहे तावे। लंग
बोगिन् बोगारिवाच्या दूषमे दूषत होते है। दूष शाही ज्ञानी विवाह दूषल लाक नास्थाकरण
हुमरे होते। अग्नि द्वारापे असाक उपहास रामान बीजी लम्बावी भगवाजन भिन्न जात दूष है। दूष
पाठुन ज्ञानी दूषहाराचा रामावी गोकर्ण अग्नामाही दूषमे विवाहावी दूषमापुरी विवाह अस्त। विवाह
लगीत ज्ञानी व ज्ञानामुख अग्नामा नेत्रा विवाह ज्ञानामा अस्त। ज्ञानी व ज्ञानम विवाहात ज्ञानी
कला विवाह दूषली, तो विवाह दूषला दूषला। अस्त।

२। उक्ता कामियाला अतामा उत्तिवल्लुः। उपि एवं द्वया ब्रह्मकामा गोप्यमानोऽप्युपि
नेत्र शब्दे इत्याद्यापार्थिवां वाचेऽपि विषयीं तत्त्वे चार्ण विद्युते पृष्ठे वाक्यानां भावान् तदा
शब्दान् वाचो वाचो वाचात् विद्युते विषयान् तत्त्वे। “चार्ण वाक्यं विजयात्मा वाचात् विद्युते
द्वितीयां च तिं त्रुट्टी वाचो वाचो वाचात् विद्युते विषयान् तत्त्वे?!” वा वाक्यानाम् वाचां तदैव वाचाप्यात्मक-
तत्त्वे। या वाक्यानाम् वाचां तदैव वाचाप्यात्मक-तत्त्वे सुन्ततो वा वाचाप्यात्मक-तत्त्वे वा वाचाप्या-
त्मक-तत्त्वे वाचाम् वाचाप्यात्मक-तत्त्वे। वाचाप्यात्मक-तत्त्वे वाचाप्यात्मक-तत्त्वे वाचाप्यात्मक-तत्त्वे।

३३ लाख ४० हजार वर्षों से अपनी जीवन की यात्रा करते रहे। उनकी जीवन की यात्रा करते रहे। उनकी जीवन की यात्रा करते रहे।

सो बालिका ने देखा दैल्यारीन ॥ वह कुत्ताच्छा राणी दरखातल गिरानी गालवारे तिसरांग ठिके गाले
दैल्यारीन बालि चालिए गाली गंड आली तिरी हांगोत राहील गालाच्छा दीरहीवे जब द
गालाच्छा डगा बैलाली तीवी जालसप्ताला ॥ योही उत्तम्या प्रभावी गुरुत्वा ॥ ३१ ॥ यी अच आ
जी ताढठ राहते तिसरांग जाकला गारिल्याहा आहा प्रथ घट्टीकू भाव ठोक ची ॥ वी आसी
पीक गवाराच्च अगालाल खंभेसामान्य गागचारुत्ती ग्रिगल्ला छरीचे फौहर चपत दीही ॥ गारिगाळ
आणल गिराग गायकाच्या मर्टीवरसावध जावालिय तुवाळाती तेलेली रुक्क झारे तकारी ॥
गापनाती पृष्ठ तक्के इती ॥ कागळाती विनानी औपूर्व निशाच आलेल्या उच्चकाळात्या सहाय्याते ती
झाक्त लिहुन आविष्यावाल एक ओर अलांग दौड याच्याची एव घववार करते आली ॥ ३२ ॥

मार्गिया ग्राम्यों श्रमिकों द्वारा सेट जर्नल अवैद्यता द्वारा बीजस्तुत्या जब शिकारी गुडगा
प्राप्तिका लियनु' आणा शिकायतप्रकाश रवाणी सुख्ख्यात करी. सामव्याची डॉटर नवांग मा पाणीत राठो
गळा वर्षारोग केल्यांनी गिडण द्वारे आले. अता ग्रामीण जगाच्या इतिहासातील पहिली आणि ताढी सुख
आणो असासाठी आनंदापैकी माझ्यामध्ये कोणते निघुणे? २१. एकांकिकामंत्रांमध्ये युद्ध घेण होता.
१०८. ताढी कास्या भेटुन्यांच्या विताते एक परापृष्ठावे न्या वितातीने 'ओ'. असं उल्लेख्या अंदीने
वितावा घासा आले. ते असार वितावे एकूण दोन्हींनी रथाविते याचाचा घेऊन, त्या असलेला अलांका
-प्रीत' हो. तो गविनीचा वाच फलाचा बाबू लालते. त्या वितो जगाचा शिक्षणात
वितावाच त्या विती पुरालक नाही लागती. त्याचा फलाचाचा निर्वितीचाची व्यापक विता एक
वितावाची तुम्ही वितो इतावा वित्त वित्ताच्या वित्तावित्तावर विता रुपी कांगलाच्या वित्तावित्तावी
वित्तावाची त्याव्यावर आजी. वित्तावित्ताव फ्रांसीसी नेशनल बौल वित्तावी

२८८ भारतीय अमेरिकनी माल

प्राचीनता विश्वसामान्यी रहवाना आप विजयाचा पुराण मानवात्प्रदेशात (कृष्णभैरव
१०० वर्षे तांबिरा झाला). याचे कानवा आपांचे उगांडाचा अंजाड्या लुळतांत्रामात्र व्यापिकार
मानवासोरणा असेही एम्पलेप्टोप्टा, बालिघारस्था, लुळ दुखावाडी, उल्फल तित्वावाचा
उपाय हे गोमित्र वाढवे (११८)। तेलाव्यामा अंजाड्या की वरित्यासी इक्कड्या पलटु याची
मीडोरिन विकास अंजाडी यामाती जांवावाचवाचा उदाह उ काळामी कुरुक्षेत्रावाची गोमित्र अंज
गांडी तमालपुरामात्रा व्यक्तवाच्याके वाढवाची अंजाडी आरित्यावाचा। यामुळे अधिकां
किरणामात्राती रुचावलवी ठीक अस्पाव्याच्या वेसा नाही तर्म उपायाके विश्वसन व्यापिकारी
अस्पाव्या दूरवाच्यकांची सला (१०७)मुख्यात केवी. असुमा 'मिस अंजी शार्प (Miss Amy Sharp)'
ता विश्वसन विषयाची वर्णन इतर (११९) नाही तेलुभाषातील अमृतात्मा एवढे ताल्लुचाल व्यापिकारी
व्यापाराचे सुरु विली! (१२३ ताली) ताळा तारावृत्त तेलुभाषातील अरप्पनकर्ता याली
दाच्यापितोप्टेकांची दुग्धामात्रा भूळून नी ताळीचे तापे उपायक अस्पाव्याके अरप्पनकर्ता करावाच्या
आरे. मात्राही या खाली (१२७) फॅलेन विकास-प्राचीनावाचा दिलावाची

“१८ विष्णुसंवय गुलामनगवद् यात्राकाला यथा तु अभी विस्तारित-॥
मिशनरी स्वेच्छा दुर्लभी थाका सुल केली ॥। गारक्टसील क्वचिं पापी शाल बहाएँ जोड़तेना देखे
१८५५ याम अहमादबाद येते डॉ मील्कानाही टोपाडु छापाई या तुम निश्चारी व्यापिंग एक
प्राप्ति करते ॥१८५७ यादृ ताल मिहारी शक्ति यांनी कामाक्षा घेते तेहाती हाता तु तेही
१८५८ यातो बिल्डर यांची घस्तावी ना निशनरी तेहातो तु तेही तेही आ गुलामनगवद्
दुर्लभे अविकृष्ट अकटी निशनरी यांचा चुट विष्णु ॥१८५९ यादृ घाले ॥१८६० यादृ घाले

માર્ગદરોહિની પદ્ધતિ વિશ્વામિત્રાંસની બાબતી | કલાકારી તલ્લાણે હેઠળ ગ્રામાદિત લિખી ન
થિયેલા સરસાયાનાનું અનુભૂતિ પ્રયત્ની | એવી સાચાદિવિદી નાચોળણું જરૂરલી બાબતી ગ્રામાં જીવન
કોન્સ્ટન્યુન્ઝનું હોય કાર્યિક એવાજાન્યાંની રૂપરાં આતે હોય | માત્રાં અનુભૂતિ ગ્રામાં આ
નિષ્ઠાનાં “નાના પારંપરા કુલાં જીવી ન્યાણની વિડેની ઘરે જીવન મનુષી દુર્ઘાત્માન પ્રસ્તાવને કુલ
જીવનને, આંદોળને જીવિતના જી રીતે નથી | કે એવી એવી જીવન જીવન હોતો કે જીવન
જીવન ન હિસ્તરીની જીવનની કેસ હતે

સ્વાસ્થ્યબાધીનાં નાલાંની એવીમાં જીવનની પ્રણાલી લાં દેખાના ચુલ્લાની કેસે
કુલ ૧૯૫૦ નાથી વૈકાયાનાંની જીવા | ૧૦ જાની, કુલ ૧૫૦૦ નિયારી જોક જીવન ન
અનુભૂતિ હોય જીવને | અન્યાંની કુલ-કુલીની જીવાની રૂપી રૂપી ૧૯૫૦ અંશી ડિઝાઇન કુલ
જીવનની સુધુ કેસે | તેથી નાલાંની જીવાન્યાનાંની મિઠી સીધી સુધુના મિશ્રણ જીવનનાં અનુભૂતિ
જીવન ગોર્ગાં જીવનની પ્રણાલી પુરસ્ક (Large Print Books), ચાંપ (Low Vision Aids) |
જીવનની જીવનનાં દેખે એવી જીવન જીવનની સુધુ કરવાની આત્મ જીવન દેખાયાનીની સર્વ પ્રાણ
જીવનનાં ડેલ ટિપ્પોસા આપીની કુલી પરંતુ | એવી જીવનની કુલ પ્રાણની પુરસ્કારી જીવન જીવની
જીવન જીવની પુરસ્કારી જીવનની જીવન | કુલ ૧૫૦૦ રૂપાં જીવન જીવન કુલ દીખી હતી ૧૯૫૫ |
માત્રાં જીવનની પુરસ્કારી જીવનની જીવન |

૩) કાર્યક્રમાંધી પૂર્ણ (Institutional Finance)

૪) કાર્યક્રમ અનુભૂતિ કેન્દ્ર (Training Centres)

૫) કાર્યક્રમ કાર્યક્રમ (Workshops)

૬) કાર્યક્રમ કુલ

૭) કાર્યક્રમ કાર્યક્રમ

૮) કાર્યક્રમ કાર્યક્રમ કેન્દ્ર

૯) કાર્યક્રમ કુલી કુલીની જીવન

જીવન કુલ ૧૦૦ રૂપાં અનુભૂતિ કોન્ટો | એવી ૧૫ કાર્યક્રમ કુલીની જીવન |

જીવન કુલ ૧૦૦ રૂપાં અનુભૂતિ કુલ ૧૫ કાર્યક્રમ કુલીની જીવન | “જીવન”

२.३ रसायनिके कार्य

लाली अंगूष्ठी जागल्या, बिलिमोड्या तोकल आल्या फेळावी के परिकल्पनी द्युप्र
सामान्यावा दिलाव खदखुल ठोकव असलावी, ताच द्यवी उपासाळ मिळवयन सजल लालावावी तिळा
कांड असावा, धोनाव आपण उत्तरावे शुभावक, देहवा डिलोलावी अळखावी यां घारावी सर्व याज्ञाव

तिर्पत्र चालाकाता आहेत उरंते प्रसरात, नायांचे लोक त्यांमधील व्युत्पत्ता तरंगे तीव्रपणे करतात /तिर्पत्र
मध्यांदृष्ट अन्तर्दिक्षे या वित्तावाहार व्यवस्था त्या प्रमाणी भेद व्यवसंगच्च शास्त्र ग्रंथांनी द्विरोहात तिर्पत्रे इ
गिराव आवलंबीत वर्तवाणि जाहेत

अंत तीर्पणात्मक अवलोकन। प्रारम्भिक विकास अवधि: यांची अवधीनिष्ठा प्रदर्शनात्मक आहे तर सदपात्र स्वावृत्तेवै सुक्षमा न चरकार इत्युभिंगांची गवतात्मकी द्वारा तर सदपात्र दुष्टी दैर्घ्याची काढी मुळात वाची घटाविधि आहे. अंत यावेतीनी अवधीनिष्ठी फैलवै तथा, डॉलसाची अवधीनिष्ठी विलक्षण काढी. असांची नवायात्राची क्रमांक आहे, खिंतज्ञांचा लक्षिताने जिथे कोलेजाची फौटी याच्यांनी अंत यावेतीनी फैलवै तरी, तुशा अवधीनिष्ठी लक्षितानीवै आहे तज्ज्ञांचा प्रवर्णनात बदलारम्भात्ताल तेल विवीक्षा निर्गती नवे तेल, वारकर लागाऱ्या अन्याय तेलांमधे.

333

अवृत्तिकी अधिनायकादारी में प्रामुख्याने द्वारा लिपिशासन अवृत्त अपि विकासादी कहायी गयी। इसमें उच्चार कार्यकर्त्ता भी लिखे जाते हैं एवं एकमेद वर्षी लिखी गयी थी, जिसका सब भाषा विहित्वा चाहाय, या होमीना सिरीज़ जैसे इस गाय वृक्ष व वनेवामे १/०५ गोजी विभिन्नासुन् वर्ण किंवि अंतराम लगालेना दुष्टीये पापात् इत्यथ ल्याए एकील विभागो है योग्याये व्याप्ति व शुद्ध यागा बात करते करते, इस १५१ वर्षों लुट्ठ ईल ३ वर्षों गोजी वाप्त्या विभिन्नाव्या दुकानाग विक्षण अवृत्ताना घमाहे जापायागी और लगाद्य डोप्पाना गिले। विभिन्नाव्या विभिन्नाव्या या यह वाप्ति आदा लड्ड ब्रह्म अथ करता भ्रमता, याप्त्या विभिन्नाव्या तभी लौलाहो गोट गिरले, जाता दीर्घितु वाप्तिकी जहु विभिन्नाव्या जहु, याप्त्या विभिन्नाव्या आकृ गिलो, तर काहोंगी विभिन्नाव्या विभिन्नाव्या अदा न्युरुत्वी भूषण गिले। लड्ड विभिन्नाव्या भाव एवं दैर्घ्य अवृत्तावामि बो, कर्मी तभी तो विभिन्न विभिन्न ताप्त्या विभिन्नाव्या गिली ओही।

मुहूर्मा नारीं असाला, उड्डे पाया, अदेवक मोली दि खिसी अभाव गावा
रहाच्या लोयानी भेट कणास आहे, तिथं कुडी बेकडी तांती असेही झारी त्याची एवजा
कापुलांनी निश्चय घेऊन, आहासा नुसार अवलोग, तुलाच्या अपाविळा फूल दोकडण.

संविधानसभा भाग्यपक्षवर्ष आमतौर प्रदर्शनी, जोको उच्चायासे कहा जाता दिल्ली, वहीं बल्लासे कहा आखतणे हैं। यहीं शिक्षाविद्या अधिकारी प्रबन्धीयोंका सम्मानानुसार दुई हेट लाभान्व एक्स्प्रेस लाइला विं डिव्हिशन बैकरी विं रेल्यू एक्स्प्रेस लाइले दुग्गाना इसी शिक्षिक व्यापक प्रबन्धाला प्रबन्धी द्वारा द्वारा ऐसी डिटेल्सको जूनी घानी फैसलाओं द्वारा कैफल्या वह आकर्षी सार्वजी मिलायी। इस दायरीमी नवाँ लीडर्सीप वह यहाँ लखनाची मट्ट घरमा १५ लक्षपति। एवं ए रीपोर्ट अन्त अनिक्षुद्ध नाही व खोली तिक्केत या शाळेत प्राप्तिमा। अधून पुढी अद्वितीय विद्यमान व्यवस्था नुसन्दहार गिरी लुई ब्रिज्जा आपाचेल इव्वें ती जहां प्राप्त एवं द्वायां द्वायां व्यवस्था अस्ति नाही तिक्का आखती। अखेट अवश्यक, तिक्केत चाहूना वह अस्तिमा। द्विया व्यापकी ही वाह लोही बठ्ठा न्हुद्दला यांची वीची डेकर व मात्री लोकांतर पर लाभान्व द्विया विश्वासी लिला अस्ति प्रत्याक्ष विलेस्या सामाचर अन्तीमीमुळे युद्ध न्हुलालागा व्यापकी घटने वृद्धि के उद्देश्यातील वाही

गोपन डिस्ट्रिक्ट एवं आईडे लिङ्गम नामक विद्यालयांमध्ये शाळा वर्ष
नामांनुसारीचे कूपी याची तोत पुस्तके दिला नामा नामांनुसारी विकासकाली होती. तो पाठदासा
विहारापास— भारताचे गोते ठोकावे तपारे कले तोती. विहार पाठ वागव वावला नामांनुसारी असर
विणावारी नेटोवे के इतिहासात आरोगी उभाबाई मिनांगी सात अस विद्यार्थी ओट विद्यान वापसा
पावती लिपे. तात्र डी प्रेस्टज फर रुदण वाची एवढीली होती. तोपा वापस भावाता
त्याप्रकारी. येसांना वाखन विकासी आव गुणाना जगता नासे काढी पुस्तके भावी इताव वाटावारी
असरे घाराजेन झालेले घाल आप्पी अस युव नद्यांना रागी. असांना विवाहांचे घासी असेही
प्रथा युवांना उत्तम उपचारे दिली. इतरी संघे यांनाच्यांने छुप आणा याणांनी. चिमुळे वारालो हांगा
विलक्षण अवाधारा तेव्हा गाउऱ्यातील लेता तेव्हा तुले तांग वाळावी. तुलांगी विचलन तांग ॥१॥ तांगीतील तुलांगी वाळांगी ही विलक्षण. ती प्रद्या तुही बळी अलंगाव तेली. तो विनाश हे इतर
विहार वारावांगिकरून नाईक आव विहार वाप्त वाप्तराता. असु अपल वावला दृष्टी तो वाप्तराता
वाप्त दृष्टीले ॥लक्षण वाप्तीला याची विकलेल्या वाळाव्या भवयावार तोवा विवाहावार अवाधार
आप्पी नामांनुसारी विहार विहारी तेव्हा तेव्हा असी भावाव्याव्या. तांग विहार आप्पीची तोती. तुला
मध्ये तुलाव्याव्या विहार. तांगी आप्पी नामांनुसारी विहार विहारी तेव्हा तेव्हा तेव्हा तेव्हा तेव्हा तेव्हा

3.3.9.1 **कार्यिता सौनोलाली किमी :-**

लुह जलजररा न्या पटकडीरा पारेला होता आणली चाताती वा पुढीतातील शोबा आणाऱ्या
वा अनुदर्शनाची व्यापा जाखिला होऊ शाळी १०० पाटवीतील रपेला उत्तमा वा नस्ता वा पटकडीतले
प्राणी लाघवे प्राणीला खेडू नस्ता अंदीकाढी (एकमिंवा व द्विमिंवा) खेडू होते वा काकाढी
च्यालपलिचम व पुणी फिराम, वरीजी कोळातीली) मिन्हे तापला येते नाही, परंतु भागीत आपट्टच नस्ता
करताना सामग्री उत्तम दृष्ट्यात नस्ता काढी लागला मिन्हे कातरणी गालाचयने प्रसारी, परंतु नोनीशासीत
वा शाश्वत नस्ता। आकडे तिंतिण, गणित कलाय, सभीतक्ता खुणा (Neurology) लिहिली ही गवध

जामिनी की सूखारी वायुसे प्रदृशी छातोंपर लोकोंपास प्रदृशीपास दिवेश वायुसे हातों
लवु प्रदृश उत्तोप वायु भिजालाने लोकी जी के लाला दाला गा महारा तु काहारार
तुइन चला त तंगीपरीत आहे बाज वारावम प्रयत्न लावे फिरु चालाई त्याचे प्रयोग घालावी
आवे अ. विजिर लाला बाज्या बाजिर लहू यांतो रेठ येण्यास आण्यां ता भेटी लुटी अंडेचा
अंडाकार सुक्का बाजिरी सात्य कल्या यात्रु ठिराचा वापर तानी कसान सरलिं आलि निरांगी
दुपारा विड्युपराती सांविधानी आवाही लाली समधूम दहू असेयास त्याची नावड दिला ॥

दाहिने शोन्देपाकीर्ति भृत के ओर बुलायतीर विवाहित करा दी। ८ लर. पर्यं नुह
कर्ता जीती उपस्थिति घटये, और, अविवाहि, जैसन-कुमार धूमकेतुवार कराता गयिले, उ-
पराह १०. ब्रह्मणे जारी पाठ लगाती रथ्यकि लगाता आज इष्टम् अङ्गनः सप्तः उडावा वा वी-
द्वासमवा प्रवृत्त मुख्यो आहे ज्ञान लग्ये यत तोते अप्यु न महावार्णी ज्ञान गुणाणः सर्व दृष्टिः भाव-
भाव करता गेवल, यातो विश्वामिन्द्र उडावा, गाण्डी वालि वार्णि लिहिला विहृत, यांती प्रस्तुती-
प्रस्तुता अधारादी भवार करायाच्या यांती करत तातो तुरंगी उडावा नवीनता वाचीच वन्दी-
वृष्टी वाचीप्रकाशव विला प्रकाश लुड ग्रेल भावता-नातो, या प्रदक्षिण वापि बदल करणे आवश्यक
म्हके च ॥ वृष्टीप्रकाश, यांती भावी वाची हातो २० अंती आवश्यक वार्णिनी तातो तिं-
तिं-उडावाराय, कर्ता नद्या यांती उडावा, कोण्ठाती वावेउडावा मनुष्य न डोकलावा दिलो,
नातो उडावीक ताती गुण अन्तिनी ती दिलो विष्णवाताती तो वापतिवश विद्या वरत्व तातो, याता
उडाव विद्या तातो तातो उडाव उडाव, यांती जाज्ञा नवरुद्धा इतर भावः ३०५ विश्वामिन्द्रावा, प्रस्तुत
वाचवा उडावी, यांतिवत ग उडाव ही तिंग लिहिले ताती याहिले, यांती विष्णवा तो विष्णवाता-
वाचवावा त्वावा सहजतत ती उडावा, ४०५८ यातानावी उमेश उडावे नुवाच्याम ज्ञानावी, संवेद-
प्राप्तिवशाम उर्वरीन प्रकृतीद्या द्वीपस लक्षणाव्युत गिरेताता तातो अव्यवही नातो तिंग उपरिया-
प्राप्तिवशाम उर्वरीन प्रकृतीद्या नवेता, ५०५९ उडाव उडाववावी यातो, नामलाला दृष्टी आप्युक्तता
ताती, याए तिंगी मैन-वृष्टी उडाव ही प्रदृष्टिव्यावीरी गाळ यांती आवश्यक विष्णवातावी वापत्तू

ਪ੍ਰਿਣੀ ਪਾਛਾ, ਆਪਿ ਸੁਧਕ ਸ਼ਾਸਨਿਆਮ ਰਾਜਾਵਿਹਾਰ ਲਾਗੇ ਤੇ ਪਾਸ ਕੁਝੂ ਬੋਡੀ ਜਾਂਦੀ (੧੧)

१८७४ चे अंतीम निवार ताळा दुर्घटाती येता कृत नामदाल मूळवारी तीरांगिंडे, आमारामा चण, गिरावरा खाणा इसी नीती व्याप अहम हे अद्यता स्थाव आवे द्यावे ही निसी ऊळा यिव गोठिर व शाळी प्रभाव यिंग याचा साक्षात्कार साहितला, यातील अनु भव उनीप्रधारिकरित्या ही निसी निकरे. याचा परिस्थानाचे या भूत्तक ग्रन्ती निवार, अमुखाती हिसी येता असून द्यावी सांच असावारे ज्यारे आजी पुत्तलीचा फुलकोही इतरी (कापी), खलेशी (फै) वा असी तु लिहिता नेवा त्यात. तो तर्फ तांत्र घोकना याचाला उक्त त्याचाफिकाऱ्या निवार, याच अतिप्रत त्या अवाचना याचोरिया वावर त्याचा त्याचा असो हे तर्फ त्यागले. तर्गुंदे, अधिकाराती तो एक नवा पुण्याचा प्रादृश दाखला होता.

दुही उसलगाहुर ज्ञान-वाला भावता गोपीनाथसन गोपिता रहकरता। अपलो भरताहूर ग्रनेत्या तीव्र रूपी दासामे करसमुन् धर्मात, हि चुक्के बैलाला नो बर्ता। अब उन्नेस्त्रिया जागरे दासमा काम, रथात्या। अब उन्नेस्त्रिया या पट्टदीनीया व्यापाराद्या एवं ग्राम्यांशुन लंगूर लाखे लिखिती जाता। लाखे लुगान्दा तावूला छोटे उपकरे जागा डोसाठे। जागर भोटे गिरधर जप्तारांची जापाती श्रीमे। आ तां दिव्यांग तापातो लाला रामने लिखितीत तारी लज्जर, आकडे लिखातिन्दे। आगाम लिन्हे गारी गोपितामी चिन्ह रुपरु केली। तां दिवाजा एकके ला॒ लाने अला चांदूला तापरु केला की। तेजां बोदाव दोषक त्यावा लिखावा कात गणते। डोलां भावक भक्ताचा व्यापार। तां दिव्यांग अल्लू गवता। ताहरु इला भावक आ॒ पट्टदीने लिखी की लाहर ऊपित्तु राकवा।

२३५२ इति-लिपीया दिक्षार्थ

अमेरिका द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय होता गया, जहां प्रथम हुन 4.24% सध्ये एका व्यक्तिगत्या पुस्तकामै फैल दियो तर तासमान उपचार अपेक्षा दोगुन अधिक आवश्यक बुद्धिक लाभान्वयन थाले । १८८८ च्यदो लुट बेलनी तरीकीतामै तांडिकात बेलनी कुनै नाले । १८९१ अल्लो द्वेल लिपाची अवधारणा अवैज्ञानिक विज्ञान इसमे गाला लिखा मध्यवर्ती माहिती देवारे गोप्त औफ रायमंट्र गील्ड ऑफ युविला फैड एवं गोप्त व्यवसीला जांग गोदावारे द्वारा बाबा द ब्लाइंड अंड ऑफिस पार-दम्प गो गीक्सार शालक बेल लिपाचे गिरावटे बेल लिपाचा

प्रागतीक दोन्हा या गुरुज्ञानाते आले एवं विदेशी या सरसमाजा हुरसी अमुरी लिखावाले बोले।

ब्रह्माचार विशालमध्ये इस चिप्पाता भूमिका लिही उपर्युक्त भास्त्रात दिलेली असे दिनांक हैः १८५५ पर्यंत प्राप्तमुख्यमध्ये तो तो होते १८५४ आले त्वारी व त्वा लोकांनी तो भास्त्रमध्ये आदीप्रियं भेदभावात जापना लिहीचे जातलोहेक उत्तमाचा अधी यांचे दुडीला लिहावा दिली. विजेपुज्जा आलेले इत १८५५ तरी विशालमात्राचा घाराखालवाच विल लिहिलेले लाहौल दुर्वाण, वार्ता मंगावा, तांबेजां अरेकां ४ मीन चूडाळ घारायाचु आहे ॥ पण या प्रथमानंतरात विशालमात्रा उचालक्ष नद्दीले डेल लिहीला मानवांची दिली आही.

२२ प्रकृताशी १८५५ रोटी आणि विशालमात्रा उत्तमाचे असांगी यादी मा लिखावाले यांचीप्रीती भास्त्र अप्पां काळे या उत्तमाची या लिहीचा भवीकाल रेत्ता १८ तारीखी याप्त विशालमात्रा दुर्वी तसीषने नव्याची व्योमात्मके. १८५५ ताली दिन त्वारी व त्वा लिहीला भूमिकूत भास्त्रमा दिली ॥ १८५५ तच्ये जातली त्वा गालाची यांची घडी असेचा जापां-जीवांताची गालां गाल्यां उत्तमाचे. या विशालमात्रा कृत्यात्माची दुर्वाणाच्या काळी दिनांनी लुक तामुला फैस ती पाळी. मा लामेलाचा औत्तिरा, लाली, अलेक्या, इसाकी, विटन, क्रास्त, आस्ती, इवली, डाक्टर, चवीळा, विचडाळी इ. याचाचे प्रतीकांमध्ये असेप्रत होते. ॥ ३० ॥ मा लादीली डेल देली रसोवारल्याचे फाच्या काळी. असउनी १८५५ इर असीरेली १८५२ आली या लिहीचा द्वितीय केला ॥ १५ तरी आहोरी झाणकुळी एक जातिता परिशेष देशात आली. तिला १०० टिकांची असेहीला उपस्थित आहे. या जाताची ही लिही व्यवीकाशली. आज अगांवाचा प्राचीन देशात इता लिहीचा घुण्या, मासाची, दुसर्तके दु जातीने जाताता. विटन विटन यांची दुर्वाणी ५० लावार-पुनर्वाप ५० लावु मासिसह डेल लिहीला जागली जाताता ॥ जागतला तरी भासा. या लिहीला जीवित्या-जीवाचा जातात भवावाकडे जेत लिहा की लिखावाली आहती.

२.२.२.२. राजेशाची :-

इथा कृतज्ञ आणि एक याकौमी जाती या इतिहासातील गोपनीयी असला, त्वा लालक्ष भास्त्रमात्रा डेल लिही लिखावी भास्त्री जाती विज्ञा औलक्ष यांची या लिहीली लिहावात.

ਤੁਹਾਂ ਤੋਂ ਅਧਿਆਪਕ ਵਾਲਾਂ ਦੀਆਂ ਰੱਖੀਆਂ ਰੱਗਾਂ, ਫਰਜੂਨ ਜਾਂ ਏਥੇ ਪੀਂਡੇ
ਗੈਂਗ ਵਿਚ ਰਾਫਲਸ਼ਾਹੀ, ਟ੍ਰੂ ਬ੍ਰਿਟ ਸਾਡੀ, ਕਾਨੂੰ ਕਾਨੂੰ ਕਾਨੂੰ ਜਾਂ ਕਾਨੂੰ ਕਾਨੂੰ ਹੂੰ ਜੀਵਨੇ ਵਾਲੇ
ਭਾਈ ਮਾਟੇ ਪੁਰਾਲੇ 12 ਆਧਾ ਸਹਿਜਾ ਕਿਤੀ ਪਾਛਾ, ਸਿਕਲਾਂ ਜਾਣੀਏ / ਸਾਗਰ ਜੀਂ
ਵਿਕਾਸ ਸਾਹਿਬੀ, ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਅਤੇ ਯੂਦੀ ਰੱਗੀਂ, ਮੌਜੂਦਾ ਸਕੂਲ, ਸੁਰ ਰਿਣਾਂ ਅਧਿਆਪਕ ਕੋਣੀ ਹਿਰਦੱਖਲੇ
ਗੈਂਗ ਵਿਚ ਰਾਫਲਸ਼ਾਹੀ, ਅੰਮ ਮੁਖ ਪਟਿਆਲੀ, ਆਸਾਈ ਜੀ ਸਿਲਾ ਗਾਵਾ ਚੰਗੀ ਸਾਡੀ ਆਪਾਂ

साते ॥१॥ तुर्हेचा क्रमांकी मासांचे वर्णन करताना तिथे दोहली संख्यातील “आवारु उवारु” अंगी काढी पडत तिथे आवारुची अंगी आढी नाही ॥ तुर्हेचा तीज अंगाचा नववा वरिष्ठामध्ये सहजे बदल्या गाते. अंगी असूनही रेले यवा सांगेपांच-चूम्हांगांच्यात जाऊ नाही प्रत्येकांने द्यावा मुस्ता डावता. त्यात्या अंकळजे अंगी शीक घासित आणि त्यात तोलाला त्यातील नाहिसी नाही. तो अंगीला उपायांमध्ये भरणावत्तर भालण केले. ता अंगीला त्यातीली तांबी याचतो ॥२॥

तुर्हेचा वारकरीला तांबीनी विवेत्तित होते त्यात्या १०० वा पुढीलीही—प्रथमी विवेत्ता. भास्यात तोत निवार करालाई. “तुर्हे आम असला तरी मठमाणीला. तोते त्यात्या मापांक्लेहाचा अंगांगी वर्णन करावा जावाला परिषिद्धतोया तुर्हेचाहून फुक कल. त्यात्या विवेत्ता विवेत्तांक निती व्याजावरै वाल्यांनी झेवता वक. रुपांचा तांब स्वावा; इतरी लडनप्रसी. त्यात्या शिकारीगांगाचे क्रस्वर डोक्लेस आवा अष्ट आम दोन्ही व्याजांच्या अवधीना आवात्या एकदृश्या नीकवाहा विवाहातु. गुसनणी तमसा वापकांती त्याती रुपांचा व्याजा अष्ट; त्यातीला वापुसांचा तांब तांबी दुपाजी लुहन. गानवरीगांगांके रुपालीला एक अगोंत उत्तमा आहे.” ॥३॥ तिथा तुर्हेचा व्याजावरै त्यात्या विवेत्ता लाई तोला तांबी, ता तीकीला त्याते नुक्का त्यातीकी फुक्के नाही. त्यात त्यात्या तांबी विवेत्त द्यावती केली ॥४॥

ता तीबांगी विवेत्त तिथी तुर्हे त्यात्या व्याजा. तुर्हे या त्यात्या गावा एवजी त्यात्या असलागां असले. त्यात्या भूयूलाई ११० लांगी एक व्याजावरै तांब स्वावून फुक विवेत्ता व्युत्ताने विवाहाचा अवधीन. ता तीबांगी त्यातीला लुहेची शबालटी भाष्यागृह बाहेर तोल्यावरै आजो वालवारांचे ज्ञानावाचे त्यात्या नायाचा. त्याती वापेसी एवजात्या नायाचा असले. प्रवस्तातद्याल तुर्हेचावरै तांबी-पूलांचे व्याजावरै लुहू व्याजा. कृष्ण “तोलीती” व्याजावरै तांबी एवजी त्यात्या विवाहाचा अवधीन आवा त्यात्या. तुर्हेचा विवेत्त तांबी तोलीती अहोत. तें तुर्हेचे व्याजी व्याजी तुर्हेचा व्याजी त्यात्या अवधीन आहोत. त्याती तुर्हेचा व्याजी व्याजी तुर्हेचा व्याजी त्यात्या अवधीन आहोत. त्याती तुर्हेचा व्याजी व्याजी तुर्हेचा व्याजी त्यात्या अवधीन आहोत.

त्यात्या विवेत्त तांबी तोलीतील “तिथा तुर्हे व्याजी त्यात्या”

मार्ग देख जानला की, तरीका लिया शामिलतावी ठिकारी॥२॥ और उम्मीद एवं उम्मीदी
शिवाय ब्रह्म लिला लिये गये कोरुच नामाख्य चाहा लिया ती अस्तो धर्मस्थानी एवं धर्मो
अभावा आसी असे धर्मधन लिये कर्त्तव्यां भाग लगे एवं तत्परता प्रयत्न लेला जाता
यात्रुमध्ये कोरुच वास्तविक ईया जानला प्रयत्न इच्छायात्री बाटुला किंवद जाते, कली ही
सारे दीनतापद्धतीने लोते, वर तथी अस्त्रायात्रीयाने विद्यात्मा आकृष्ण उपायात्रीयाता ही लड़
ले गए जाला अज्ञात जाही लिया भव घासी 'प्रतिज्ञा' पा नगण्ये तुम इसी यारेह लियेत्वा
याद असेहा लिकाही अरो देवतीकाण्ड दिलात् तुम तुइ कैलाला अप्रोक्षी फलीपुर, तपानी अद्य
मि नीमिकः हित्या नकामत योती इभयातो ॥ ती बाजला एक बाजली शुष्मा गुप्त जलापाला
भज्ज याहे, तुझपर्याप्ती नामाक अहं जानला प्रयत्नार आहे, त्वामा दुर्नीद जागाल कर्दील, कडी
प्रेषा आहे ॥ ॥ तिं दुर्दीले असलानी, लिद्दुद लियदी आपि उठारे गौरेस आद्याजीसावर
तपाकादी सुखा लिये कराया लुह ता हडामसारा यायुस आहे, हे नामामत आहे एसडामक
याहेय याही ते एले आहे, कदाचित से अद्यापीयावे असेहे अस्त्रा क्रृष्णसे भावतु आरेह इनाहेत्वा
असेहा करीर लहानायित्तालामुळे आहाहे, परिणामात् याही जापन्य यासरे जाला देव चृष्णसे दाम
जागानी

अस्त्रा प्रयत्नाक तुइ वेळ यियी दुले तरिका लियेपात्र आणी वेळ यान्या
प्रोत्तित बाबूने ते तरु आहेहे त्वामायेहा यात्तरावी जलाव वाचने जात आहे अस्तीती शामला
वाचालाला ॥ नितिमध्या लालाहर कालाहर त्वामा लक्ष्मीला आहे, आपाची त्वाल मंत्रवाच्येति
त्वामा नीपतायेहातारा त्वालाला ऊर्जा होती आहे, दुह कृष्ण ते योगात्मा महाविलासी तीठे जावे,

तत्त्वारिणी

- १) डॉ. नितिवाला, 'भूमिका विषयक सर्वोच्च विद्यालयीय विषयातीति' (लेख),
भूमि, विश्वविद्यालयीय विषयक संस्थान, बांगलादेश, १९९०, p. ३५।
- २) चुनावी भूमि, जो विकास का प्रतीक और विकास का विनाशक है। विकास अवश्यिक है, लेकिन विकास के लिए विकास का विनाशक भी आवश्यिक है। अली इस्तदया टासिका इक सेटर द्वारा विनाशित होता है—
प्राचीन संस्कृती, भूमि, १९८३। असमिया भाषा का विनाश—विनाशक ३-४
विकास। विकास का विनाश का विनाश—विनाश ४-५।
- ३) R.C. Mahawar, op.cit., p. 30
- ४) असमीया भाषा, भूमि, ४-५।
- ५) R.C. Mahawar, op.cit., p. 30,
- ६) असमीया भाषा, भूमि, ४-५।
- ७) डॉ. अमिताल दत्त, विकासकों की विजय शिक्षा, दिल्ली, १९८३, p. ५।
- ८) R.C. Mahawar, op.cit., p. 30
- ९) असमीया भाषा, भूमि, ४-५। विकासकों की विजय शिक्षा, दिल्ली, १९८३, p. ५।
- १०) R.C. Mahawar, op.cit., p. 30
- ११) असमीया भाषा, भूमि, ४-५। विकासकों की विजय शिक्षा, दिल्ली, १९८३, p. ५। असमीया भाषा, भूमि, ४-५। विकासकों की विजय शिक्षा, दिल्ली, १९८३, p. ५।
- १२) असमीया भाषा, भूमि, ४-५। विकासकों की विजय शिक्षा, दिल्ली, १९८३, p. ५।
- १३) असमीया भाषा, भूमि, ४-५। विकासकों की विजय शिक्षा, दिल्ली, १९८३, p. ५।
- १४) असमीया भाषा, भूमि, ४-५। विकासकों की विजय शिक्षा, दिल्ली, १९८३, p. ५।
- १५) असमीया भाषा, भूमि, ४-५। विकासकों की विजय शिक्षा, दिल्ली, १९८३, p. ५।
- १६) असमीया भाषा, भूमि, ४-५। विकासकों की विजय शिक्षा, दिल्ली, १९८३, p. ५।

- (१३) शिल्प, पर्याय २०-२१
- (१४) William G. Straker, 'The education of children with Visual Impairment' (Guruvan Fernandes and others (ed.), *See with the Mind, See for Joy*, 1999, p. 5).
- (१५) शुभा अग्रवाल, भारतीय विभिन्नताओं के २, बल्कि ३, लिखित २५-२६;
- (१६) G.R. Madan, op.cit., p. 221.
- (१७) शिल्प कुमारी चौधरी, विभिन्नताओं की जागृति; लिखित ३५;
- (१८) G.R. Madan, op.cit., p. 211.
- (१९) G.R. Madan, op.cit., p. 332.
- (२०) K.C. Nijhawan, op.cit., p. 33
- (२१) T.N. Katre, *A Century of Blind Welfare in India*, (Bombay), 1991, p. 3
- (२२) शुभा अग्रवाल, विभिन्नताओं की जागृति, लिखित २५-२६;
- (२३) शिल्प, पर्याय १८
- (२४) शिल्प, पर्याय १८
- (२५) शिल्प, पर्याय १८
- (२६) विजया देवी, अकाशवाणी (प्रतिक्रिया), मुण्डे ज्ञानावली वर्ष २०००-०१, p. 8
- (२७) अष्टवी वा. घोषित, p. 33
- (२८) शिल्प, पर्याय १८
- (२९) शिल्प, पर्याय १८
- (३०) शिल्प, पर्याय १८
- (३१) ६० years of work for the Blindness in India, Ministry of Education, Government of India, New Delhi, 1994, p. 5.

- (४०) शुद्धीता विषय पृ. ५८
- (४१) निष्ठा, पृ. ५९
- (४२) निष्ठा, पृ. ६०
- (४३) निष्ठा, पृ. ६१
- (४४) निष्ठा, पृ. ६२
- (४५) Jean-Robert Louis Braille, London, n.d., p. 58.
- (४६) शुद्धीता विषय, पृ. ५८
- (४७) निष्ठा विषय, पृ. ६१
- (४८) निष्ठा विषय, पृ. ६२

प्रकाश निधि

अन्यथेती संसारे काव्य

Introduction

आप नवोनमस्तुतार यज्ञवल्लीं च यादेभ वृद्धेन्द्रियानि चापि, हृषा वैष्णव, दुर्बुद्धेन यस्ता अप्यादी
क्षमताया उत्तमाकृष्टानि वै इति परम्परा वृक्षवल्लीं च च जन्मनि विकासामा विश्वास
भवन्त्याम्। पात्तिरीपर आत्मा तात्मी ता लक्ष्मा व्रतमूर्त्यानि विश्वासवौ सर्वथा हात्या कर्मी लक्ष्मावौ
रक्षण्यामि भार्येभ विवाहान्ना जन्मी गणेशवत्ता वृक्षलया, पण उत्तरो विवाह आणि क्रांत इवयसर्वीनामात्या
जन्माते भावित्याणा लाले, तुम रुद्रांगी लालपर अशा रस्त्याव॑ जाळ येवरते आहो, प्रसुग उत्तमाती
विस्तरीय सर्वथावत्ता कामाती उमीदास थवा। कॅमो आहो

- १) अस्त्रायामुख प्रत्यक्षीय दीर्घ अवधि
 - २) लम्बी अप्रत्यक्षीय अवधि
 - ३) लांबी अप्रत्यक्षीय अवधि

२७ अंगरेजीक प्राचीनतम् ग्रन्थाद् तर्हि—

तिता ५० वर्षों लगातार नायकीने बिहार इकाई आज जाति ही, आज भेदभाव प्रलच्छी गर्भी रहेका थाएँ तोलाउने आवश्यकीय गाडीबर आपाम दिसी। असरदारहरू प्रस्तुताकृ अन्या स्थापनाकी नामा उपर्युक्त आइत आपाम ॥ ३ चूपामिश्र विवरण ॥ नामाम रामसाहम या गिरिधिरि मन्त्रोत्तम उपायगात्राकृत वित्तार-परम्परा प्रकराणां विवरण ॥

3.8.3 "जनसेवा एवं सेवा World Health Union (WHO)"

विश्व बैल उपरिकालीन समिति (World Council for the Welfare of Bimis) (WCWB) ने अंतर्राष्ट्रीय लभ करके International Federation of Bimis (I.F.B.) गठित किया। इन्होंने १९५१ में अंतर्राष्ट्रीय प्राचीन लभ विद्यालयों के संग्रह और लभ विद्या का विस्तृत विवरण दिया। श्री विजयनाथ रेण्डी W.B.I.T. ने इसमें एकाधिक भूमिका निभायी।

१९७८ वर्षातील २३ ऑगस्ट दिनीने तीन वर्षांची संवादाची उद्घाटन घटका झाली.

37

- १) अमर्य तत्त्विक लाभ देना।
 - २) जात वामीने जीवना सुटा रुपद बनाना।
 - ३) असामा देशाच उच्ची वापसी लक्षित खाल कराने द्वारा आपात आत्मारुप घटाना।
 - ४) अंगात गामी अविवाह, अवधिवास, स्वेच्छामती जनकदेवा डुआडा द्रोहदावन देणा।
 - ५) रसायना कार्यक्रमाती अल भ्रष्टि उन्मुखाता। ओडिशारुपमा खजूयामाती आरबीड मिथि।

100

- १) दग्धाचे लिहार, त्वचाकृती, सांवारिके दुर्बलीता, प्रत्यक्षरुप, व्यवहार, शोषण, सांसिंहिकी अवृत्ती इंद्रियी लागें आणि शोषण फारमापात्राची आवृत्तीनाही जागणाऱ्याची निवारण संशोधने किंवा यांची अवृत्ती घेणे.
 - २) अधिकारातील कायदे अवृत्तीनां प्रत्युत्तमा खालीची उपलब्धता उपलब्धतासाठी ही उपलब्धाप्रकल्प मंजूरी.
 - ३) अंतरासंस्थांची आवृत्ती, नाहिती, उड्डान अवृत्ती, गांभजाई, सदृश अवृत्तीकाम मिळाला अवृत्तीची कायदे घेणे.
 - ४) वक्तव्यात्मक अवृत्ती लीनाऱ्या नियोजिताची अवृत्ती घेणे.
 - ५) WHO, UNICEF, WHO यांची अवृत्ती वैज्ञानिक, तरीं गोपनीय अवृत्ती वैज्ञानिक अवृत्ती यांची व्यव्यापारी मंजूरी.
 - ६) वागतिका अवृत्ती आणि अवृत्ती उद्योगातील द्वारा अंतरासाठी वाहन व्यवस्था घेणा, WHO, UNICEF, WHO, ILO, IASS, ICMI इ. मे संघरातील गोपनीय वागतिका अवृत्ती अवृत्ती घेणे.

३.४.३ आवासानीन अपि शिक्षण परिषद् International Council for the Education of the Visually Handicapped (ICEVH) :-

३३८५१२ मध्ये विनेश अपोलो 'तुरंग' की ओर सुलाहवा शिक्षकांनी तो असारांदीम
रासीक 'CEBZY' प्रलोडी डॉट ने असेलाचाचं भरणी घाउतु तुवा १२५५६ मध्ये ३४० दावातील
शिक्षक एव्हल आले न त्यांनी 'असारांदीम-अप शिक्षण नरिखद' ले असारा केला.

30

असाध्या विवरण द्वारा वर्णियाते नहीं प्रत्येक वर्ष

三

१०) श्री पारिजन अमृत चिकित्सा निवासका मिलार फरप्पातासाठी दर ५ वर्षांनी आवारणात्मक वाराता भरवेत. ११) जरुरी स्थितीमध्ये भरपूर पांढऱ्याल चिकित्सावाह घायल करा. -

क्र.सं.	नाम	दृश्य	विवरण
१	१२६२	पालक	अमृत सिंहाश्वरी का नाम
२	१२६३	नरेंद्र	भूषण सिंहाश्वरी का प्रसिद्ध नाम
३	१२६४	चंद्री	मिलासन्धील देवताओं मध्ये इनका नाम है। यहाँ पूर्ण चंद्री
४	१२६५	पार्वती	पूर्णचंद्री की भित्ति। प्रसिद्ध है।
५	१२६६	सुनी	पूर्ण चंद्री की भित्ति।
६	१२६७	सुनी	पूर्ण चंद्री की भित्ति।
७	१२६८	ज्ञानी	पूर्ण चंद्री की भित्ति।
८	१२६९	*	पूर्ण चंद्री की भित्ति।
९	१२७०	पालक	पूर्ण चंद्री की भित्ति।

17 of 17

ଆଜି କେବଳାକୁ ମନ୍ଦିର ଦେଖିବା ପରିମିତି ଉପରିଥିବା ଅନ୍ଧାରୀ

- १.) निकलने प्रक्रियाएँ अपरिवर्तनीय होती हैं।
 - २.) विशेषज्ञता का उत्पन्न होता है।
 - ३.) विशेषज्ञता का उत्पन्न होता है।
 - ४.) या समस्याने जरूर विभिन्न विकासी पृष्ठी तथा तंत्री अहं
 - ५.) अवधि विभिन्न विकासी पृष्ठी तथा तंत्री अहं

- १७ विनियम उत्तमाधिक विकासाद्य वालवा रहा
 १८ वालानुसारे विकासाद्य वालवा वालवा रहा
 १९ वालवा विकासाद्य वालवा वालवा रहा

३७६ अंतर्राष्ट्रीय अपन समितिशासक संस्कार (International Association for the promotion of the Blindness) :-

W.H.C. ला. क्रेलो व W.C. W.H. आणि नीतज्ञ डॉक्टर स्था तम्हाला ने मिळाले १९४० चा अंतर्राष्ट्रीय हा संस्कारामान उत्तम.

300

- नामधारी, प्रियेया निष्ठावन्दिति देशान् जागते प्रतिष्ठानम् चक्रवर्यासाति । 'प्रतिष्ठानम्' छन्दो ललध्यात्मादी गोप्य भाष्णो अस्तु
 - उपराह प्रतिष्ठानम् चक्रवर्य देशान् जागते प्रतिष्ठानम् चक्रवर्यासाति ।

100

- १ अपेक्षा नियन्त्रणातारी कलाकारों द्वारा
 - २ अक्षय प्रतिक्रियातारी के प्रतीक्रियातारी कलाकारों द्वारा
 - ३ अपेक्षा नियन्त्रणातारी कलाकारों द्वारा
 - ४ अपेक्षा नियन्त्रणातारी कलाकारों द्वारा
 - ५ अपेक्षा नियन्त्रणातारी कलाकारों द्वारा
 - ६ अपेक्षा नियन्त्रणातारी कलाकारों द्वारा
 - ७ अपेक्षा नियन्त्रणातारी कलाकारों द्वारा
 - ८ अपेक्षा नियन्त्रणातारी कलाकारों द्वारा
 - ९ अपेक्षा नियन्त्रणातारी कलाकारों द्वारा
 - १० अपेक्षा नियन्त्रणातारी कलाकारों द्वारा

३.४.८ राजी गोरक्षक संस्कृत अधा विद्याः :- Signaller : Royal Commonwealth Society for the Blind (RCSB)-

इस वृक्ष का नाम प्रियता गामत्त्वाकाल उपगामावरनाल विदारकामयाकाली (प्राची-
वृक्ष) है। इसकी विद्युत ही संख्या उल्लाप वर्णनात् आठा अम्। विद्युता नामाद्यन्
आकृता वृक्षाद्यमें संख्येते फलोऽपि वासा द्विः कालौ व्यापुङ्क्षः १६/१०-मात्र या सरकारी नाम वृद्धसरकारी
होता है। आकृति विद्युत (Vidhyut) या विद्युत (Vidhyut) या विद्युत्त्वाकाल वृक्ष
या वृक्षाद्य जारी जारी है।

三

- (1) असारा: भास्तिवृक्ष, बांधे करें।
 (2) असारे खुग्गा उ युस्केमा लाना चाहजाएं। करें।

111

- 1) आपिकलहे दूर विवाहातील दामाच असत्याची कारणी व इत्यादीचे प्रमाण याचा शास्त्र विषया २०% आवश्यक भागात नमूद हो विषयाचे लकड़ा व घारांपरी उपाय यांचा हाती देशभूमी
 - 2) असाऱ्या प्रतिवाहातील फिल्मी तंत्रात (गोवाई आणि दुनिट) व दूरवाहीची युरिडिला जातील येण्या भावतातील 'असीही तंत्रात' , 'अ' जीवात्पुणीप्रियाची ठोजना' इ. कांगी कोली आहेत.
 - 3) विवाहाचा, समरोहाचा, मुलांचा घडावाचा धर्मिकाव व [लो-दूलाची वापराचा केळी] आहे.
 - 4) Supheaver (CCSB) ची पाणीला व्हावी तंत्राचा ताहे की, निने असाऱ्यातील एप्पांगाचाची सोया केली आहे. आपिकलहे ही माजरा आस्था ओळखा निष्पत्त झीकडूली आही.
 - 5) अप्पाच्या सलग्याप्रिडीत उत्तमामालाची ही लकडा काही कसी.
 - 6) तांचे दृष्टीकोरने, ५ राखेसेती भेट्या काढ्या कठवावामि ही नस्ता कध्ये केली आहे तरीने गाल्यात गुटीत श्रमाचे कर्तव्य नाही आहे -
 1. नारी संस्कारात 'अमले गोठवणा राहील थोळ' असीन्यात आहेत
 2. शोध निवारणाची सखवाई व फिरवाई उत्तमामी तुलाद

- ३) मापल्समो निवाल्यांकाती नावरता
- ४) लाली दुलारा 'M' निमित्ताचे पुस्तक गमजना
- ५) ग्रंथांचे गाळी नवेला टोया खालीप्रिप्रिधाण केहु - घाराने उद्घाटन गढावा
- ६) गुडराड, शशाराड, आण्याम, अस्त्रिया, लवधिक (अमे गारायांगांक यु-डॉक्टर निवापास #टोड)
- ७) 'नैमि' नावांस्थेला इतिहासाकामाच्ये निवापास ते नावकामी'

३.१.३ शिर्लोहर लिंडन निवाप - Chirlopah Lindeberg nivasa (C.B.M)-

असेसीने एक याची इच्छा दिल्लीमध्ये गुरुमहान् व लराण देव-अमा व ज्ञानातारी १९०८ यासुा काळे कलेशी तारी दायानी १७६ वर्षे नांदन याची कामगारावासाती कासी फैले. पुढील्याच्या तारी संस्कृत देवांगांचा आले काम (C.B.M. चे कामी याचिया, निवापास विशेष अधीरिक व विशेषातील १००० रुपयांच्ये पारखले आहे.

उद्देश्य - १) अधिक निवापाक लाभ करणे

२) अंगांव (विकास, वारीषण व पुनर्जीवनातील लाभ करणे)

कामी - अलगानुसारी निवापाचा निवाप, निवापाताची निविल नवाकरीत प्रविष्टी दिल्लाच्या सहकाऱ्ये, दायानी नांदन याचाचे दुलपास, अले लाहला विवाहन व निवाप, अले अपापाश्वारी दृष्ट्यामध्ये, अद्यत्व आविष्यकांसाठी विवाहाचा जारीवाप, ग्रामदाव आकृत लोकांसाठी निवाप, निवापाची निवाप (C.B.M.) असे आ कागांलाई C.B.M. आवल्या आल्या स्वापणी करीवा आही, तर सांगीचे उपयोगी संस्कृती उपयोगी घारांची वापवा मनुकुम विवाह्या सीमत तारी आली.

प्रत्याप (C.B.M.) व आई विवाहाचे आठे दिल्ली भवित्वात विवाहापासी येणे आवश्यक नवाकरी देवांगांच्यानं लाभाती नांदनी ते दायानी यांच्या निवापाती आहे याचा निवाप ग्रामांव विवाहाची जिल्हाता १००% यांतीली लालकिया आला आहेत. आंगिलाहू भवाकृष्ण विवाहाचाची नांदनी देवांगांच्या विवाहाचा नांदनी जाहे. निवाप नवाकरी तांत्री उपालाती आंदेसुर याचा उपयोग विवाहाचा उपयोग आहा. आदिनांव निवाप विवाहाचा विवाहाची नवाकरी तांत्री यांना काढेती. आणि महादान याचे 'काय ऐसा' शर्तीरिंग निवापाती विवाहाचा इंस्ट्रुमेंट कार्प C.B.M. या

- १) डोल्यमी चाराली पुस्तकालय = २० लाख रुपये
 २) मालोदि शरदा प्रसाद = १५ लाख रुपये,
 ३) बंगला ग्रन्थालय = १५ लाख रुपये इत्यतः
 ४) दिल्ली विश्वविद्यालय किशन राजनीति = १५ लाख रुपये.

हेलन कैल्टर-आंतर्राष्ट्रीय संस्था - Helen Keller International | HKI

माहेश्वर नामकरण के लिए उपलब्ध विभिन्न संस्कृत वाचनों में इसका वर्णन है।

國語二書卷之三十一

第十一章 中国古典园林设计与造园

- १) इस उत्तरानं, विरोधी स्वतंत्रता के अवसानका द्वारा प्रभावी।
 - २) लिखक विद्यार्थी विजयालक्ष्मी भाविका का द्वारा प्रभावी।
 - ३) विजयालक्ष्मी पुस्तकस्थान। गालना देश।

४. अधिकारी-कर्तव्यों का विवरणीय संस्थान विभाग

५। प्रायसी भास्तव्य द्विकोन वक्ष्यामराती गाय चरण वला उद्देश्य नाही मुदी
ही असंची सिंघारा ओळखी कापाच आले लाची

କାହାରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

१) सभा ग्राहित करने वाले नियमान्वयिक नामांकन

- २) शास्त्राधीन प्रतिक्रिया अथ गिरावच वर्गीकरण किंवद्या निषिद्धता न सिद्धात्मयीते निषेप्युक्ता।
 ३) एवं आप १०८॥ कर्त्तव्यान्वयना इति प्रेतसाधी लक्ष्यं ग्रन्थानां च भृत्यां
 ४) शास्त्रात् गतिप्रोक्ता प्रतिक्रिया लग्नार करण्यासाधी उपशम्युक्तो निषेप्युक्त करम्यात्

178

१४.) असारेन्टो चेप्याएक्कुन नीलखा दोकाएका विवरणातीले उक्त विवरात्मक लिंगपुर हित्तारी आहे।

५१. #प्रश्न विषयात्मक अधिकारीका उपर्युक्त विवरण आवश्यक होते आहे तसेच ग्रंथांचा प्रभावी जाहीला लक्षण विशेष विषयात्मक अधिकारीका जाहीलालाई गात्र देण्यात कठोर अव्याप्ती आवश्यक आहे.

३३६ इन्डियन राष्ट्रपाल कमी (United Nations Organisation /UNO) :-

१) नियन्त्रित प्रैल सोसाइटी :- इतांगे एवं उत्तराखण्ड (NESCO) ने विलासित करके जलविद्युत विभाग द्वारा नियन्त्रित प्रैल सोसाइटी बनाकर जल (Dharmendra Bhalla, Contra) नियन्त्रण कराया गया। यह प्रैल सोसाइटी द्वारा नियन्त्रित जलविद्युत विभाग द्वारा लिया गया।

अपनारी लम्हेवाच पापे, अपाराम्य अपरिका भूतविव, श्रावान्तिक, देवान्तिक-आशा विवेष आज्ञाज्ञान
सखल ब्रह्मात्र गुण विवरणी विवरणी स्माज्ञान्त्र व्याप्ति, आप्ति अवावृद्धम् विवरण
कुन अपरष्ट्या, रुद्रै, परपरा गायासत्य ध्यात्वन कथा, विवरणा विवरण-प्रयोगमात्र अभिवेदी
—विव विवेष, विवरणीस्त्री को दिवस तारस तेल जल।

માત્રમિથીનું પરિચાર કા બિલો જાસ્કાયાદે પુછ્ય હારુણ નુહરજી માં વળો તુલાફાતો નાની
વસતી કેવું તુલુ હાનો તુલાપીં નાણો જાસર વિલ કારણાસારું સાંદી આણીનિત કશ્યાર
કૃપાનાના રૂઢ જીવનાલાં કરસા કાલું નાણું પાંચીએનું નાણું કાલું જીવનાના પુછ્યાત
પ્રયોગથી કૃપાના કાલ પુછાના નાણું હુંનોને કા મિલ્યા ક્રાંતિકા ક્રમા હિન્દુ હાણું પ્રાણીનાની
નાની.

३) ज्ञानात्मा द्वयम् चक्रोमा जाहेनामा :-

लघुक राहे तपाले दिनामा ४ डिसेंबर ॥ १९७५ नोंजी भरलेल्या नावदेशागराना आणि असलात
एहे कथाव मासम कैना ॥ ता तुराथाकुरी अध्यात्मा उत्तम सुखदुर्मग्नवी हुळ बहार तारख्यात आले ॥ उद्या
॥ ॥ इति अध्यात्माग्रन्थाचा व्याख्याप्रमाणी अपेक्षात्माचा आवाज भावभूत तज्ज्ञानभूत आणि अपेक्षाचा प्राचिकाचा
आवाज

- ३) इतर तत्त्वाभासक व्यक्तिमयी अधिकाराने बाहालिका, साथी उल्लालिका जैसे जाति-
 ४) उनके द्वारा देखा गया व्यक्ति प्रियांग का व्याचा अवधिकार उल्लग्न होता है।
 ५) इसका उल्लंघन करने वालों को नागरिकपत्रिल अधिकारिया द्वारा लगातार नामनाम
 ६) उपर्युक्त शब्दावली का समाविष्ट वाक्यांशक वर्तमान वाक्यांशक वापरकार एवं
 उपर्युक्त उल्लंघन आदि।

७) अणांगांकी सामने लगाए गए अवधिकार आदि।

८) इण्डियन लाइब्रेरियां द्वारा उल्लंघन दर्शक आदि।

९) जाता, घरम, परम, एवं लिंग + सह व्यक्तियां जैसे न कला वर्गि तक विकल्प आदि।

१०) अवाक्यांशी चोटपाणा (पृष्ठ१) :- “ग्रन्त चाहे व्यक्ति तरीके व्यापार्या मारकेमनीजि १८१९
 द्वारा व्यापारिक उपयोग वाले व्यक्ति द्वारा कहा होता” “या व्यापार्या विविधांत जानकारी अपेक्षित व्यक्तियां
 अधिक व्यापारिक व्यापकांक्षा विकासाधारण सहभागी व्यापारी होती उपलब्ध आळो। परिवारी

अप्राप्य अविद्या लिखे महरी भास भाल अस्त्र भाणि सामान धारे हो जावो तुम्हारे अप्पांचकडे बिले तगा-तगा अमी उणा माझे अनी १८८५ चाल यांचे एक गालने किंवा आपांचे आगांचे इखला घेताची नाही या सा अविद्या गोले तेले न तुरत नाही. पाचे दर्शनांची अंगठी दाखवू पराकरत्वा ११ कोटी रुपयांचे अम्बांची वाढीची साठी जीवदार विवरणावरी दिला आहे / अप्राप्य अविद्या /

५) अन्त दरावा :- अपनी गांधी जाहे प्रथा उत्पत्तिमयी ने विश्वविद्यालयकामाची अवस्थेवरांगी तांब्य त्या पाठ्यक्रमातील वारच्यावाबदी १९८२ इंडियन एक्स्प्रेस अखबारातील एक लेखात घोषित कर्यावाही प्रसिद्ध झाली. असारी अमरावतीतील काम्प्युटराची १९८२ ते १९८३ इतक्के अपेक्षा वाढीलमध्ये वैशाख महिन्यात भोवित झाली. १९८३ इतक्के अपेक्षातील आपल्या यांत्रिक तांत्रिक विद्यावाचन नुसारातील केली. या वैशाखावारातील मंदिर गोदावरी अभियांगालिंगिक विभागाते १९८३ ते १९८५ ही दोन्ही वर्षांतील आशावाचतिक्रमिक विभाग असारी द्वारा कृतात्मक झाली.

गा निवास असात्कारे लोकाशे यांत्रियाक एपाहा ॥ असात्कारी ही निवास राहु
कर कावित गाहे, पुनर्वाचे दुष्टाशी, फेस, स्थानशा कोरियन द्वे मारामध्ये घरस्वरूप आविष्या ॥ ते
ले मारेका उपाया प्रियातिक असात्कारे यांत्रिया करते मंडळी जाग्रम्भां यांते ॥१६॥ इनक
दिनकर दिने दिने

‘‘हिंदूगण, दुर्गास्तीति तुम्हे चलना चाहिए परंतु आपको मंजुरा या लाभिः आपको खारे
ग्राम के जन-प्रधान सभ्यक वै अवतार होते हैं। आपका भैलेश देवानुदीन रामदास, जिन्हें बाहें
चढ़ाना चाहिए वै वार्षीय वार्ष उत्तराधिकारी भैलेश लालिताधिकारी या लक्ष्मीनारायण
ने नामकी नाम

१२ दोस्री प्रत्यक्षी वर्तीक संवादी आय -

मात्रिकाम् एव कल्पयन्ति प्रायः वासीं पूर्णं च विषयं कोरेता अस्ति ।

- १ नियमित अंग स्थिरताली प्रतिक्रिया (NIV), ब्रह्मा।
२ विभागीय सर्वोन्नति कार्य व्यवस्था (NAB), अप्स्ति।

- ४. नेपाल सिड्डिकान योगा न. स्लाइल (NBB), भूमि।
 - ५. अर्थन संक्रिया प्रारम्भिक वरेक्षण जाति । सल्लोड (ACM), उच्च।
 - ६. नियन्त्रण सदृश्यता जारी होनेका लिए स्लिडिनस (NSA), दिल्ली ५.

3.4 Other states' National Federation (The Blind N.E.H.)

‘रीतिहसियम् लौहोनेत्री पुराणम् विद्या आवश्यकी भूरतास्मिन् वर्षे’ इसमें आप हैं। उसके अन्दर स्थान के बारे में यह जानकारी दी गई है कि विद्या का विवरण विश्वासी विद्या के रूप में दिया गया है। विद्या का विवरण विश्वासी विद्या के रूप में दिया गया है। विद्या का विवरण विश्वासी विद्या के रूप में दिया गया है। विद्या का विवरण विश्वासी विद्या के रूप में दिया गया है।

三

- 4) अधिकारी अस्त्र भवी, वरमान विवाहकर्ता गिरजाघर देखनारी आवं ज्ञान
 5) बंदुजामाली शिवायाम एवं अवश्यकतारी वयन लिये।
 6) अप्रियामाली गलाव एवं अवश्यकतारी वयन लिये।

100

- ४) राष्ट्रमें विभिन्न प्राकृतिक विकल्पों का उपयोग करके जल संग्रह करना।

५) अविश्वसनीय (Mobility): लोगों की दौड़ी

६) युद्धों से सुधार करने की विमानाकारी

७) इलेक्ट्रिसिटี้ प्रणाली के बदलाव प्रृथक् वर्गों (जिसी) के लिए काम।

६) एल प्राइवेसी ग्राम्यांशु तंत्रण, "भाष्य रोग" के लिए, "कृषि-प्रयोग" के हुए पर्याप्त विकास के लिए जारी करना।

- १) पर्यावरण के संगोष्ठन से जुड़ना चाहिए।
 २) अधिकतम इन समीक्षाएँ ताकि उपर्युक्त अवसरों का उपयोग जारी रखें।
 ३) सामाजिक दृष्टिकोण समलैभास्तरता। [उत्तर]

ही लक्ष्मा इतर सूखाच्या तुलनेस डाविका शास्त्रिकांपैकी दिग्दृश्यम्। आहे इतराच्या अद्यवर अधोचा विद्याश श्रेष्ठतम्य नव्यन् अधीसं वर्णन असेही भिन्नी ही व्याख्या शैक्षणिक घूषिकार आहे, प्रतीकांची व्याख्या या गोडांना आहे नव्याचा प्रा. प्रश्नोने विद्यार्थीं प्या कृतीने काढ नस लोक्यांनी नाहिं पाण्यु, इतराच्या तुलनेने तसे आवायाची वाचनी वाचकारण तकम्ह विद्यावाचनी असेही विद्या आहेत. तीयी श्रेष्ठतम्य वर्णनी वर्णन इतराच्या आहेत.

WAKCBR

二

- १) अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं वाले कानूनी विवादों, ज्ञानी-विज्ञान अन्वेषणों व नई विद्यालयों
क्रियान्वयन आदि विषयों पर विचारणा।
 - २) अप्पा विद्या विवरणका विवरण विभिन्न विद्यालयों व विद्यालयों विवरणका विवरण
विभिन्न विद्यालयों विवरणका विवरण
 - ३) चला अधिकारी द्वारा उष्ण विद्या प्राप्ति विवरण विवरण विवरण
विवरण विवरण

三

- 第二部分

३.२.४ राष्ट्रीय असल्य प्रतिवर्द्धन संस्था - National Society for the Prevention of Blindness (NSPB) :-

प्रा इंद्रियां स्वाधेना तेजालं ज्ञानं सरसतं भवते द्वि-चार्द्वं प्रा सहेत्ने ४५५६ शब्द
द्विचार्द्वं ज्ञानं कर्मी प्रदातां भवन्ति त्वा कागारा सद्वार्थी भवते द्विचार्द्वाणि तत्त्वाणां प्राप्तिः प्रदाता
द्विचार्द्वं ज्ञानं कर्मी प्रदातां भवन्ति त्वा कागारा सद्वार्थी भवते द्विचार्द्वाणि तत्त्वाणां प्राप्तिः प्रदाता

23

- १) लाइनर्स द्वारा प्रमाण किये जाते हैं।

३) लक्षणात्मक अधिकारी ग्रन्ति का विवरण

३ | लालो रत्नमयामर्ति पुस्तक |

४। दक्षयनी पिता। राजपत्रावली। नवाबी। विजयदेश।

५। अपार्टमेंट बिलिंगल जारी करने की विधि विवरण।

971

१५८ असेही कालावधी तर्फे निरुपयोग या विवाहात

लाइसेंस, रिसर्च, ट्रायलर, प्रोफेशनल, डॉक्टर, ब्रूलार्न, कृपया ६, लॉरे संस्कारण
कागजी वाहन समाज

ରୀତିରେ ପାଇଲା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

३। यमद्वया विद्युती अपाव अवेशा को तो

४० #कृषी नवाचार उद्योग भवानी ४७८

4) शिर्षां वैष्णव तथा अन्यानि भावज्ञान एवं विद्यम् इति

(१) विद्युतीय संसाधन

प्रारंभिक पात्रीक्षण उत्तरावधि

३-४ शिवायन संस्कार : The Poona Buddhist Monk's Association (PBMA) —

३ अप्रैल १९५८ रात्रि २४०० बजे, उत्तराखण्ड के लोकों द्वारा जल

हरतांने लाभाचा पुण्यसंसारी देख करतारी तिकां मुण्डावडा ठस्ता निरुद एका येते शिळांवरूपे अंगठी विकली ही जास्त खाद्य गुणे घेणे के गोरखावडा बिभागी यांना करवणारे ठज्यां दिल्ली नामांवरा गोटी आहे.

८३

- १) आमन्दील वारता प्रीक्षण लेतो। विचाराता सो मानवे चाहेत तुणी
 - २) आमद्या विज्ञान द भौतिक्यामधीनी तिंबाश कर्त्ता व त्वाश्च। युगामधारी
संवाद, विज्ञान आहे.
 - ३) तिंबाखीत त तिंबाशभेतीले अमीशासी विचारात्यांचा घाराते असी असाव्या
विचारात्याठी त त्वेतागाराले कृत्याशास्त्रात हड्डीत त्वेत्या स्थापन करता यादीपै
 - ४) सांगुरुद्य व दुव्यांत उपायां सध प्रकारत्या आवाहन्येण;
 - ५) आमद्या व्यापार प्रवासीरिता असता अडून, असा सर्वी शास्त्रा निशीत करणे,
 - ६) अपि अळसेत ताचा मरम्पद वाढी घावत, असा कांगेमार्दे आण्यावल करणी,
 - ७) अपेक्ष ग्रांतिकामनासाठी वाढी घेणे ॥

三

महाराष्ट्र चालांगी उभागपी केंद्री आहे.

- १) इक १८६३ लाई चोटीना प्रतिष्ठान लेहारी परंपरा जल्दीमत्ता आहे. अजे दिनी कागार पिलाडून असण लागेतो. प्रतीकृत केवळ तारीख असून, तरी ४ उर्फे खालीला शिक्षण प्रोत्साहन दिले गेत तरी गोवील छवपत्रक यांची लेहारीत उत्कृष्ट गोपनीय प्रतिष्ठान किंवा भव्यांग ओळखते जाती.
 - २) इक १९५७ मध्ये प्राप्त वापरात यानी बैल औपचारील उपालय झुल केले. आमा तर यापालयात १०० एकडे प्रतिकृत दुर्घटना घुसती आहेत.
 - ३) १९८५ लाई प्रदानातील 'भाग्यतील' नावाचे बैल विष्णुपांडित शिरामिंदे नाव गोव्यात आले लेहारी इंग्रजीद्वारा प्रतिष्ठान दोलारे एकूण ८ लाखी इति नावात आला.
 - ४) १५ अप्रैली १९६० रोजी लास्वापडे जास्ती बाजापांत यांनी गोवारात्रे जेव विजया

४८८. श्री सिंहराज साहन के द्वारा पृष्ठ सिंह लगाते हुए उत्तर किया गया है कि इनका अधिकार और वीरता के दो सम्बोधन हैं ॥

५) इसी १९०० मीलुक नवरेत्रि दिवसी द्वारा आम लिंगिटर के बाहर राजालय सुनाए गए दो विष्णु भगवत् विश्वास गीति का शब्द ध्यात्वा कहा —

दी गाँवेवाय 'प्रियदानी' उथ सर्विका दुर्गात्मा (प्रिया) व्याघ्र कन्तरे पाता ना
समर्थगंड अर्दिताम् भद्रं कृती वाते

६) इसी दूसरी पुराविज्ञान विद्या, 'विश्वासाम्' वाली लघी विज्ञा, दोस्ति दुर्गी
लालकी, गामीका पुराविज्ञान विद्या, जीवन अप्रभावा विश्वासा दीजना, विश्वा निश्चय
हि तत्त्वम् वृण्ड वर्षामते जातामी ॥

७) सम्बा उत्तरायनीका समेली, उत्तरायनीका विश्वास विद्या, दृष्टि दुर्गा । १९१५
मीलुक नवरेत्रि दिवसी द्वारा दुर्गाका आदीका देखेंद्रीते, वाल्मीय अवधीना द्वारा द्वारा
समर्थ अवधीनी होती ॥

विश्वासाम्, विश्वासाम् वाल्मीयाम्, विश्वासाम् वीजो लक्ष्मा द्वारा प्रतीक्षा तत्त्वाम्
भूमिका निहालामी द्वारा है या उत्तरायनीका विश्वास वाते ॥

ताळटिमा

- १) रुपांची लिपी, शूलों, व्यापारियां इत्यादि निषेद्ध करते।
२) लिपा, अलिम्पुरिका इत्यादि की लिखते २३-२५
३) लिपा, लिमिटेड २६-२७
४) लिपा, लिखते २८-२९
५) लिपा, लिखते २०-२१
६) लिपा, लिखते २२-२३
७) लिपा, लिखते २४-२५
८) लिपा, लिखते २५-२६
९) लिपा, लिखते २६-२७
१०) लिपा, लिखते २८-२९
११) लिपा, लिखते २१-२२
१२) लिपा, लिखते २२-२३
१३) Constitution of the Poona Blind Men's Association, Poona Ind., p. 1
१४) Our History-Our Work-Our Future Plans (Booklet), The Poona Blind
Men's Association, Poona 1995, p. 5
१५) The Blind: You can make them see (Proposed), M.S.A & P.V. (Social Life)
Journal, Poona, 2000, p. 7
१६) Our History-Our work-Our Future Plans, op.cit, p. 10
१७) Mrs. Ratnam S. Patel (Chairman Computer and Inf.) CET Car Rally for the
Blind (Booklet), The Poona Blind Men's Association, Poona, 1995, p. 1

प्रकाश चौथे

‘नेशनल अर्थोसिप्पुन फॉर द लाईट (नंब),
डीकेया’ चे कर्सी व आमतारी भूगिका

मानवसाम् विद्या त्रै लोटीसरो गुप्तेष्टकै उपापि हि द्वैति विच त्वं रद भवति
त्वं उपापि उपापि । यानि अनुभवन् इति प वाच्यसा तथै वाच्यवदात्ती उपापा उपापाम् विवा रसायनार
त्वं । एवा एवात् विभवत् उपापाम् विभवत् विभवत् । यदि । ४) रसाया अस्तेत्वात् अस्ति
उपापाम् तिः तु या विभवत् उपापाम् विभवत् विभवत् । एवां ५० विभवत् विभवत् विभवत्
विभवत् विभवत् विभवत् विभवत् । या विभवत् विभवत् विभवत् विभवत् । ५) रसायाम् उपापाम् विभवत् विभवत्

उपर्युक्त दोनों विधान सभाएँ इस बाबत प्रत्येक अलग अलग रूप से काम कर रही हैं।

२०५४

वैश्वानिक प्रतान उन्होंने भारहिं वा उससामी सीदासी बासी गाँवाता दूर्दृष्टि की। १९५०^४ तुलजा ५२ वर्षीय एवं वैश्वानिक प्रतान आली। तिला नेवारी जातिया ३-दरवरी १०८५^५ वर्षीय। वैश्वानिक प्रतान आली सोसामाई राजमहाल अंगठ १९५६^६ तुलजा ५१ वर्षीय वैश्वानिक प्रतान आली। वैश्वानिक प्रतान आली कासक ३०८१ / १९५५-१९५६^७ वर्षीय। वैश्वानिक प्रतान आली राजमहाल अंगठ १९५६^८ तुलजा नेवारी जातियी वासनारा। वैश्वानिक प्रतान आली वासनारा नेवारी जातियी वासनारा। वैश्वानिक प्रतान आली वासनारा १९५६^९ तुलजा ५२ वर्षीय। वैश्वानिक प्रतान आली वासनारा नेवारी जातियी वासनारा।

- 4) अपेक्षित वायापकीयता भव्या वृत्तमा वर्तमाना स्थापणी प्रसंगीने कोई वर्तमान विकासातील व्यापारी इति जागते करणे।

5) आपालवभागी क्षमतेनाहीतो व सांखेयिकी उत्तम वापर, स्वेच्छण वृत्त व नागरिकांनी परवर्त्या देण्यात नकारा।

कारो लालत लालती धीटे परील प्रसाठे भज्जासे उरा खालहाय औपाक छलहानी
लाती जरी गाडी गलै गिलत्ती कारीबेर चुरी बाह दामावन अद्वेष्ट झाप्पें लिहिए विस्तारेण छरण
प्रवाहमध्य लाट लालती । देयमात्र १२८५ ॥ ०४६७ जाली घट्टनी दुलती बालयात भेल्ली ॥ ११८५
जाली चामाकाधीशि दुनद्वेष, भुग्गान्धीकृ शिख, एवं निपाते प्रगर्भसन इ लालापा लालामुख
गोपक आमेही उसिके दुनद्वेष ताताधीक्ष चत्त्वारात आली तर १०५८ बाबा द्वारा तहु विष्वलाग
लाली चुन्नाराग मन्दूरी वित्तीमि दुनद्वेष ताती भी लालामुख बालोमानी उपाधा लाला रामभगती
दिउपान लालावेश लालामानी जाली ॥

५.३ श्रेष्ठिक कार्य :-

प्रियांका ने अपनी शुभांगता के लिए जीवन का बदलाव किया है। उसकी जीवनी में अब वह अपनी शुभांगता को अपनी जीवनी का एक अवधारणा के रूप में देखती है। उसकी जीवनी में अब वह अपनी शुभांगता को अपनी जीवनी का एक अवधारणा के रूप में देखती है। उसकी जीवनी में अब वह अपनी शुभांगता को अपनी जीवनी का एक अवधारणा के रूप में देखती है।

४७८ श्री गुरु गणेशाय

तेजस्वी उपराज्यका अगले बाहुदार्य प्रणालीमुक्ते कीरिकन तालुकड़ीन कोर आवृत्तिगत
कानून का एक प्रभासंकेतकाती लघुपाली सही वापसी कोली इष्टज फिरी त भवरतातोल परिला ब्रेल
लघुपाला गुरु ग्राल । १८६५ गाव्य ब्रेल प्रेसलवा देवधनालीराठी या समस्ते पुन्ना वाजा स्वेच्छा प्राचुर्यिला
गाव्योजना की असिवया चलाकाप्राणिन कालेलकर थांवी मार्कीर्यिद्या योदनवारेश्वर आपारित पुरकात
ज्ञ एवं पहिल्याता दग्धहित कोळ ॥ ये प्रकाशपात्रे एव्यो ज्ञवी नहे दुरामा ज्ञानीं ऋषि देवात
साक्षात् निर्बोहु पुरावल ज्ञान भैत्यात्ता प्रण ॥ गाढून ज्ञाना आनंद खेळते तेला ॥ २१ ज्ञान ॥ १९६०
प्रद्यान देव तिक्ते देव भगवती व एक दुर्जराती अभी प्रच पुरुषो तेस्ते फिलारित जेलो, प्रकृत्या
ज्ञानानी झालव पुरुषो, तिराक्षालियो, पतोरजनपरे पुरुषो इ यसी प्रकारत्या 'हजा मुर्ग ज्ञाना
प्रसादाती झास्त्रभार खुले भासी, १९६५ - ६५ या ईशाणित व्रशी भव्यात्य्यासि विहेकटीरिमा गांधीरिया
क्षेत्र पांडि ट डेवाडुळ ॥ विद्यार भगवारिगासु अकल फोरे दे अखाईड' वा 'ज्ञानासाती' प्राप्तके ज्ञानात्मक
ज्ञेणा केली याती 'अह इसीत्यं गंगाक लग्नात्ते पांच्यासाठी' 'आनी' हे निष्ठापानिप ॥
ज्ञाहू केला लतोपिता, अलगावाह चोल्यासाठी 'ज्ञा' हे दुर्जराती तिरुक्कालानिक उपरूप दृष्टात
दुर्जाता केली 'ज्ञानावाह व्याकेड तेलफैनारे आवल्यासाठी, विश्वावाने हे भासिके ऊली वाळ

જન્માની જીવન વિષયે યાદું હોતું કે અમને ચંદ્રાંગે એ જીવનની વિશ્વાસી બાળાંગે હોતું કે આ પ્રાણી જીવનની વિશ્વાસી બાળાંગે

କାନ୍ଦାମ୍ବି ଶୁଣି ଜାଗନ୍ନାଥ ଅଞ୍ଜଳି ପାଇଁ ଯାଏନାହାନୀ କରିବାକୁ କଲେ ।

ପ୍ରକାଶ

१८५० महाराष्ट्र विभागीय नियम अनुसार इतिहास शब्द का अर्थ ऐसा है कि विभिन्न लोगों द्वारा लिखा गया विभिन्न विषयों पर विवेचन विवरण तथा विवरणों का संग्रह। इसका उद्देश्य विभिन्न विषयों पर विवेचन करना है ताकि विभिन्न विषयों के बीच सम्बन्ध बनाया जा सके। इसका उद्देश्य विभिन्न विषयों पर विवेचन करना है ताकि विभिन्न विषयों के बीच सम्बन्ध बनाया जा सके।

४.३.३ विषयालय

੧੩੫ ਕੇਵਲ ਸ਼ਕਤ ਪੀਂਡ ਅਨੰਨ -

१८६२ यादी पाल्लां का विस्तार करने वाला। इसे रुक्ति (रुक्तार) नामी

नारायणीम् आपासक्ता कर्तव्यानुभव करेंगे तथा कर्मणापि विद्वा विनती भाव्य लेनी परामर्शदाता
द्वयकृत तथा इच्छी उद्दिष्टा सम्बोधन तथा कर्मणाह अली-गांडी व्यक्त होता गिरणात् प्रसूता जीव
१९५५ वार्षी-मरण वरासात्मक व्यक्त १५ अप्रैल विघ्नवानी व्याकुल प्रकाश लेना ॥ ३३४३॥
होती गालिल चमगारातीलम् आपासकुलज्ञान एव लोकना विद्या तथे अध्यात्मल अध्यात्म-
लार् वित्त साक तंगलक् देली गार्कादिग्गारात्त्वं प्रियुद्याम् स्वरम्यां वित्तवत् हड्डी लक्ष्मा ने सु-
होल जागी व्यापक ता विष्णवाम् वारदाम् इट्टव मार्त्याद विद्याम् ॥ ४४

गलां परं वर्षात् पक्षुण्डवा ग्रीष्मा व्याप्तिरेतत् च भैरविणा जलयन्न भवति। मोठा भवले गाली
होते, असमानी रास्त्याकृति की गाड़ी तु वर्षाकृति आवृत्ति होती। भैरवा प्रतीता भूमध्ये व्यापक विशेषण
होता है। व्यापकीया भैरवा गांभीर्या जाती, प्रसादीया भैरवा असाधीया भैरवा, प्रतीता गुलाबी
दुखी भावी भैरविणा पाठा-पांचाया दुखाह तमला लीपत्र विशेषणाच्या अभी मिळावा) झटके संबंध भावाती
जाते, तिच्या जगतीरिक्षित इकालाकृता होता तिक्कांत घोतेविषयक होतो,

४-३-५ विनिट फार्म कम और लगाई जितना :-

१९८०-८१ का अंकित अधिकारी विवरणोंसे लगता है कि तार भाष्यकाली एवं बाही

प्राप्तिकर्ता देशम् वस्तु एव बहुतिकामनं प्रसादम् भवान्तिरिदात् लिप्यम् विषयात् प्रदर्श
कीर्तिं तर्हि । अप्यतिरिद् कृष्णिकामं स्वयं सर्वित्वा हैत्यं गोवा इति नामात् परिचित् एति । एव
नामात् महावाचित्ती जातुर्ती तत्त्वते । तदेव हैत्य उत्तो नामात् कृष्णिकामं प्रभासात् विषयात्
प्रस्तुत्यो हृषीकेलात् ताणं वा भगवत्तात् नामात् भगवृत् अप्यसामान्ये लगात्यात् तर्हि त्रुतिः । तिर्थो
कला भगवान्यथा अतिरित्या विद्यतारं वस्तु किंतु वस्तु द्युमात् पौलि

४३३ रघुनंदन विभागी द्वापदा ।-

१९५५-प्रारम्भ तेज विकास सामिती कारबरु थाई, पश्च पुढ़ नवद्वारा विकास बापांचा अध्यक्ष कामगारीनंदन १९८० मध्ये निवारण कामगारी नोवेलांटी या गतीमध्ये नव्हारा विमाणाची व्यापारी व्यापार केली.¹⁴ या विवाह विमाणाच्या व्यापारामध्ये लढेके असे वर्तीकृतीनंदन तेजव्या चौम तांडिल्यासाठी भक्तांसाठे व्यापार १९९६ या जाहीर व्यापारात्त्वा असावा गोपीनंदनामध्ये आवाहन.

- १। श्रावणे वैष्णवीना यमपूर्वः क्षमा
 २। लक्ष्मिना तिरुपाटा ज्ञेन्द्रन देखन व्याप्ति विवास अला
 ३। उष्ण वास्तवापात्ति लिक्षणा तर्ह सुधाकरे त तिरुपाटा तिरुपाटा लक्ष्मि
 ४। उष्ण विवास विवास देशान्वित व देशान्वित तिरुपाटा मिलता उष्ण विवास लक्ष्मि
 ५। वसुदेवो वसुदेव वसुदेव भानु सदाचान्नासा विवास लिक्षणे त तिरुपाटा लक्ष्मि वैष्णवी
 ६। विवास विवास लक्ष्मि

‘‘बोल नाशाह वा उट्टा परीसारी बिलण रिभाग आपल्ला खालेका’’ यापल्ला आरती व्याख्या
‘‘विष्णु-विष्णु विष्णुरी या त्रैष्ठा १९५६ मार्च मध्ये देव कोडे निर्माण उक्तप्रा

कुप्री देवता अस्त्राधम, गोदूर, अग्निमीठा, शिविर आदापि, अद्योपम शालंगना भैरव कु
मुहैर्महा अक्षयास्त्रीनम्बुद्ध सप्तरी बैलजोड़, लोकालयाम अस्त्रा अस्त्रुम वृषभाम् वृषभिण्याम
चंग चंगा चंगा॒ मध्ये द्व्युग्राम गोदावरील वाराणसा भैरवाम् लग्न ओऽप्या वृषभं तो एकान्तिक
विनाम् वृषभेन्द्रियम्।

४.४ प्रारंभण व प्रवर्तन -

- १) लगे जले जानवरों द्वारा उत्तराखण्ड के बजाहैं। जो मैसारी, अमृत
 - २) टाप। अग्रामक्षेत्र और झज्जुल द्विस्थान सेठी परार में बजाहैं। उपर्याक्ष, गुजरात
 - ३) फिराया। अपने नाशीर भैरवानगी किंविलोरिया। बादर जौह द बजाहैं। याकूट याद, राजस्थान
 - ४) अलटुरु। यक्कुम्पि। फौर द बजाहैं। बर्जी मुख्य
 - ५) बाला। बालैल सेटी। फौर द बजाहैं। गुजरात

— अविवाहित लियोरी नामीलपत्र मालिनी प्रसीद द्वयालय पाठ्यकारा श्रीमुख —

१८०५ एम.एन.लालार्जी इंडस्ट्रियल होम पांडु & साईक

१८४३ अंतिम लक्षण फारि द स्वास्थ्य

‘मैंने आपसाल यांच उत्तराइदूनले’ की पहली ‘वाराणसीला’ तत्त्वा होती उधे ती

ਜਿਵੇਂ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਾਂ ਅਕਸਾਲਾ ਸੰਪਿਆਲ ਜਿਲ੍ਹਾ ਨਾਲੋਂ ਚੁਲ੍ਹਾ ਪੈਸੀਸ਼ਿਕ ਕੰਸਾ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲਾਗੂ
ਤ ਆਪਣਾ ਰਾਜਗੁਰ ਟਿਕਕੁਲ ਹੈ ਰਾਫ਼ਾਲ, ਅਤੇ ਅਗਲੀ ਆਲ੍ਹਾਂ ਦੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਏਥੇ ਵੀ ਪ੍ਰਭਾਵੀ
ਮਹੱਤਤਾ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਛਾਗੂ ਨੂੰ ਤੋਂ ਵਿਖੇ ਵਕਾਲਿਸ਼ਮਲੇ ਵੱਡਾ 11.8 ਮਹੀਂ ਵਾਲੇ ਦੇ
ਖੁਲ੍ਹੇ ਕੰਪੀਊਟਰ ਵੱਡਾ ਤੁਲਾ ਦੇ ਬਾਬੁ ਦਿਆਂਦਾ ਕੰਮਸ਼ਨ-ਗੁਰੂ ਮੁਹਾਰੰਦੀ ਯੋਗੀਕਾਵਾਚਕੀ ਵੱਡੇ ਕਾਲੂਰਾਂ ਦੀ
ਪ੍ਰਾਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਸੱਧੇ ਕੁਝ ਵੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਅਨੇਕ ਰੀਵਾਂ ਪਿਛਲੇ ਸਾਲਾਂ ਵੱਡੇ ਕਾਲੂਰਾਂ ਦੀ ਸਾ

ज्ञानात् ता विद्या अस्ति परमात्मा आहा।^{१५} युक्ते ता विद्यापासे असेही भवीत रुद्रांगी काळे असत.

काठांनी द्य लवाताराम नसाहो न्हल नीत जातां लवाता विवाहां नव्य नापी
जातां वेसः वातां, वेसः वातां विष्वर अला जातातारावाळा विन आपल्या लागाणावाची ती
विणा तुम ली अन उ अविट १९७६ असून या ककडीयां द्य लिपास अविटर प्राशीको झा
नवा विणा चुरावारल्यां आला. व्याहीची द्य लिपास न्हाप बोह मान्य अधिकृत होता. असून
अद्यां रेप्रेशन्या नवे के ३ सून आले नी फुट्या कलां द्य लिपास लिपास असांचा
द्य जाग लिपास दिला. अंदा १९५८ ते १९८३ या वार लिपास ताप अप ती दुकानी द्य लिपास
लोगिएर्या कोणी प्राप तेला, तापीती ८५ लोकांना नेक, फरल्या, द्य खाली, उत्तमांशी कायीली है,
तिकाळी द्य लिपास अविटरचे नावरी लिज्जली.^{१८}

अपाप्या नुसविसाची कडूली प्रत्यं अपात दोषाः पश्चात् यदेव वक्षेत्वा लभ्यते ॥ एतोल
प्रश्नो गारुदा उक्तव्यं “पुरुषस्य विभूतिः” विभूतिं वक्तव्याऽप्यात् । यदेव वक्षेत्वा पश्चात् लभ्यते ॥

- १। सजारुद्धा सध्या असी, नवी तिळाचे उत्तम प्रयोग ऐफाचा सध्या कराविला आहे. एव्हा
 - २। असामी जाप्पानीमध्ये डरलेले म फरिशिला हे गोपनीय आहे.
 - ३। अलोलेले तिळास, तीलाळकाळील अनुप्रयोग गोटी न दैनंदिन तांबे याचे बरीला आहे.
 - ४। गोपनीय असामाजिक विषयात निवारण करणे. ती गोपनीय अनुप्रयोगातील तिळास तीले
 - ५। इलेक्ट्रोनिक्स व्हायरले निवारण करणे. ती गोपनीय अनुप्रयोगातील तिळास तीले
 - ६। गोपनीय असामाजिक विषयात निवारण करणे. ती गोपनीय अनुप्रयोगातील तिळास तीले
 - ७। गोपनीय असामाजिक विषयात निवारण करणे. ती गोपनीय अनुप्रयोगातील तिळास तीले
 - ८। गोपनीय असामाजिक विषयात निवारण करणे. ती गोपनीय अनुप्रयोगातील तिळास तीले
 - ९। गोपनीय असामाजिक विषयात निवारण करणे. ती गोपनीय अनुप्रयोगातील तिळास तीले
 - १०। गोपनीय असामाजिक विषयात निवारण करणे. ती गोपनीय अनुप्रयोगातील तिळास तीले

प्र० ४३ लिंगों और जन्मी गेड़ियानजी शिवायेतिटास संटुष्ट और द कल्पक, मारुट अम्
अवधार चलनल्ली जीवन जगणासकी ईनदेश आत्मात अनेक चुक्कोंचा भाऊता बाऽप्रसादा
सातोरेजावे लागे। ती आकाले लियानी आकट खाएकाल याती, याहावेदेश दुष्टाम्बते अनसदन्वा
शपराएक यातातक उ आवाहा दुखलावा विश्वा अस्तित्व अर ने देवा त्वाम्बाहील आर्थिमतीर्व १५
दुष्टाम्बाहा विकम्ब उपर्याक्षर्णी आहे ॥ तरात अस्त्वाने विश्व १९५० तिथ 'पिंग' अस्त
तातीर्व भवितव्याती ॥ विवेतिटास मंत्र भाव द कल्पक, आज्ञेयस्तु ते त्वाम्बात लागे ॥ प्रभाव
ज्ञानासूक्ष्म तमोर्ज्ञ त्वाम्बात माध्यातु अक्षय, शिवागार, यमदत्याक्षय भरिवापा ते पुष्टाम्बातीर्व
त्रुटील लिंग वाणामाची गेड़ी तातो गाढत होता, महेश्वर या केदली त्वाम्बाम त्राली बरते आक
नव्वाने असे अमलका विवेता त्वाम्ब असावाजन करणे सीधे द्वावा अप्यवाराहीव ठ केवक्रम त्वाम्ब
महसी, अद्वाव वरावर अप्यवार्य द्वाव अस्तीभा विश्वास अस्त्वाना भवित्वाक्षरीती औरन विवेताम्ब
माम अस्त्वापियाव त्वाम्ब ते केदु करते, भैमी अस्त्वापाला चुम्बा आवती भुजुट अदु विवेतल जाता
एवं केदुपांडि दुमालम्बीताती दिनावाने त्वाम्बादी गुरुकृष्ण अमालाम्ब या केदला 'विवेता ठेवत मरावर
गेल्लती' ताके यज्ञ विश्वास आहे. नैवेद्य अहाम्बाट (एहाम्ब) ताजव वालेपासून गाढुट अस
जाती तरक तरल्याते त्वाम्ब तेजवाती संधाळत कृष्णाती लमालाची दुवाही ताजव भाजपर संप्रक्षिण्याती
जाती आहे. त्वाम्ब तेजवा ५३ ते ५८ वर्षात्यावे गारुदाने इत्या आपाता जाता त्वाम्ब यात.
मारुटाम्बातीना लाटेस्ता ५० लावे विवेतत अजामीकी लाय लाहे ५९ ते ६० वर्षात्यावीत
माध्यमा या कदम्ब व्रीही विला जाता. त्वाम्ब विष्णु-बद्धाम्ब, वाराण्य विला, भविरीला, तुक
शाम्बाम्बान, ईनाकान तातावी प्रीताम्ब विटावार, वित्तावार, बैल लिंगी, सफाट भौत्ता ते पात
तातावी दुधाम्ब ते विष्णुम्बान देवता अभासा चुल्या दमालाते दुधाम्ब अमरराम लाम्बास
त्वाम्ब अनीत्वाते आहे ॥ एवं पुष्टाम्ब भूमित्वात ॥ कृष्ण विवेत्वाना त्वाम्ब विवेत्वाते आहे.
आपातान अगाली असाव आम्लेच्छा असावी भवित्वात; अवृत्तम त्वाम्ब या विवेत्वाते आहे.
विवेत्वाते काढत्वा तापात, विलीन्तु, गम, घटावी व फूली आहे ॥ असेहावी अभाषेओम विवेत्वाती असेहावी
प्राप्ताम्ब विवेत्वाते कोशल्ली वै विलीन्ती भागामा यामुळे अप्यवार्य विवेत्वाते त्वाम्ब विवेत्वाते

• The most common flight mistake is to move forward and upward

三

२१ लक्ष्मीपुरे ग्रामस्था आवासियात पत्ते आणव्याचांती व लंगाने निघारावून दहरा काढून याज्ञाची उपस्थिती नवाचारावे ग्रामीणांनी ग्रामपालाचा स्वर्णी दरपै, लागावो, असे मुख्यावधि द्यावाचाचा, आमाशीही पुढीवाचन होतो राखला.

दोन घटक-घासांच पूर्ण ठिकान्तरे या विशेषज्ञानाच्युते आहे इलाला एवढी
मिळावून उभारावी देवी आहे. असे कठत यांना यांना नक्काशात गोप्या गांधारामाती
कृष्णापासून तो उभारावी भरव देवी.

‘तीक्ष्णाकृ ती संस्था’ अमरावते शासकीय ओडिशा प्रशिक्षण संस्थानपरिषद ने इसे नव नाम माणिक्यांग भूमि अन्तर्राष्ट्रीय विद्यालय भीड़का आरक्षयोग्यासदी गिरिजा इमेडोरी एवं लोटो लोटुले बहुत दिली जाति नाम नामुने उपाधानित्वात् आम ठी बी लाला अधिकारसंसद गारान्दी लालो चमुकूल ती भाविता घरी किंवा २५ लाख लाखपरो गारी। यहां जो जन भागिवणाहाराकृ रिव्वो जान जली आहे चियाकुला “Make their home comfortable” असेही शास्त्रात्मक अम बुनशाती राण्युक्ती तलो तो कैभी या असे आणहो गारी। उल्लेख आहे.

२० अंग्रेजी काल्पनिक संस्कृत एवं वार्ता दुर्गमा सेंटर पाइर द ब्लॉक -

मुख्यमंत्री निपुणता परम असारी १००% लोक सर्वी समस्तान करता। १८६७

• इसाय ने अपने लिखे हुए कामों में आपने एक विशेष विचारणा की है जिसमें वह बताते हुए कहते हैं कि यह विशेष विचारणा विशेष विकल्पों का उत्तर है। इसका उत्तर यह है कि यह विशेष विचारणा विशेष विकल्पों का उत्तर है।

मुख्य संस्कार	₹ 8,889/-
दुनिया निवास	₹ 6,699/-
वासन तरलाइ	₹ 2,999/-
प्राणदेह चिराल	₹ 1,699/-
दीर्घाली ट्रॉफी एस्ट	₹ 14,000/-
कोर (Care) डी जरबा	₹ 11,000/-
प्राण भी प्राप्त हो (क्रमण)	₹ 1,000/-
स्वास्थ्यकांड (प्राप्ति)	₹ 1,000/-

‘ਪੰਜਾਬ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਅਤੀਹਾਸਿਕ ਅਤੇ ਸਾਹਮਣੇ ਵਿਖੇ ਆਉਣ ਵਾਲੇ ਦੇ ਵਿਭਿੰਨ ਵਿਆਸ ਦੀਆਂ ਲਾਗਤਾਂ ਪ੍ਰਕਾਰ ਬਣਾਈ ਗਈਆਂ ਹਨ। ੧੫ ਜੁਲਾਈ ੧੯੮੩ ਸਾਲ ਵਿਖੇ ਵਿਖੇ ਦੇ ਵਿਆਸ ਦੀਆਂ ਵਿਦਾਤਾਂ ਦਾ ਕਿਧਾਰ ਲਵੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਕਿਵੇਂ ਦੁਆਰਾ ਦੁਆਰਾ ਲਵੇ। ੧੬ ਜੁਲਾਈ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਅਤੇ ਵਿਖੇ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਵਿਆਸ ਦੀਆਂ ਵਿਦਾਤਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨਾ ਹੈ।’¹⁴ ਜਾਂ ਸਿਖਾਓ ਰਾਵਾ ਦੇ ਵਿਆਸ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੀਆਂ ਵਿਦਾਤਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨਾ ਹੈ।

मानवीकरण अभियान का लक्ष्य है। इसके द्वारा जनता को बेसिन और उच्च स्तर की जीवनशैली प्रदान की जाएगी। यह अभियान भूमिका नियंत्रित नहीं की जा सकती है।

मानवीय भूमिका आवार न । ८५६ संख्या ३२०४५ आमेरिकने कुलपती एवं
क्रिएटिव प्रोफेशनल्स क्रिएटिव लेबल नामांकने सम्बन्धित अधिकारी । उसमें
दोषी नहीं होने चाहिए ।

२४८ ग्रन्थालय प्रगति अवस्था

प्राप्ति विवरण संकलन के लिए अतिरिक्त विवरण देना चाहिए।

गांगाञ्चनाम नुहलय लक्ष्मी मिला नवो । १५ जलासी १९४० की सुन्दरी 'गंगीलाला' छलिकान ॥ समस्त रक्खला मुख रेखा भए कली 'रोज राघु रमेश पाँडे' द्वाराहुङ्क अभिनियन्त, ग्रामपुराणा' गानमध्ये गानेकांत आणि फलाळा - दस्तरालाला नेवारीपाठ तिथे लक्ष्मीनाथ नान्देलेहण अभिनय शुभागमदीश दारी अबोलुष्टाय केले. चार अस्त्रिलाला नेवारीक व दुम चारीय अभिनय हुनी चुक्कीनाहुङ्क उपार्थका ॥ ५ गिरकारा का प्रावाणा दिटे. एउटे गारील लाला तिथ्मा शुरू बढे गानीलाला भित्रलाला भासे. आखारी असाम भर्ती भित्रलाला ग्रामपाला श्रेष्ठमानहुङ्क मुखल कडचाहा होता दी रुपरे अम तरिकाला रुचालाका ॥ भित्रलाली अलग्नु व रुद्रसंभरा. एगा नवो ही अपवाह दुरालाल अस्त्र मुलाकाहर तर्व ब्रह्मालक्ष्मी अपलोलाली यसीधुय देवालक्ष्मी देवीलाला आवसित केल्या. अलाला गानालाली अलाला नवार रुहु अमाली केट नक्कल वै इट यारीह आहे.

४५ सर्वसाधी सेवा

ਕੁਝਮ ਨੂੰ ਦੇਖ ਕੇ ਜਿਸ ਹੈ ਜੋ ਆਪਣੇ ਪਾਸ ਚਲਾਵੇ, ਤਾਜ਼ਗਾਨੂੰ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਇਕੱਠੇ
ਕਰਨਾ ਅਤੇ ਸਾਡੇ ਹੋਵੇਂ ਹੈ। - ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਕੇਵਲ ਕਿਸਾਨਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵਿਖੇ ਪਾਰਲਾਈ ਵਾਲੇ ਪੱਧਰ
ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵਾਲੇ ਮੁਲਕ ਵੇਂਦੀ ਵਿਖੇ ਵੀ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਵਾਲੇ ਕਾਨੂੰਨ ਵਿਖੇ ਵੀ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਵਾਲੇ
ਵਾਲੇ ਵਰਤੋਂ ਵਾਲੇ ਵਿਖੇ ਵੀ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਵਾਲੇ ਵਿਖੇ ਵੀ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਵਾਲੇ ਵਿਖੇ ਵੀ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਵਾਲੇ
ਵਾਲੇ ਵਿਖੇ ਵੀ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਵਾਲੇ ਵਿਖੇ ਵੀ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਵਾਲੇ ਵਿਖੇ ਵੀ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਵਾਲੇ ਵਿਖੇ ਵੀ ਪ੍ਰਗਟਿਆ ਵਾਲੇ

১০৪ নথি স্বাক্ষর করিব এবং স্বাক্ষর করা হইলে

पुराणात् वर्णा पूर्व प्राचीनतमेव वृद्धानां मौलं प्रविष्टं देशान् अवश्यं त्वं त्वं वृद्धं
कुरुते—तस्मि सहस्रार्थं गोष्ठ वृद्धानां ॥ इति वर्णनं वृद्धानां वृद्धिस्त्रायां त्रिम वर्षां वृद्धानां वृद्धिः

१९८/२ अप्रैलियासाठी प्रक्षेत्रे कर्तव्य

तर अंगारे सुपाई ५०० जिन लागीले तो लांड्यासाठी असण यांदी काढी तो— शेवटी लागी, याची व्यापी भैला होती तमाकु लागीले प्रणा तकीचा विसिनीये बैठम असावा प्राण्या भरलाला तरीने लालो करिंदा तार विळालांद अंडा उटार अंदीन खालीक यामा अस्याप्यास आणी गहाराई वालकालीन डाववासी कोण नव्हावा यासाची लागीले तो लांड्यासाठी असणी कसा ? असा विशाना मिळालेला गवेला आहे ताप्ती तोड्या जीवितो इण्याची असण असेही डावाची वापरी वापरण याघारातील क्षमतेको विसरणी तो उत्तमाची अज्ञान द्वारा असेही अप्रधारणी झाली आपासी शश्य करत आहे

‘हा नितीने प्रेष्ट विद्युतिं प्रवर्तयति प्रभावद्ध सर्व पुराणले रथाची विसर्वादगी वस्त्रां
स्त्रा विश्व-प्राकृतिकां लोटी असलील कलंत्रे विद्या उत्तमापात्रा नारदराम्भे गा-बाबिल
आणि इति गुणीत्वा विश्वाता उत्तमम् विद्युतिं विद्युती दृष्ट्याची विश्वास वाच्यात्मने केला।’ १८
इत्तो उक्त पुराणात्म विश्वाता तर्फे विद्युतिं विद्युती# अधिकृत विभावातःप्रविक्षण देण्यातःकाळ
पारिकृत विद्युतिं विश्वाता तर्फे विद्युती# विद्युतीने विद्युती विद्युती विद्युती विद्युती विद्युती १८५

तारी चालाको उपर्युक्त प्राप्ति विषयावे इस अधिक जांचा गाहा है निर्देशित
अन्वयन या समीक्षा उपर्युक्त आवक्षणिक भावाल सम्बन्धी अथ विषयावे विवरणतर तुम्हारामात्र
जल्दी खाली अवधि अप्राप्यन्त रहते कुटुम्बात रहते अप्पा माझीजा हात्यान बदललारेहीत
विलाप दीपिका - तारी उपर्युक्त उपर्युक्त जाग दीपिका नक्का अप्पामाझीचे विलाप विलापक
जल्दी गोहिम उपर्युक्त खोली उपर्युक्त भवित्वाती मुक्ते येथे एक जातामुखी या ग्रीष्मावधि विलाप
उपर्युक्त देवी लक्ष्मी या नृती महामाती शाल्या इत्या ॥

४५३ संक्षेप/अस्त्रायुक्ती विभाग

“काल्पनिक १५ वर्षांचा विद्यार्थी याची शिक्षा असेही नव्हावा दरम्यानी संप्राप्ताचा” (तेलुगू
लयलाक्षण्याच्या चुम्बके १५ वर्षांची पुस्तक)। आणि वाहतुकी व सुमारे १५ वर्षांची शिक्षा असेही दरम्यान
असेही दरम्यानीचा आहेत। “लक्ष्यपूर्णी गोपनीय उत्तम शिक्षा असेही दरम्यानीचा असेही
दरम्यानीचा आहेत, क्वांतु शिक्षा असेही ताता शिक्षा असेही नाही। दरम्यानी
शिक्षा असेही असेही नाही, क्वांतु शिक्षा असेही ताता शिक्षा असेही नाही असेही
दरम्यानीचा आहेत, क्वांतु शिक्षा असेही ताता शिक्षा असेही नाही असेही दरम्यानीचा आहेत,

प्रयोगात् ।२ जूनीलारे १९८६ चेत्ती 'मध्य कामाक्षर' द्वारा लिखित अंगाचे गोष्टी 'सहरची' नावाचे मध्येन्द्री लक्षणात आवाजी वा विद्युत वाहतुकी वर्ती भावात नाही' का असिलावाऱ्यातील विवाह आहे तो तोद्यांनी तज्ज्ञावाचासाठा शाळेपानी घालावाची जावळण्यात तथा 'तिच पूर्ण कलाजातारी' यापासूनीला शुरूवील्या लदाण्यातील साक्षा उभाडीला वारामुदाती, तिचमध्ये तिच्यांनी दुपाराती, आजका चिक्की तंत्र रामुशेहाचा व चिक्की अकार्य वरिष्ठांचे ४० दुखांचे वास गेले ता तुम्हांनी अनुमा अप्युक्तीमध्ये प्रसारातील 'सहर' प्राप्तीच्या दुष्प्राणावाची झाली याच्यांनी 'सहरां' आणि त्यांची विवाहातील व्यापार व्यापारितील तोंडे 'सहर' व्यापार व्यापार तोंडे

तांचे लिन्याई की अपेक्षाता चौपाई आहे, तर तांचाचा निवारण आढू दिले चाहून १८८८ चे 'जाग विजय लालवाणी' यात्रा उत्तमाता बदलून तो विजय झाले १९५८ मध्ये नवीन गाहली प्रदद्युम्नी प्राप्तकर्त्त्वात आहे. या भास्त्रातील यात्रात खलेल्या कुठी आवालक्षण्यातुकाळ संपर्क घटवाऱ्यात । ए प्रदद्युम्नी पुनर्वर्तता केंद्र-उपायला आही.

© 2011 Pearson Education, Inc.

४६ सांखोद्धन कार्य

मानवी भूमि व्यापक दृष्टिकोण से अधिकारी क्षेत्र में इन बुक्स का उपयोग आवश्यक है। यहाँ इसकी लागती वाइफ्रेस्ट यांत्रिक विधि का प्रयोग करके इन बुक्स का उपयोग करने की अपील की जा रही है।

सुलमानीता या ग्रियालयिता २००० मुद्राको मे ३०२ लक्षन ग्रन्तिका पुण्यपत्र दीर्घा, पुढे लाप्ति लाई द्वारा धारा सहायतामा विवाहपाणा विस्तृत कथापुत्र मुख्यात आन्तर्गत विवाहका द्वे टिकिंग (५५० रुपी) हायवेस ब्याहुड केन्द्रका लगावा लक्ष तात्र विवाह आहे. तुम्ही या लागावान था ठान अधिकारीथ्या भरिगमान्त्रा ग्राहातपाणा खास विकास घेण आला. “भालामीत जर्वे उचितप्रीती रुचणा ने व्यापी लाता हे ग्रियालय विनाशक विषयक कल्पना घेण्यात

नेवा अध्यापकमान्यनवा शिष्टाचा दाखेलण, पुस्तकात उक्त क्रांतीच्या लेखात आणि अन्यांसाठी भौतिक तंत्रज्ञानात लागतो आणि त्याचे व त्याचे गुणप्रमाणात तरण तरवेत जाईली असे अद्यतनात घडून घडता वाहू लागता. येमुळे चैव आगला वाराष्ट्राता समोरानासा प्रवाहात्य दिले. १९७५ याचा जनेतारी गाये तंत्रज्ञ अनेक धर्माधारासमुद्र भरा करते—या शिष्टाचा शिष्टाचारी वायोग्यातील भूत्यनामात वाराष्ट्राची वारेला सर्वोभव एकत्र आती द्याला आता एटिंग्यांमधील वास्तवांतील मार्गी अप॒ शिष्टाचारी हारी शिष्टाचारी वारेला भरकला आणि वाराष्ट्राची आता चिंता नाही पुढील प्रमाणे

- १) गुरुडि ग्रन्थालयद्वारा ललता नहारियालयातील ५००-३४०मा बदलवा साठो सफलती।

२) मुकुणामध्ये कृष्ण

३) तर्हे तितलेला अर्थ - उग्रगामा निवृत्याच्या जोडे भवलातील व्यापारे पुढाचीचा नाकः दिला

४) मासाची रस्तेद्वाराकराची लागूणी के उपयुक्त मार्गी नोंद घेणे।

५) आ-ज्ञप्ताच्या श्रेष्ठप्रियक यशपाषाणाच्या एसियान कलाता कोट्टिया, खागोडे, जाईका
पादभूमिचे गुलामीरो बोरी

- १) लक्षणात्मक आलना देखी ग संशोधन करते
 २) विचारना प्रक्रिया गवाहाम विज्ञापन करते
 ३) उद्देश्य देखते

અને એવા વિષયાની અંતર્ગત પદ્ધતિનાં એવી ચા કલોકી હોય જો તું તોંક વિષય બની રહે

- १) विषयपूर्ण भाजन कीविए ताकि गुणोंमें नुस्खायाएँ
 - २) ऐसा भाजन करें कि गुणोंमें नुस्खायाएँ
 - ३) विषयपूर्ण भाजन कीविए ताकि गुणोंमें नुस्खायाएँ

“गिरिधर एवं उनकी सुधार की विभिन्न विधियाँ।” १३८६ वर्षात् इसकी प्रथा आरंभी होनी चाहिए। इसकी

ને લાગાવ આ કાંઈ કરતો નથી તો જોતું હોય તો એવું હશે

१९८२ मध्ये दुर्लभ किंवारीहत लू.मी.एफ.आर.सी. आंडु, तेहत, दुलोंकी वेळा, एकी, एक जाती र अवृत्त बदलेली व्यास या यत्र व्यक्तिगत सांख्यन-गांधीजीके महणन खोला येतो, तर १९८४ यासुन मध्ये विद्यापीठाने पदव्युत्तर उभास तेथे मुळने इतरी एम. डी.जी. या अस्थान किंवा या क्षेत्रात्तमा याचिंदीमार्गाला गांधीं दृष्ट गांधीं पी.एड. डी. लाई तांत्रिकी कटी तर नव्यें दिले संठी यांना १९८२ मध्ये 'Social Educational problems of the

१९३८ वी.जा. ५४४ श्री। म अमरा वक्ता लेहान नाममे स्वरहस्यार्थी गोपनाधारा प्रसादन्य नामा प्रियले
वारी अनिष्टिकांशासुराणा विजय करता ५९९९ से २००० या तारात्मीयले भी राजा वार तो श्री
दुर्गा दुर्गार्थ वारान्मी वर्षी द्वारा उत्तरार्थी—

- १) भारतीय समाजालिंग्वित पुनर्जीवन अधिकार अधिकार उपलब्ध आहे.

२) श्रीलंकी, चिन, दक्षिण एशियातील कृषीसामाजिक व्यवस्था अवृद्धीचे उद्देश आहे.

३) नेपाल आणि भारतीय समाजालिंग्वित कृषीसामाजिक व्यवस्था अवृद्धीचे उद्देश आहे.

• 100 •

- ४) गांधीजीचा विचित्र विलोचनाचा आवास किंवा भावाचा असेही विचाराचा नाशकरण दुखला जाऊ येणाविले जाली.

५) २० प्रत्यावरी व१०३ रुपये असून तेमो विळात प्रत्यावरीचा उरवण्याचा वारंवार एक साप्तीय घटिपद खरेल एक कृती आवासाच्या तातोत विळा.

६) असेही विळावरीच्या विचित्र विलोचनाचा आवास किंवा भावाचा असेही विचाराचा नाशकरण दुखला जाऊ येणाविले जाली.

या संस्थानाचे इतिहास अपारदिष्ट विलोल आणि अचूक आणि विद्याज्ञानाचा प्रवर्तनाची लिंगायित्री
प्रकल्पाचे १९३ चुनिंदा नाई गोविंद गोवाळाचार्य नियमित करियात आले आहेत. उत्तम
विद्यालयातील विद्यार्थ्यांना नियमित भेटी देण्या.

४.३९ अधिक्षय प्रतिवेद्यल व निर्माणल काल :-

दुपार प्रसारण दरमा गोलित २.८२०३ क्या फिल्मावाही स्कॉरपियना लेणा — अभियंत्र प्रक्रिया हिंकारी अधिक जगाविल दरी टुकडी आहे.

२) अंग्रेजों का हमें बहुत पर्याप्ती की लोलार्ही दृष्टि व सिर्फ उत्तम इमारी के लिए नहीं बल्कि लकड़ी और धोनी की लकड़ी के लिए भी उत्तम इमारी के लिए लोलार्ही दृष्टि आवश्यक है। अंग्रेजों द्वारा ग्राम दृष्टि की लोलार्ही दृष्टि के लिए उत्तम इमारी के लिए लोलार्ही दृष्टि आवश्यक है। अंग्रेजों द्वारा ग्राम दृष्टि की लोलार्ही दृष्टि के लिए उत्तम इमारी के लिए लोलार्ही दृष्टि आवश्यक है। अंग्रेजों द्वारा ग्राम दृष्टि की लोलार्ही दृष्टि के लिए उत्तम इमारी के लिए लोलार्ही दृष्टि आवश्यक है। अंग्रेजों द्वारा ग्राम दृष्टि की लोलार्ही दृष्टि के लिए उत्तम इमारी के लिए लोलार्ही दृष्टि आवश्यक है।

प्रतिकृति के प्रभावी वर्णन या केंद्रीय पूरीता को कल्पित आवश्यकताचे उपलब्ध ठेवी लिहा.
असंख्य ग्रन्थांमध्ये अपार्शी निळऱ्या लाभाला घेण्या या वाचनाला ज्ञानात अप्पासाठी उपयोग एवा उपलब्ध
मान्यता नवाबाबां केली. या वर्णनातील गोरखाला नवाबाबांच्या दृष्टी मुळातुकाळी पुढीलेखा, १९८४ -८५
प्रकाशनातील आपल्या प्रतिवर्षात डॉ. विठ्ठल विठ्ठलांनी "राष्ट्रकूल लैंडमार्क वरांची लांजांगी" किंवा
"काढुकुडी" या जागतिक वर्णनातील "आपरेशन लाचस्टरट ग्रुपमुल्ले" या साहित्यप्रवाहात भाजलागेल
१५ लाग्नं ३, ४८८ ते ४९५ वर्षांच्यावधील वर्णनात लिहा. व्यापक १५, ३५, ४५३ अंकांमधील नवातपासाची
वर्णनी, व्यापकी १, १५, १६० लोकांमधील विशेष अवधारणाकृत प्रमाणे दृष्टी द्वारा उभाला, १९८८-८९
ही काढुकुडी वाचिकिया काला व्यापका कृतीपूर्वक संरक्षण कराविणारा जावे. "ही आजलेलाची प्रतिवर्षात नवाबाबा
काढुकुडी काढलाना चाही. हे व्यापक अवधिकारात तात्पूर्य दौडिला तरीकातेला सोलालाई गारी बदलावून प
माझी व्यापकांची व्यापकी नेव्ही खोला नाही. तसेच अवधिकारात व्यापकाना दूरा किला जावै.

त्वारं ती १५८० नाल्हा तिमि भारती शासकसँग अधिक मिस़न्स प्राकृत्य तुला किंवा तीला का सम्बोधनी आलदा देखावाती रे अभिटाप्पा ते । अभिटाप्पा भाषात आद्यप्राकृत्यका साथै जातरा करणाव गिरा डीला ॥ संघटन गड्ढ दस्ती गड्ढ अल्लाल दब्द वाळतेपर ॥॥ समाज संविधा किंवा जातक-जातका व्यापारिघर असाही एक नवतात्त्वात गावू नवाऊ १५८४-८५२२ अनुभित्यु कृष्णनाथ किंवा जात ॥ जाती उक्ताता तो ॥ या संघटनात नवो ठाकुरी ॥ ती अंगंति 'कांडा' तो ॥ या अंगंति उक्तातोप्पु त्रिवेद्यानु प्राचीन दोनो जाती

सामने उपर्युक्ता दस्तावेज़ का प्रतिलिपि नीचे दिया गया है। इस दस्तावेज़ को अधिक विस्तृत रूप से विश्लेषण करने के लिए आपको इस दस्तावेज़ का अवलोकन करना चाहिए।

प्राचीन उत्तर भारत में १९८२ तक असम द्वारा प्रतिष्ठित कार्यक्रमों के संग्रह अधिकारी आर्जी गोप्ता द्वारा एकत्रित करकी गयी थी। इसका उत्तराधिकारी विश्वविद्यालय अधिकारी बन गया।

जनजागरी कार्य

कांगड़ ने राज्याभिकृत गोदावरीवर अवश्य करना चाहता था। इसकी उपलब्धि नहीं हो पाई गयी। फ्रान्सीसी लोगों द्वारा कांगड़ ने अपनी वापसी करने की घोषणा की थी। अंग्रेजी अधिकारी परिषद्मनों द्वारा इसका विरोध किया गया। जो जै साम्राज्य अमेरिका थी वह अपनी वापसी करने की घोषणा की थी। यह अपनी वापसी करने की घोषणा करने के बाद अपनी वापसी करने की घोषणा की थी। यह अपनी वापसी करने की घोषणा की थी। यह अपनी वापसी करने की घोषणा की थी। यह अपनी वापसी करने की घोषणा की थी।

118 *Wetland Work in India*

Guidelines for the Blind

1) The resolutions adopted at the second All India conference of the bandh - मा
उत्तेजित भारतीय जनसभा अमरोह विसरण से भवित्वे का प्रस्तुत कर उपलब्ध
करायेगी। उद्देश्य उत्तम द्वारे संसाधन विकास का लक्ष्याधीन प्रयत्नपूर्ण

प्राचीन धरातली मिथ्या, गुणात् लोकान्पदान् जावे, उत्तम्यज्ञा नाशामि जाव
जितामि तर्वे, अंगुष्ठा भाव नीभिर्गतिरात्री तप्तमा प्राप्त जावे ३: इसी वेदी दोषक नियमकालिका
मुख्यम् त्याप्ते प्रधानको तात्पर्य प्रतिक्रिया विकास द्वयास्त्रस्तु मित्रभासा ४: विद्वत्ते
वायनरायां वायनविलोक्य प्रसन्नता वाचिकली विद्वद्वायां के विप्रियाः, अह वायनराया
वायनरायम् ५ गोव्यासामात्रे समर्पितः औजः, चटुष्टी लोकायांती वीक्षा वायनरा अप्यक्षेत्रे, विवाह
प्रथं क्षमातित वायनरा व्रसारात्रः ६: विद्वत् एव वृष्टतत्त्वे त्यां नृज, नैव ७ तिते वायन
वायनरा दुष्टः विद्विष्याद्या द्वृष्टेन दुष्ट वेदेन 'सेव न्यूज लेटर' लिखर लभान् लक्ष्य विशेषाद्यै
तात्पर्यात् व्याप्तिस्त्री वायनी वायनी त्याप्त विशेष लेणारे 'नैव दौकिल गिरिश' आणि वायनराया
तात्पर्यात् पेशुता कर्ता वायनरे त अभ्यन्तरामात्र वाहिकेते 'दोषक'. एवातो क ल्याईड वैलफ्रेजर ८
वायनराय-वायन, वायनरे वायनरे तर्वे निवातवायालिना इवाप्रेत्य इत वाया द्वान्द्वीहा दिव्येत्र प्रकाशिता
वायनर, वायनरो वायनरे व व्याप्ति सीधे आहे. प्रसुत ९: विषेषकामात्री व्याप्ति लक्षण वेळा ही
विविधात्री द्वायनरायामात्रा यांचा वक्ता असाऊ वैलफ्रेजरद्वाया उत्तमाचा उद्येत्र वेळा आहे.

ਇਹ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਵੇਗੀ 'ਖੁਲ੍ਹ੍ਹੇ ਪਾਸੋਂ ਅਤੇ ਬੁਲਾਈ ਜਾਣੀ ਵਿੱਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਵੇਗੀ। ਸਾਡਾ ਕਾਰੀਬੀ ਸੂਕ੍ਖ ਵਿੱਚ ਭਾਗ ਲੈਂਦਾ ਹੈ 4.9% ਪ੍ਰਤੀ ਵਰ਷ ਅਤੇ ਸੂਕ੍ਖ ਵਿੱਚ ਵਰਤੋਂ ਕੁਝ ਵਾਧੀ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਦੱਸਾਏ ਗਏ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਤੀ ਵਰ਷ ਵਾਧੀ ਹੈ 1.5% ਅਤੇ ਸੂਕ੍ਖ ਵਿੱਚ ਵਰਤੋਂ ਕੁਝ ਘੁੜੀ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਦੱਸਾਏ ਗਏ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਤੀ ਵਰ਷ ਘੁੜੀ ਹੈ 1.5% ਅਤੇ ਸੂਕ੍ਖ ਵਿੱਚ ਵਰਤੋਂ ਕੁਝ ਘੁੜੀ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਦੱਸਾਏ ਗਏ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਤੀ ਵਰ਷ ਘੁੜੀ ਹੈ 1.5%

- १) निम्न शब्दों का अर्थ लिखें।
 २) विद्युत ऊर्जा के लाभों एवं नुकसान का विवरण करें।

॥ असराद्यो नियमान्वितानीकाकरणे लेख आपादा का उत्तराधिकारीकारण
अनुबंध बदलाव आव अद्यामा चुक्त

॥ एवं प्रभावात् अनुस सुन्नते ॥

अनुबंध कामाक्षरे लेख आपादा जैसे विन भवन आर एट अनुबंध चुक्त
"Welcome the first appearance of BLIND WELFARE and I hope it will prove an
effective medium through which the National Association for the Blind will be
able to disseminate information relating to blind welfare in our country.

The activities of the National Association for the Blind have been
gradually increasing and for some time now we have been contemplating the
publication of a journal which would help propagate the cause of the blind and link
together the Schools, Institutions and Associations for the blind in India.

I sincerely hope that BLIND WELFARE will pave the way for a
scientific exchange of views on education and employment, on rehabilitation and
adventure and other allied topics.

BLIND WELFARE is yet another milestone in NAB's journey
towards helping to create a better understanding among the workers and the friends
of the blind and among the public at large on the problems of the blind in India. ***
महाराजा अमरपाल गुप्तानी चंद्री लक्ष्मी शर्मा एवं नीलामी अमरपाल
गुप्ता गुप्तानी, भी आप दुर्दशा की देवी।

मानवानालिकानि सूक्ष्मानासुनवप्रवृत्तानि आपादा विविधानाद्याद वृत्ति
तेऽपि तापात् दीक्षा एवाद्यात् पर्याप्त अवकाशात् वास्तु दिलो, ताप, ताप्ती न वृत्त्य
देहात् मानवानालिकानि दीक्षा अवकाशात् विविधानाद्याद वृत्ति वृत्त्य
प्रवृत्ति अवकाशात् विविधानाद्याद वृत्ति वृत्त्य देहात् मानवानालिकानि
दीक्षा अवकाशात् विविधानाद्याद वृत्ति वृत्त्य देहात् मानवानालिकानि
दीक्षा अवकाशात् विविधानाद्याद वृत्ति वृत्त्य देहात् मानवानालिकानि

जान गिरवा जला है देशकी सामाजिक उद्यम। प्रथम उल्लंघन करना चाहिए।

५.३ अंगठिकारक सरकारी धोरण उत्तरीष्यात नेवधी भूमिका :-

- १) श्रीगणेश अधिकारी ने गिरोही करम्पाता का लाभ लिया है। उनकी विवरण अधिकारी द्वारा जारी किए गए असिक्ल अवस्था अधिकारी द्वारा दर्शाया गया है।

23. 11 The First All India Conference for the Blind, Bombay

- (ii) The International Conference on Education of Blind Youth; Geneva;
 - (iii) The first World Assembly of the World Council for the Welfare of the Blind, Paris.

गरिष्ठप्रीति तादेव निरोप्ता वस्त्रविमुतारं ग्रीष्मावले प्राप्तिसम्भवं पात्र कर्त्तव्यं च विषयाद्वारा

- प्रति राज्य सरकारी अधिकारियों राज्यसभा के लिए विधायिका
 - विधायिका के लिए नियमों में अनुच्छेद गठन करने का विधायिका का नियम तयार करना।
 - प्रति आमता लाने विधायिका विधायिका के लिए विधायिका का नियम तयार करना।
 - आमता रिप्रेसेंटेप्रेटेशन लाने विधायिका विधायिका का नियम तयार करना।
 - आमता घुनडसमाची नियम सरकारद्वारा लाना विधायिका का नियम तयार करना।
 - विधायिका विधायिका विधायिका विधायिका का नियम तयार करना।

१८८५ वर्षातील भारतातील सुलभा नियम

四、新編詩經卷之二

५८ | श्री कल्याणसिंह गुरुभिरुद्दीपनम्

३८५ अंग्रेजी संस्कृति का विवरण

लातिर कालाघाटी वर्षाणि असे ।

ग्रन्थालय नाम- मुख्यमंत्री काशीवरील शोभानी | असार २०१५

चौथे गांगायनी अंगुली मार्टिन स्क्रॉफले नों त्रिस National Assembly (Council) for the Blind १९५६, नव्या शाहन को इसका प्रधारिका गोपनेपाल्तु वरकारी द्रुतकर्त्यामास्थाई रिशेष निर्दी राज्यम उपलाम तुल्यत भए। अस्त्रिकोटी द्वि कमिशनो लालिचारीस्ता द्विनी विभिन्न लक्षणी जाति-वर्षा व्यापारी-तेजल अभियंत्रजलत्या अभ्यासामाल्या द्विती स्वाक्षरी गाँधीजी वाचन सुन्न आदि एल वित्ती रखाना, अपाराधी विभिन्न सब-योजना विनियम लापाल्य, सरकार नियमित आ गाँधीजी व्यापना, विकास विकास तथा हु गाँधीजी उल्लेख नाम आलेला आहे. विकास डास नामा आ उत्तमाम विग्रहक वास्तवीकर झागता गाँधीजी विच्छिन्न चवा केली असल्याम घट्टमुळ विकास न्यां नव्याम देखाउ दुख्ला याम, धारणास्वा वाचिविद चवा केली आहे.

४१० गुरुव्यापत्ति :-

ज्ञान आकृति भारतात्मा आपकल्याण करावाला निश्चित विजय द्वारा जाली तड़पी, लूपूं उत्तमाण अधिकर्ष भाव्यासा दुष्टिमें कहीया निरापदभूक्त होता एवं जास्तकोंग प्राप्तीयसा सदरसेवा रसवाना विश्व रक्षार्थ निष्ठा वासी, तथा ज्ञानी मन्त्रपत्र जाली। स्वाधीनव्या अली भवेत्तम् १५ लाख ३२००० रुपयांसाठे स्वप्न सनां ठेवले होते या नवगृहामधिकारी प्रदीप १८ गांठांको जे ख्या केले ते भाष्टा नेहदा, अध्ययने भारतातील अव्याध्या जीवनविधानाची व असुखी ग्रहां द्वाले उसे सहणता देवता अपाच विद्या देविका, पुत्रांग + असुखां भवित्वां ते निर्मूलन भेदात घाये करणारी नवी भास्त्रांची = लोग भवती सदरसेवा जन्मता जाई विवरना भारतातील ओर नीतांसुधार अव्याधीचा विकास प्राप्तुच्छानेहदा जांशीनव्या प्रदीप लाई विवरना भारतातील ओर नीतांसुधार अव्याधीचा विकास प्राप्तुच्छानेहदा जांशीनव्या प्रदीप

गती असे राजासा वेडल ५० अर्धे नन्हे लोगांसाठी तसेच विषयामध्ये दुप्रीचे गोपनीयांची आवृत्ती घटली. तिच्यां कमीची काळजी दरावण्याच्या घटावडी भागी विलापामध्ये संपर्कातील कायदे करण्याची उचितीविषयामध्ये तसेच गोपनीयांची आवृत्ती घटली आहे. लोगांची उचितीविषयामध्ये तसेच गोपनीयांची आवृत्ती घटली आहे. लोगांची उचितीविषयामध्ये तसेच गोपनीयांची आवृत्ती घटली आहे.

संक्षेप

- १) Suresh Ahuja, National Association for the Blind, Mumbai, 1964, p. 3.
- २) Suresh Ahuja, op. cit. p. 4.
- ३) Memorandum of Association and Rules and Regulation, National Association for the Blind, Mumbai, 2002, p. 1.
- ४) निमाल अर्टिशियल फिल्म स्टूडिओ (एस), डिड्या, गावस्थाई नियम कारकारी समाजक, मुम्बई द्वारा नियम बदल यासी घटनेली मृत्यु, आपटार दि २० जुले २००६, p. 3.
- ५) Annual Report of National Association for the Blind, 1952-1955, p. 5
[नाशिक National Association for the Blind एवं NAB असे नावे वाचावते तिचे]
- ६) Annual Report of NAB, 1956-1958, p. 9.
- ७) Annual Report of NAB, 1958-1959, p. 14.
- ८) Annual Report of NAB, 1964-1965, p. 19.
- ९) Annual Report of NAB, 1971-1973, p. 19.
- १०) डिल, ६, १९.
- ११) Annual Report of NAB, 1980-1981, p. 12.
- १२) Annual Report of NAB, 1990-2001, p. 33.
- १३) नवा चाही, अधिकारी विषय, पृ. ११६५, प. १३८.
- १४) Annual Report of NAB, 1963-1964, p. 5.
- १५) Annual Report of NAB, 1964-1965, p. 13.
- १६) Annual Report of NAB, 1980-1981, p. 22.
- १७) Annual Report of NAB, 1969-1970, p. 7.
- १८) डिल.

- 36) *Bird Welfare*, January, 1977, p.6.
- 37) *Annual Report of NAB*, 1970-1971, p. 12
- 38) *Annual Report of NAB*, 1977-1978, p. 27
- 39) *Annual Report of NAB*, 1980-1981, p. 26
- 40) *Annual Report of NAB*, 1978-1980, p. 9.
- 41) *Annual Report of NAB*, 1983-1984, p. 23
- 42) *Annual Report of NAB*, 1966-1967, p. 12
- 43) *Annual Report of NAB*, 1978-1981, p. 9
- 44) Website of NAB, www.NABIndia.org
- 45) *Bird Welfare*, January, 1976, Mumbai, p. 21
- 46) *Annual Report of NAB*, 1952-1955, p. 5
- 47) *Complaints of NAB*, Bombay, 1955, p. 2
- 48) *Bird Welfare*, December, 1959, p. 18
- 49) *Annual Report of NAB*, 1959-1960, p. 18
- 50) *Annual Report of NAB*, 1975-1976, p. 6
- 51) *Annual Report of NAB*, 1962-1963, p. 7
- 52) *That*, p. 7
- 53) *Annual Report of NAB*, 1952-1955, p. 5
- 54) *Annual Report of NAB*, 1985-1986, p. 2
- 55) *Annual Report of NAB*, 1975-1980, p. 9
- 56) *Annual Report of NAB*, 1965-1966, p. 6
- 57) *Annual Report of NAB*, 1983-1984, p. 8.
- 58) *Bird Welfare*, December, 1976, p. 2
- 59) *Annual Report of NAB*, 1978-1980, p. 6
- 60) *Annual Report of NAB*, 1955-1957, p. 5

- 33) Website of NAB, www.NABIndia.org
- 34) शुगर इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजिनियरिंग, गोवा, पृ. 4
- 35) Annual Report of NAB—1978-1980, p. 6.
- 36) *Ibid.*, p. 6.
- 37) **Prospectus of NAB IDBT Polytechnic for the Blind, Mumbai**, p. 1
- 38) शुगर इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजिनियरिंग, गोवा, पृ. 4
- 39) **Prospectus of NAB IDBT Polytechnic**, p. 1
- 40) *Ibid.*, p. 5
- 41) *Ibid.*
- 42) Annual Report of NAB—1958-1959, p. 9.
- 43) Annual Report of NAB—1958-1959, p. 9.
- 44) Annual Report of NAB—1959-1960, p. 13.
- 45) Annual Report of NAB—1960-1961, p. 14.
- 46) *Ibid.*
- 47) *Ibid.*, p. 11.
- 48) Annual Report of NAB—1959-1960, p. 13.
- 49) Annual Report of NAB—1980-1981, p. 3.
- 50) Annual Report of NAB—1981-1982, p. 10.
- 51) Annual Report of NAB—1981-1982, p. 22.
- 52) Annual Report of NAB—1982-1983, p. 32.
- 53) Annual Report of NAB—1989-1990, p. 23.
- 54) Human Welfare (Braille Magazine), January, 2002, p. 14.
- 55) शुगर इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजिनियरिंग, गोवा, पृ. 5
- 56) Annual Report of NAB—1970-1971, p. 10.
- 57) *Ibid.*, p. 8.

- ix) Annual Report of NAB., 1969-1970, p. 9.
- vi) Annual Report of NAB., 1970-1971, p. 6.
- vii) दृष्टि विकास अधिकारी समिति, ग्रन्थ, प. 3;
- viii) Annual Report of NAB., 1982-1983, p. 11
- ix) Ibid.
- x) Annual Report of NAB., 1989-1990, p. 47.
- xii) Prospectus of NAB Uttamta Job Development Centre, Bombay, (n.d.) p. 2.
- xiii) दृष्टि विकास अधिकारी समिति, ग्रन्थ, p. 49;
- xiv) Hema Upendra, op.cit. p. 13
- xv) 50 years of service to the Blind, National Association for the Blind, India (Booklet), Mumbai, 2002, p. 3.
- xvi) Annual report of NAB., 1952-53, p. 5
- xvii) Ibid.
- xviii) Annual report of NAB., 1960-61, p. 9.
- xix) Annual report of NAB., 1971-72, p. 8
- xx) Annual report of NAB., 1975-76, p. 6
- xxi) Annual report of NAB., 1982-83, p. 18
- xxii) Annual report of NAB., 1990-91, p. 17
- xxiii) Hema Upendra, op.cit., p. 14
- xxiv) Annual report of NAB., 1987-88, p. 12
- xxv) Annual report of NAB., 1990-91, p. 13
- xxvi) Annual report of NAB., 1999-2000, p. 7
- xxvii) Hema Upendra, op.cit., p. 4
- xxviii) Annual report of NAB., 1960-61, p. 20

- 87) Annual report of NAB, 1978-80, p.12.
- 88) Ibid.
- 89) Annual report of NAB, 1984-85, p. 24.
- 90) Ibid.
- 91) Annual report of NAB, 1999-03, p. 1.
- 92) Annual report of NAB, 1981-82, p. 33.
- 93) Annual report of NAB, 1959-60, p. 16.
- 94) Annual report of NAB, 1984-85, p. 34.
- 95) Blind Welfare, June, 1959, p. 3.
- 96) Ibid.
- 97) Ibid, p. 1.
- 98) Blind Welfare, June, 1977, p. 1.
- 99) Ibid.
- 100) Suresh Alauja, op.cit., p. 4.
- 101) Annual report of NAB, 1952-53, p. 7.
- 102) Annual report of NAB, 1960-61, p. 20.
- 103) Annual report of NAB, 1962-63, p. 12.
- 104) Ibid.
- 105) Annual report NAB, 1963-64, p. 16.
- 106) Annual report of NAB, 1987-88, p. 34.
- 107) Annual report of NAB, 1980-81, p. 3.

प्रकरण पाठ्यते

शारणार्थी भूमिका व कार्य

प्रस्तावना

आधुनिक कलाओं को गत्या ही रखा जाएगा। सर्वोच्च विभागीय अस्सा दफ़्तरों ने अपलोड
कराए वे भूमिका लिपिकरणी आठ त्रयावें त्वया सम्बद्धीय द्वारा अबलंबून लाये गये अवाद्या सही उत्तराध्या
ताकतीत है। इन प्रथाय ये ने नई सामारणियों १५८० वर्षीय लालामी भारतीय डाकांतरी के दोनों
कर्त्तव्यामाल डॉटे, १५८० वर्षीय लालामी कलापाणी कालामी कालीमा औ आज आगे पूर्वे १५८५ ता मध्ये
विभागीय कालामी वास डाल्यान्हार रुद्या अथवि अंडा इत्तेज्या लालामी कलामी लाला विभागीय कलामी
प्रोत्तेवण, प्राप्तिसार, लंबजाराती भ्राती वाणी डॉक्ससी लिटो इत्ताटी धटकामुक्त अगावा जीवस्त्रर
कृष्णटच्छन बदलू लागला, या बदला गणील ग्रेस्टच्चा शाँच उण्णासाती गाम्भार्या भुमिकेचा। इतिहास
तपासती गरजेते आहे, तसा जात्यास प्रस्तुत प्रकाश्यात केला जाई.

स्वास्थ्यपर्व लकड़ील शारीर -

कांगड़ापूर्वी जागतिक अध्यात्मा जीवन विश्वासाकर्ते त्रिलोकीने विशेष नाम दिल्लीवाड़े भारतीय
गाही नाम विट्ठल राजारामीत्या अनुसन्धान उपरात सरकारने प्रे प्रश्नाची मंजूरीही नव्हल घोषणार्थ
दिल्ली दुर्सन्ग्या महायुद्ध काळीत होती १९४५ मध्ये फलंग पक्षातील दासी-जातिही नामान्वयने
प्राताम द्यात्वाचे काम करून यिणीष अधिकारी कण्ठ निषुक्ती उनी, हे अशा जीवन विश्वासातील
प्रादृश धार्जल हात वाढवणी केलीय विश्वास सम्भागार मठक गांधी केलीरा आसोय विश्वा वाढी एवं
संगुल गांधी नमाम्यात आली अध्यत्व ग्राहक उपरात अचारणी व उत्तात्त्वात लीलान विश्वासातील
मरणालय ग्रांटरेन करणे हो लाती मात्रितीवर सर्वाविष्यात आली। असे करी तुल्या अध्यत्व
भालूल्या घारतीय दीनिकांता ग्रांम्यां उद्योगात यांत्रिक दणे दुरु झाले व्यानिमित्तान डॉलरदल गीते

गुरुपूर्ण छारणप्रसाद अधिकारी गुरुपूर्णप्रसाद साहबर (कैला) डॉ अहंगराम
जन्मदिन १९४४ तथा आधुनि अधिकारी गुरुपूर्णप्रसाद साहबर (कैला) डॉ अहंगराम

“॥ अपार्वति शिवायां उत्तरी-पश्चिम लक्ष तीरा वा लक्ष्मीनारद्देव असी
विश्वासा ॥ वारंभ आगि शिव भावामाद सरवेती इति ॥ अतएव विश्वासामादे दिव्यसु
न्दृष्ट्या द्युमि अस्मि शिवायस्त्रितो ॥ व्याप्तिर्णु पुरुष विश्वा वारंभान् एव विश्वासी ॥ यद्युपर
विश्वा वारंभ अस्तु प्रपञ्चसः ॥ विश्वा वारंभ अस्तु विश्वास सुख्याते कले ॥ एव विश्वा
विश्वा विश्वास ॥ विश्वा प्रतिविश्वासादु विश्वासातीते एव विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास
विश्वा विश्वास विश्वास विश्वास ॥ एव विश्वा विश्वास विश्वास विश्वास विश्वास ॥ एव विश्वा
विश्वा विश्वास विश्वास विश्वास ॥ एव विश्वा विश्वास विश्वास विश्वास ॥ एव विश्वा
विश्वा विश्वास विश्वास ॥ एव विश्वा विश्वास विश्वास ॥ एव विश्वा विश्वास ॥ एव विश्वा

तांत्रिक ज्ञानीत शारीर

सिद्धिरे उत्तरार्थमानेम् स्वार्थं प्राप्तं नवायाएती उत्त-अपमात्या मिलात्वं दुर्जन्म
द्वयं अपि न्याया प्राप्तार्थात् । १५-डॉग्राट १९४७ यज्ञी न्यायात् मिलात्वात्सर भारतीय न्याय
द्वयं अपि न्याया प्राप्तार्थात् । १५-डॉग्राट १९४७ यज्ञी न्यायात् मिलात्वात्सर भारतीय न्याय
द्वयं अपि न्याया प्राप्तार्थात् । १५-डॉग्राट १९४७ यज्ञी न्यायात् मिलात्वात्सर भारतीय न्याय
द्वयं अपि न्याया प्राप्तार्थात् । १५-डॉग्राट १९४७ यज्ञी न्यायात् मिलात्वात्सर भारतीय न्याय

५.३.१ भौतिक इनियटिप्रूफ एवं विज्ञानीय दैर्घ्यालय - National Institute for
the Visually Handicapped (NIVHI)

‘त्रिलोकी’ भला १९६४ के उस प्रकार या प्रतिक्रिया के द्वारा विस्तार होता रहा। यह विश्वास विश्वास निष्ठाएँ तोड़ती हैं। ताजा व अवश्यकीयी पात्रीयि तरकारला भाली

१९५८ च्या डिसेंबर महिने "निश्चाल रिले पार द बाटुडे" असे या लेहातीचे नावाकडे असण्यास आले. याची प्रथमच ज्योतिषील व्यापक विकासात फॅसिलिस द्युप्रिया (पुस्तकी भासा) उद्देशी निर्दिष्ट करण्यात येण्या १९६५ मध्ये ता संस्कृत नावात अंगठी इनिटियेटिव यांचे दिव्यांगजी अभियंक (१९७१) लिहाऱत आले. सरकारने युग्माच्या प्रवाहावरू व्यापकी प्रवाहावरू ला युग्माच्या प्रवाहावरू नेणी १९६९ याचे करकारने याई प्रसारित्या ज्योतिषील भार शक्त्यावर विवाहाची व्याप्ती.

- १) भारत सरकार द्वारा संचालित केन्द्रीय प्रशिक्षण एवं विज्ञानीय अनुसंधान एवं प्रयोगशाला नियंत्रण बोर्ड National Institute for Visual Handicapped.
 - २) भारत सरकार द्वारा संचालित केन्द्रीय प्रशिक्षण एवं विज्ञानीय अनुसंधान एवं प्रयोगशाला नियंत्रण बोर्ड National Institute for Orthopaedically Handicapped.
 - ३) भारत सरकार द्वारा संचालित केन्द्रीय मनोविज्ञानीय अनुसंधान एवं प्रयोगशाला National Institute for the Mentally Handicapped.
 - ४) भारत सरकार द्वारा संचालित केन्द्रीय हृदयविज्ञानीय अनुसंधान एवं प्रयोगशाला National Institute for Heart Handicapped या इस नाम सहित, भारतीय NIVH या ऐसीप्रे तीन नुस्खे लेहर गांधी गवाहारा आगे आगे दुखील चलाएँ -
 - १) शिराभ्यासाला बालना एवं बाली अव्याहारी व्यवस्थाएँ।
 - २) अस्त्रका एवं व्याहाराली अव्याहारी व्यवस्थाएँ।
 - ३) शारीर अव्याहार विकास सभी शारिरिक विधाएँ उपर्युक्त विधाएँ -
 - ५) शरीर व्याहारिक एवं शारीरिक विधाएँ।
 - ६) विधिवाली विधाएँ।
 - ७) समाज व्यवस्था, सार्वजनिक व्यवस्था विधाएँ।
 - ८) समाजान्वयन व्यवस्था।
 - ९) भारतीय धर्मव्यवस्था।
 - १०) भारतीय धर्मव्यवस्था।

- १) लोकल व्यापारिक व नागरिकांका अनुदानी/ उपकरणांकी वित्ती जरूरी
 २) भवान वास्तवण व विकास सामिक्ष्य इन्डस्ट्रीज युनियन द्वारा कराई

मानव संस्कृति उपकरण –

भा अस्थेचे मनोज शिखार रेडी लोकल अनुदान वाळासाठी वाढवणारा यांची जागी
 अजालापै आपालीची वाढवणारे आहे. यांची प्रातिक्रियाक उपकरण प्रदान करावी आवश्यक.

५) Department of Special Education and Disability Studies:-

The Institute's TOR activities encompass Degree, Diploma and Certificate level
 courses in Special Education, Orientation and Mobility, Refreshers/Trainings
 Courses for Field Trainers, Survey Provisions, Policy Making and placement of
 visually impaired children. Some of these courses are being conducted at the
Institute's Headquarters, Regional Centres, Chennai and CRC, Sandeswar while
others are being conducted in collaboration with State Government and reputed
NGOs in the field of visual disability either with full or part-time funding. The Institute's
 Department of Special Education is a shining example of academic excellence.
 Its alumni are rendering services to the visually impaired school children
 and盲人 teachers across the length and breadth of the country. Many outstanding
 vision impaired personalities and have been instrumental in promoting research in
 various aspects of special education. Since its inception (1984), the department
 has qualified 1,600 Teachers and 300 Mobility Instructors which comprises ap-
 proximately 20% of the trained teachers for the blind available in the country**

६) The Directory of Services for Persons with Vision Loss in India:-

This online directory of services for Blind and Low Vision persons in India
 provides specific information on the availability of a range of services in 1162
 organisations working for the visually impaired people**. The information also dis-
 plays the complete contact details of the organizations. This Directory has been

compiled by NAB India Centre for Blind Women and Disability Studies, New Delhi for the benefit of PWD's parents, teachers, resource personnel, researchers or any other stakeholders interested to seek information about services for the visually impaired in India.

3 Research and Development:-

One of the primary objectives of the Institute is to conduct, sponsor, promote and/or subsidise research into various dimensions of education, rehabilitation and empowerment of the visually impaired persons. In accordance with its primary objective, the institute worked on some 125 research projects over past 1 decades. 115 projects have been completed.¹¹ The research endeavours of the institute have not only stimulated debate on a number of policy issues crucial for the integration of visually impaired persons in the national mainstream but have significantly contributed to the evolution and implementation of a number of developmental programmes and schemes. Under the R&D initiatives, 15 different devices have been designed and developed providing greater freedom of participation to the visually impaired persons in various walks of life. The projects undertaken so far can be divided in four main categories thematically and that is education, employment, rehabilitation and tools for mobility and independent living. Over the years, the Institute has emerged as an expert body in the field of Braille development. The R&D initiatives of the firm are recognized far and wide.

4 Braille Development:-

"NABT is perceived as a pioneer in Braille Development owing to its long and deep involvement in the standardization of Braille, a system that supports all the official languages of the country and medium systems for Maths, Music and Science. The Braille Development Unit has also contributed Braille contractions and abbreviations and shorthand systems in most of the official languages of the country."¹² Apart from developing and refining Braille codes for languages of the country,

the official languages of the country and other writing systems, the Unit also worked on a number of projects and research studies crucial for the expansion and popularization of Braille. At present, it is working on 3 major studies namely "A Study of the Status of teaching Braille in the Universities offering H.E.C. Special Education with Specialization in Visual Impairment" and "Review of Braille Braille in India".

Responding to the popular demand for having a supervising and monitoring body to oversee and strengthen the development of Braille in India, the Unit played an instrumental role in the creation of Braille Council of India (BCI) in 2008. This body also has a specific objective of assisting and advising the Director of the Institute in all matters relating to Braille development and Braille production in the country. While the BCI is primarily an advisory body, its conclusions, guidelines and recommendations form the basis for Braille related initiatives in the country. All new technology relating to the development of hardware/software pertaining to Braille writing, Braille translation software, Braille production or Braille teaching shall be recognized or duplicated with the approval of the BCI.

During the year 2008-09 & 2009-10 Council convened three sessions, first between 12th September to 13th September 2008 and the second on 25.3.2009 and the third on March 29, 2010 at Dehradoon. During these sessions, issues for Braille development were prioritized and a plan of action was also drawn up for the ensuing year. Council also had the occasion to review newly developed Braille Code for Cursive, Music and Advance Braille Code for Mathematics and Science developed by the Institute. It also went through types of Braille Devices designed by Sir Milin Dass, Senior Research Officer (BRAILLE).

5 Training centre for the adult blind (TCAB):-

The Training Centre for the Adult Blind (TCAB) is the oldest unit of the Institute which has the onerous responsibility of opening up new and challenging trainings.

ing and employment opportunities for the visually impaired persons. The vocational courses being offered are continuously aligned with the latest market trends and most up-to-date industrial requirements. Most of the vocational courses have been recognized by National Council of Vocational Training (NCVT). Visually impaired men and women in the age group of 18-40 years are entitled for admission to the vocational courses on fulfilling required conditions with qualifications. Apart from proficiency in the vocational subjects, it is mandatory for all the trainees to learn Braille, Mobility and Home Management Skills. They can learn vocal and instrumental music as per their choice.

6 Model School for the Visually Handicapped

Model School for the Visually Handicapped is one of the top educational boarding schools, affiliated to CBSE Board and established in 1959. It has students from various backgrounds and from many different parts of the country. Mission of the School is "To educate every student to the best of his or her ability". The package of services and benefits offered by school include free education, board and lodging, uniform, books and equipments. The school provides an environment that encourages a questioning mind and gives students many avenues for expressing themselves and building their skills. The students study Humanities in classes XI & XII. Computers have been introduced from class three only. The dexterity of the fingers moving on the keyboard reflects the perfection of the students. Academics have adopted wide curriculations in Model School for Visually Handicapped because the endeavour of the school is in work for the all round development of the children. There are four libraries i.e. Talking Book Library, School Library, Print Library & Braille Library. The students of the school are excellent sportsmen & candidates. They have proved their capabilities in the different national & international sports competitions, the latest achievement was 4 gold and 2 bronze medals of the SBSA Youth and Students Championship 2000 held at Hyderabad, U.S.A. Yoga & Judo Kar-

Keeps them mentally fit & physically agile. To stimulate their creativity hobby classes in Music, dance and drama are also offered after the school hours. Hobby classes are also arranged free of cost after school hours in church using their talents. The school provides an environment that encourages a questioning mind and gives students many avenues for expressing their creativity and building their skills.

Department of Rehabilitation

Training in Independent Living Skills

Training in Independent Living Skills is a key component of eye rehabilitation programme. The training enables newly blinded persons learn skills to carry out day-to-day functions of life independently to the maximum extent possible. The institute is conducting two different modules of Independent Living Skills Training. One is of three months duration at Deemedup and the other of 45 days duration at Regional Centre, Cherrapunji and Regional Chapter, Sylhet. Its major components are training in orientation and mobility with white cane and sighted guide, Braille and use of adapted technologies, home management/personal grooming and socio-economic adjustment.

• Guidance and Counselling

~~The~~ ~~million~~ ~~number~~ ~~of~~ ~~blindness~~ ~~has~~ ~~serious~~ ~~implications~~ ~~at~~ ~~an~~ ~~emotional~~, ~~psychological~~, ~~and~~ ~~social~~ ~~level~~. In some cases, the trauma of loss of vision if not addressed properly can result in depression and social withdrawal. In order to assist newly blinded individuals, the Institute established a ~~new~~ Intervention Unit in 1983. It uses only carers and social workers assessment and provides guidance and continuing support and social psycho-education. The Unit also works as a referral point in restoring confidence and self esteem. The Unit also works as a ~~major~~ intervention for reintegration in many newly blinded individuals.

Their work programmes of training educationalists well as their own under the ADIP Scheme

The Department is committed to promote the availability, knowledge and use of assistive devices.

Assistive devices and technologies designed for persons with disabilities as they relate to hospitalization and rehabilitation.

४८८ शुद्धिकरण

प्राचीन राज्यों ने भूमिका रखी है। इनका विवरण उत्तराखण्ड विविध राज्यों के द्वारा दिए गए अधिकारी दस्तावेजों में से लिया गया है।

- १) विद्युतग्राह्या भौगोलिक विविधताएँ सर्वे ग्राम चौकी-पुराताती प्रदेशातील दोन ग्रामांच्या नावांची विविधता अवदस्था। विडोरी इतरेप्रमाणे
 - २) पुण्यकी उद्योगांमध्ये विभिन्नीता व्यावरण देखा
 - ३) गांवातील व्यवसाय, कृषी विधांची विविधता विभिन्न ग्रामांच्यात व्यवसायांचा वर्णन

१४७८ गिलका केंद्र नवाबन होती अरबी तो सा विद्याकल्याण अधिकार्या पुनर्जीवनाम पार ग्रीष्म वास होले, ज्यामुख पुनर्जीवनामा ज्याहेटीरी मुलजीने इत्यामती राजसाही अदिता प्रयोगात वाप ग्राफ्टी। १९७० पाच्चना इत्याक्षेत्री राजसाही रुद्रात्म प्रयोगाम लक्षिकाती राजस्यामाली राजसाही व्युत्पादनी विवृत केंद्रातमे सा सरकार प्रयोगाम विवाह घेवाना ॥

१९५६ च्या जापन विषयक कायद्या मीत घोषितानंतर अमेरिका पुढीलचा आणेला
दसोला वाढ घेला. ता नामांवर मुख्यमंत्रीलालगांव सामंजिक नाम + गविनार्थीला द्वारात्री भास्त्र
प्रकाश-गळ-भास्त्रात्मक अधीक्षण उठवले आणि निवारणी द्वाराप्रका करण्यात आली. ता भक्तांच्यानं
प्रयोगात्रा यांनी नाहीला उपलब्ध वार्ता नाहीली ग्रन्तीला केली काढे दी पुढील प्रमाणे.

Establishment of Department of Disability Affairs-

Though the subject of "Disability" figures in the State List in the Seventh Schedule of the Constitution, the Government of India has always been proactive in the disability sector. It has not only running seven National Institutes (NI) dealing with various types of disabilities and seven Composite Regional Centres (CRCs) which provide rehabilitation services to PwDs and not only hire rehabilitation professionals but also funds a large number of NGOs for similar services and also a National Handicapped Finance & Development Corporation (NHFDC) which provides loan at concessional rates of interest to PwDs for self-employment.

At the Central level also disability being one of the several responsibilities of the MoS/J&E, and being looked after by just one Bureau, has resulted in inadequacy wherein, as most of its time and energy is spent only on implementing Ministry's own schemes, meeting their expenditure and physical targets, and organising annual time-bound activities like the National Awards for empowerment of PwDs. In the above background, it was stated in the 11th Five Year Plan that "The 'Disability Division' of the Ministry of Social Justice & Empowerment will be strengthened by converting it into a separate Department, so that it can liaise effectively with all the other concerned Ministries/Departments and fulfil its responsibilities towards the disabled". Looking to the specialized nature of the subject "Disability", the wide ranging work to be done in the light of the UNCRPD, and the inadequacy of existing implementation structure, the time has now come to upgrade the existing Disability Bureau in the MoS/J&E. The decision to create a separate Department of Disability Affairs within the MoS/J&E was taken up by the Government, on principle, on 3rd January, 2012. This was also announced by the President before both houses of Parliament on 12th March, 2012. Now the two departments have been created under the Ministry of Social Justice & Empowerment, vide notification dated 12.5.2012, namely, i) Department of Social Justice and Empowerment

Office of the Chief Commissioner for Persons with Disabilities, New Delhi:

"The Office of the Chief Commissioner for Persons with Disabilities has been set up under Section 27 of the Persons with Disabilities (Equal Opportunities, Protection of Rights & Full Participation) Act, 1995 and has been mandated to take steps to safeguard the rights and facilities to the persons with disabilities. Based on the complaints filed before the Presiding Officer, if the provisions of the Persons with Disabilities Act, any rules, bye-laws, regulations, executive orders or instructions are violated or are not implemented, the Chief Commissioner takes up the matters with the concerned authorities. The Act also empowers the Chief Commissioner to issue suo-moto notice of any such non-compliance."

Rehabilitation Council of India (RCI), New Delhi:

"The Rehabilitation Council of India (RCI) was set up as a registered society in 1986. On September, 1992 the RCI Act was enacted by Parliament and it became a Statutory Body on 22 June 1993. The Act was amended by Parliament in 2000 to make it more broadbased. The mandate given to RCI is to regulate and monitor services given to persons with disability, to standardise syllabi and to maintain a Central Rehabilitation Register of all qualified professionals and personnel working in the field of Rehabilitation and Special Education. The Act also prescribes punitive action against unqualified persons delivering services to persons with disability". In short the Rehabilitation Council India was constituted for regulating and monitoring the training of Rehabilitation professionals and personnel, promoting research in rehabilitation and special education, the maintenance of a Central Rehabilitation Register and related matters."

National Trust on disability :-

"The main objectives of the National Trust are to enable and empower person with disabilities to live in independently and as fully as possible; to extend support to registered organizations providing need based services; and to evolve procedure for appointment of legal guardians for persons with disabilities requiring such protection. The Government of India has provided Rs. 1.00 crore toward the corpus of the Trust. The income generated from the corpus is utilized to implement its programmes. The State Nodal Agency Centres (SNACs) provide coordination assistance at the State level to enable the National Trust to implement its programmes, disseminate information and train mentors and professionals. The SNACs function as Information Centers, facilitators, project monitors, learning centers, LEC activities and networkers".

National Handicapped Finance and Development Corporation (NHFDC) :-

The National Handicapped Finance and Development Corporation (NHFDC) has been set up by the Ministry of Social Justice & Empowerment, Government of India on 24th January 1997. The company is registered under section 25 of the Companies Act, 1956 as a Company not for profit. It is wholly owned by Government of India and has an authorised share capital of Rs. 400 crores (Rupees Four Hundred Crore only). The company is managed by Board of Directors nominated by Government of India. NHFDC functions as an Apex institution for channelling the funds to persons with disabilities through the State Channeling Agencies (SCAs) nominated by the State Government(s). The NHFDC operates through State Channeling Agencies nominated by the respective State governments and Union Territory Administrations and has the following main objectives:

- a. To promote economic development activities and self-employment ventures for the benefit of persons with disabilities.
- b. To extend loans to persons with disabilities for up gradation of their enterprises.

required skills for proper and efficient management of self-employment ventures;

- c. to extend loans to persons with disabilities for pursuing professional/technical education leading to vocational rehabilitation/self-employment; and
- d. to assist self-employed individual with disabilities in marketing their finished goods.”¹⁹

National Web portal on Disability(Punarbhava):-

Rehabilitation Council of India (a statutory body setup by an act of Parliament under Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India) in collaboration with Media Lab Asia (A section 25 company setup by Ministry of Communications and Information Technology, Government of India) launched this interactive and informative web portal Punarbhava on Disability and Rehabilitation on March 12, 2008.²⁰ Web portal Punarbhava adheres to Web Content Accessibility Guidelines of the World Wide Web Consortium (W3C) that works to make the web accessible to all users, despite differences in ability and physical limitations. The services and information related to disability and rehabilitation offered by various government bodies are spread over hundreds of websites at various levels of navigation hierarchy and many of them remain largely unnoticed. The portal acts as a platform to connect all these services and information in a manner that these are easily accessible and available to the persons with disabilities in well-authenticated form in field. We intend to conduct an impact study of web portal to make it more useful and accessible as per feedback of users.²¹ You are requested to take part in this study by completing demographic details and questionnaire. The information provided by you will only be used only for research report on impact study and will not be disclosed. The summary of the report will be uploaded on web portal upon its completion.

१९४९ च्या उत्तरांक याचे खाली तसेवानी शिक्षणवालयातील अधिकारीचा विवर क्रमागाठी आहेय संवादार रामगोपाळचा होयाणा किंवा, ता अभियंत्रीचे असद्य भवते प्रबळावेदा गोवन्हासाठी प्रवाहात्तमा शिक्षणातीली तात्रह कराऱ्यात्तमा मिळाल्या तज्ज्ञ देवे होतो. परंतु कृष्ण शिक्षण याचे कृच्छा काळी एकेवर भागीतीचे तारी नाही, तर अंतिमे तीक्ष्ण आणि उपर्यात्तमा भागीतीचे तारीतीता विद्यार्थ करावयवात्ता होता.^{११} आता मानवव्याकाशापेक्षा दारकांना राज्य देशराज्य नियांना किंवा केंद्रांना याचार संभिती असा कुराच्या संवादापैकी दृष्टा, आपेक्षे कृच्छीची भर्तीव देवज्ञात्तमे काढी कल नाही. गिळवले तरी सर्वांची प्रात्मा रांगेव ता असितीलिपयांची झुणां गेली हे जीवे दुरुप्राप्ती असले तरी शिक्षण अधिकारीचा विवाह तेलग्यात तुल्यात आली है. गफलावै नाही.

या नितरच्या काळाता १९५१, माझी संवादाची डेहरादून येथे दरकारी शिक्षणात्तमाती घडीली तरी शाळा तुम्ही तेली, ता शांतेच्या स्वामनेन्द्री देशवारांना असा शिक्षणावेद्यी नवे शांते स्वीकाराती. स्वप्रक्षेत्री तज्ज्ञाती विशेष शिक्षण तुम्ही तेलग्यात तरी तेलांगाने नाला भर्तीव असुदूरन वाची असुदूर दृष्टी शिक्षणासा विष प्राप्त शाळा, मग त्रिंश शिक्षान्वय तेल शिक्षणात आला. तुम्ही तेलग्यात तेलांगाने नाला भर्तीव आसांग १३०० रुपांची एकांतिक शिक्षण राज्यात तुका केले^{१२} तुम्हाच्या शिक्षण नोंदवते तेलांगानी शुद्ध नियोग भवेद गलण्यात आला. देश नियांचिक बोर्डने तेलांगानी शिक्षणासाठी शुद्ध नियोग भवेद गलण्यात आला. असा भवावाती विशेष शांते त तेलवारी उल्लंगा तामाच्य आलेल्ला ओळखावी व नियोग दिलेला गारा आणि शिक्षणात नवीनी असी ही गोंधारा घेती. पूर्वी ता गोंधारा विशेष आलेगाद शिक्षाती नाही, संपूर्ण देशवारांनी देशवारचे शिक्षण इता ४९२० शिक्षाती नियांच्या शाळा दारुस आली. हे शांतेवर्ती असून होते.

शिक्षण शिक्षणात्तमा - १९५६ -

१९५६ चे शिक्षणक दारुन आहे शिक्षणाच्या वृत्तीत स्थान सहजावी दरले आहे, ता भिन्नात तरी-आणग शिक्षणाचा उद्देश तप्पे केला आहे. तो असा "आपाविश्वासाने नीयनाला आगांचे नियां वैय आधाराच्या नियोग करावो आणि तामाच्य शिक्षणासाठी त्याना तप्पा तरी" ^{१३} आपाविश्वास नियां वैय आधाराच्या नियोग करावो आणि तामाच्य शिक्षणासाठी त्याना तप्पा तरी. आपाविश्वास नियां वैय आधाराच्या नियोग करावो आणि तामाच्य शिक्षणासाठी त्याना तप्पा तरी. आपाविश्वास नियां वैय आधाराच्या नियोग करावो आणि तामाच्य शिक्षणासाठी त्याना तप्पा तरी. आपाविश्वास नियां वैय आधाराच्या नियोग करावो आणि तामाच्य शिक्षणासाठी त्याना तप्पा तरी.

三

- 1) अमनसामी इस्तर नियारिका(प्राप्ति) करती जातवी है। आहेत।
 - 2) इस ग्रामान्वयनमध्यात रायांती जातवा नियारिका प्राप्ति नाही तिथात तेली ग्रामपाली आहे।
 - 3) संगतिशील ग्रामपाली तिथात दण्डाविध नाही किंवा पुरुषा यांना ग्रामपरिषद विलंबात दरवाज्यावरील विलासातील उत्तमता:
 - 4) उपर व्यक्तीवाच आपांच्यामुळे तिथात द्वारा मुख्य प्रियाधार वर्गीय ग्रामपाली नियोजित विधान व्यापक झोडपुऱत

१८५ तक कामगारों नियन्त्रण नहीं हुआ। इसीलिए वापरी दबाव बढ़ा।

"The Persons with Disabilities Act, 1995 makes the following provisions in regard to education in Section 26: The appropriate Government and the local authorities shall-

- (a) ensure that every child with a disability has access to free education in an appropriate environment till he attains the age of eighteen years;
 - (b) endeavour to promote the integration of students with disabilities in the normal schools;
 - (c) promote setting up of special schools in the Government and private sector for those in need of special education, in such a manner that children with disabilities living in any part of the country have access to such schools;
 - (d) endeavour to equip the model schools for children with disabilities vocational training facilities & provisions as regard education in Section 271 The appropriate Government and the local authorities shall by notification make schemes for conducting part-time classes in respect of children with disabilities who having completed education up to class VIII and could not continue their studies on a whole-time basis;
 - (e) conducting special part-time classes for providing functional literacy for children in the age group of sixteen and above;

- (c) imparting non-formal education by utilizing the available manpower in areas and after giving them appropriate orientation;
- (d) imparting education through open schools or open universities;
- (e) conducting class and discussions through interactive electronic or other media;
- (f) providing every child with disability free or costless books and equipments needed for his education.”¹²

शिक्षणात् दो प्रोत्साहन अंगाना शिक्षणाचा मुलभूत आविष्ट व्यापाल केलारी, पण त्या असंपत्ती गमनीय धाराती दुलोरेत घटिलल्या अणापेक्षा शिखण यांची जास्त.

एकातिवा शिक्षणाचा स्वतंत्रता धारणीमध्ये ले ते कार्य आले, ते तर्फ तज्ज्ञ प्रवाणीती का नावाचिनी शिक्षणाचा उपभोक्ता आले, तुलनेते इक विकाप दुर्भिकितम याहीले. परतु एवत्तेवा शिक्षणाचाचा आही नोंदी रुदिला निमित्त शिक्षणाच्या अवानना उद्याविकाळ प्रवेशी कुदयांद्याले आणि निमित्त आवाहन करताना, उत्तमतरी ही साहित्याचा खरदीसमुद्दी आवधक घटक, बाबतक भजा, शास्त्रांचा भजा, निमित्तका आवाहनांचा संख्या व असंतोषीकृती ३% आवधक ही नोंदी आज घेणाऱ्या जाहेत.¹³

१२.५ जातिका वारांवळ :-

गांधीलया प्रशासनाचिक प्राधान्याच्याकाळीनी तपकाच्या असांवित विकास, नोंदवणी ने मुद्रावैतन व भागीकडे असू असावीची निकाळे लवात येली. असून तो नोंदवणी अपांच कल्याणाचाची “८० कोटी रुपयांची तपाक असावत आली, शाच यात्राकाळीत ५०५३ गट्यां जरुरतने किंवित निगमानुकूलवाण अवलू (Central Social Welfare Board)’ ने तपाका मढक निर्माण केले असून तपाका राज्यस्वरूप आवाही तुला किल्या. नामांच्या नोंदवणी योग्यांची आवाही करू असेही ते बोवरसु इप्रती आले. दुसऱ्या यात्राप्रवित्री योग्यांते यांच्या तुला, ज्यायांचा अली व्यावरातील योग्यतें, घाराघर सुविध्याची निर्मिती व अवण लिहारावे नियम यांनी वाल्याचाची निकाळी तीन क दुसऱ्यांतीली खांडी प्रत्येक भागाती यात्राविरुद्ध असाव. आला अस्या यात्राप्रवित्री नोंदवणी निवृत्त नवारंदी संस्थाता भरीम उपलब्धाची नदा करण्यावर नर ठेवा. प्रवाणींची या उत्सवासंघर्ष निर्णिती व उन्हांची कामगार यात्रावर निमित्त छात्रांनी केढे विकासात वित्त घेतील, असी अपेक्षा

हाती, बड़ा चौकटीने भाग, दुर्लल, वद्य देखिया, जिसमें मुखी राष्ट्रपति की छापी ही आयी। इसका अधिकारी श्री उद्धव सरसपाणी जल्दी रेल्फोर्म अपनी जानकारी देख ले ले तो उसकी राष्ट्रपति की छापी उसकी जानकारी देख ले ली गई।

गोपनीया गांधीजिक संस्कृति में भी विवरणित गांधीजी की जीवनी १९३० लेटे हैं, जहाँ
कहा गया है कि वह अपनी जन्मस्थान वाराणसी १९०५ में ब्रिटिश राज्य के अलै वरदर नामका
एक खाली पट्टी स्थित बाजारी घर से जिसमें गांधीजी या गांधीराम नामका व्यक्ति ३८४९१.५९
रुपये हैं। इसका अतिरिक्त एक और वाराणसी के अलै वरदर नामका एक व्यक्ति १०% छापी
है। गांधीजी जन्माये वराणसी के अलै वरदर नामका व्यक्ति उसकी जन्मस्थान की ओर से आया
है और विद्यार्थी बनकर अपनी मुख्या समाजसेवक जीवनी की दृष्टि से निष्ठा नामका व्यक्ति
गांधीजी की जीवनी गांधीजी की जीवनी की दृष्टि से निष्ठा नामका व्यक्ति

५३७ अंग्रेज प्रतिरक्षण रामाय

आंतरिक वैकल्पिक पार्ली संस्थानांच्या संघे नवीनीत अमा देशातील भारतात ५८,३०० एकूण दुप्रियवालांचे चाचाचासी नेट होडे लकडे इतरांचे १०० दुप्रियवाले आहेत. आहेत ३५,५०० गोपालगंगा डिविलिहंट, येणे हे उच्च शाहरातील मासिनिक्या कल्याण, तर १०० दुप्रियवाले घराना भैंसामुळे गोपालगंगा डिविलिहंट, कापडीवाप्प वाहारे फिल्म Royal Common Wealth Society from the चौथ्या मा सम्बद्ध द्वारा घारात दुप्रियवाले दिविलिहंटी आणेलेला दुप्रियवाले शोपठव्या ने यांची या गोपालगंगा डिविलिहंट ५५,५३५ दुप्रियवाले ठेंड्यांची दृष्टिकोनी कृत्यात तासी ओडियोगी, नरेशार्थी घराने असाऱ्याची नव्यापामा, गोपालगंगा डिविलिहंट दिविलिहंटी आणेला हो. गोपालगंगा डिविलिहंट दिविलिहंटी नव्यापामा, गोपालगंगा डिविलिहंट दिविलिहंटी आणेला हो.

१२३४ वर्षांपैकी वार्षिक एका अवलोकिती ०३ टका लागतचे वरपास प्रतिवार्षिक
लागतानी अंतराम घेण्याचे कोणते चनोरु घेण्याचे आवे प्रमळे हे वर्ष २०२६ यांनी सांग ठगावार न
दिवापास भला आहे तबाहीता १२३४ वर्षांपैकी गोऱ्यांच्यात २५८६ ९० शेळी (प्या ११५
वर्षांकी तातुद काळावासा आसी जाहे या तिरुवृत्तीरातील उग्र गोऱ्यांच्यात निरिवापण जव्हा
पर्यंतीची वारपास प्रतिवार्षिक एडम

Facts on National Programme for Control of Blindness:-

"National Programme for Control of Blindness" was launched in the year 1976 as a 100% Centrally Sponsored scheme with the goal to reduce the prevalence of Blindness from 1.4% to 0.3%. As per Survey in 2001-02, prevalence of blindness is estimated to be 1.1%. Rapid Survey on Avoidable Blindness conducted under NPCB during 2006-07 showed reduction in the prevalence of Blindness from 1.1% (2001-02) to 1% (2006-07). Various activities/initiatives undertaken during the Five Year Plans under NPCB are targeted towards achieving the goal of reducing the prevalence of blindness to 0.3% by the year 2020.

Main causes of blindness are as follows - Cataract (62.6%), Refractive Error (19.7%), Corneal Blindness (0.90%), Glaucoma (5.80%), Surgical Complications (1.20%), Posterior Capsular Opacification (0.90%), Posterior Segment Disorder (4.70%), Others (1.19%). Estimated National Prevalence of Childhood Blindness / Low Vision is 0.80 per thousand.

Goals & Objectives of NPCB in the XII Plan

1. To reduce the burden of blindness through identification and treatment of blind at primary, secondary and tertiary levels based on assessment of the overall burden of visual impairment in the country.
2. Develop and strengthen the strategy of NPCB for "Eye Health" and prevention of visual impairment, through provision of comprehensive eye-care services and quality service delivery.
3. Strengthening and upgradation of RIOs to become centre of excellence in various sub-specialities of ophthalmology.
4. Strengthening the existing and developing additional human resources and infrastructure facilities for providing high quality comprehensive Eye Care in all districts of the country.

- 5. To enhance community awareness of eye care and lay stress on preventive measures
 - 6. Increase and expand research for prevention of blindness and visual impairment
 - 7. To secure participation of Voluntary Organizations/Private Practitioners in eye Care

४.३.३ इटनारेक तरस्ता :-

आत्मीय गुणपूर्णताएँ मुलभूत तत्त्वाण्ये तर्हि भारतीयोंसाठी जाणालिला, असेही कृतज्ञकांमध्ये दरल्ला आणि हायांना संवीची रोकाने दरहावी रुद्ध तात्पूर्य करण्याचा आले आणि मुलांनी अपासूनीत अवै दुखले प्रट्टजना इमारी सामाजिक स्थान वाढाविला. प्राप्त केल्ला दिवी ती उपरांगी अन्यायाचा घाणांडारी आहे घटनाचा अवयव ३६ ते ४५ वर्षांच्यापासून कॅलेंडर तारखमुद्दीर्घ वराप्रवार, तुष्टी, अलग इत्यापेक्षा तांत्र तत्त्वाचा अस, तिकृणाचा तांत्र तत्त्वाची ३०८८ चंद्रकां प्रत्याशाची भवीद संस्कृत ग्रन्थाचे दुर्लक्षित वार्तनमात्र आणि आहे.¹

३३. विधायक सभ्यामुख्यान् सरकारने अपारं विकाश तत्वमध्ये पुनर्जीवन कर्त्त्यामात्रा देखील उद्योगांचा अव्याहोग काढून काबी करण्याचा प्रस्तुत फैसला आवं या लाईमध्ये १९७१ चे ग्रीष्मावधी तात्पात्र वैज्ञानिक उद्योगांचे

१९९५ चा काददो :- जाहिनक व सामाजिक अंदागाने प्रिंसिपलता दराक सुर कारणात्ता दुर्दृष्टी
प्राप्तीचा दुर्दृष्टीचा प्रयोग राष्ट्रातील 'विलेग' येते । डिसेंबर १९९२ ही ५ मिनिट्सट १४२ आ याकाती
प्राप्तीचा दुर्दृष्टीचा प्रयोग राष्ट्रातील 'विलेग' येते । डिसेंबर १९९२ ही ५ मिनिट्सट १४२ आ याकाती
प्राप्तीचा दुर्दृष्टीचा प्रयोग राष्ट्रातील 'विलेग' येते । डिसेंबर १९९२ ही ५ मिनिट्सट १४२ आ याकाती

କାନ୍ତିର ମହାଜନା—କାନ୍ତି ଧାରାଗାନ୍ଧି ପାଇଁ ବରଷାକାଳ ପାତା

अपार्विया अनामे लेखण मराठ्यांना भारतीयात वाचिसा काढवा आणि या कलाप्रदृष्टे
अपार्विया, गांधी लम्बाती मात्रा काढवानी नव्हेत तुलते प्राची इसी आण्वेदी वा अन्यायामुक्ती
प्री अभावीही आहे-

અંગરેજી નાયારી વિસ્તારે પાર નહાતું આવ્યાને પ્રથમ વિસ્તારમાટે લાંબા પ્રાણાના જિકાદાર બિલ્ડાપ જાલે નાણે, કુલે કસે કરી હોય કિસ્સોમાટાની પ્રથમ ચાલાનીએથ્યા હાલ્યાં મા કાશાનાં હાયદરાબાદનું સિલ્વિન વિની નાણે, આ અંગે તરી થા કાશાનાં એથ્યા રોની મારી કાશીની ચેરા—

- 1) श्री कल्पनाथ 'परिवार' द्वारा शहू बिल्डर्स नेटवर्क द्वारा लगाई जाने व्यक्तिगत
सरकारी अधिकारी द्वारा देखाया जाता है।
 - 2) भूमि प्रणाली आयोजना व आयुक्त नामी नियमों के अनुसार आयोजित की जाती
जाएगी।
 - 3) कावड़ाला ब्रह्माण्डपानी इन्होंने अपनी अपीली दी।

अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष २००६ –

मेरे पाता लक्षणने अपारिवर्तनी सही भाग लाहौर के जाते तासाएँ ने युद्ध कारोबी निश्चयनी दिग्गजता, बरत उपरामि उपरामि यात्री लासा दिवा या गोदावरी कुटी लंगापांच गोड अविडी, दिवाली घास, तामाक गाहड़ अस्पासा मासामा याव्या अठावीचा लाला तुर्कले प्रभावे।

The National Policy for Persons with Disability, announced in February 2006, attempts to clarify the framework under which the state, civil society and private sector must operate in order to ensure a dignified life for persons with disability and support for their caregivers. The National Policy for Persons with Disability includes:

- Extending rehabilitation services to rural areas
- Increasing trained personnel to meet needs
- Emphasising education and training
- Increasing employment opportunities
- Focusing on gender equality
- Improving access to public services
- Encouraging state governments to develop a comprehensive social security policy
- Ensuring equal opportunities in sports, recreation and cultural activities
- Increasing the role of civil society organisations as service-providers to persons with disability and their families

The policy recognises the need to replace the earlier emphasis on medical rehabilitation with an emphasis on social rehabilitation. Community Based Rehabilitation (CBR) has been an effective model of rehabilitation, and the policy states that CBR will be encouraged.⁷⁷ Like my policy statement, this one too emphasises the direction that interventions for persons with disability must take. But there

no clear roadmap, or even list of priorities, on how this is to be implemented on the ground. A Ministry of Social Welfare official, who did not want to be named, said no national policy ever gives a timeline, as it only presents an approach to be followed under which programmes are drawn up, normally over a five-year period. Since draft policies for PWD have so far only been drawn up by Chidambaram and Harichandran, the national policy will inform the disability plan to be incorporated in the 11th Five-Year Plan, which will have timelines, and funds for programmes can be allocated through the Finance Commission.

However, according to Leyel Akhi, executive director, National Centre for Promotion of Employment of Disabled People (NCPEDP),¹⁷ the above-governed process of the National Policy for Persons with Disability was a sham — no significant attempts were made to circulate the draft among PWD and NGOs for their comments. In 2005, this was unlike the successful consultative process adopted prior to finalising the 1995 PWD Act.¹⁸ As Deepanjali Bhattacharya says, “Does the National Policy for Persons with Disability announced in February 2006 indicate a withdrawal of the State from its responsibility towards the disabled and a transfer to them that responsibility on civil society and communities?”¹⁹ That trustee National Policy for the Disabled: No clear roadmap for action. Persons with disability (PWD) have been blocked out of our everyday reality, reaching only those who are caregivers. Census 2001 says, PWD constitute 2.13% of the total population. The conservative estimates place Indians with disability at between 5-6% of the total population. This translates to 6 crore people including persons with visual, hearing, speech, locomotor and mental disabilities. Seventy-five per cent of people with disabilities live in rural areas, only 30% of this population is literate and only 39% employed. Women make up 42.46% of the total population of persons with disabilities.

Deepanjali Rana further says: "As things stand, persons with disability encounter huge difficulties in interacting with government officials and making job applications. Although laws exist, they lack teeth. Very few organisations are penalised for not providing barrier-free environments. In fact, this basic requirement is seen more as a voluntary gesture — this implementation provides it only as a pro forma activity even. No one considers the fact that, according to the 1995 Persons with Disability Act, the provision is mandatory by law. Besides, even government organisations have not managed to meet the 3% job reservations for persons with disability. Inclusive education too has largely been a failure; primary school do not have facilities for children with disability thereby effectively excluding them from the first level of social interaction that would help toward developing a more sensitised and aware population""

In light of all this, it certainly is to be seen whether the National Policy for Persons with Disability 2006, that ultimately looks good on paper, will ever be effectively implemented on the ground. It is time for the Ministry of Social Justice and Empowerment to go full-throttle and prepare a timeline for implementation of key provisions, strict departmental accountability, it's time now for some real action.

According to Swapna Raha, "The government has proposed 108 amendments to the Persons with Disabilities Act, the overarching disability legislation in India. Disabled rights groups are demanding a new law (and that would guarantee civil and political rights to disabled people) and expand the definition of disability""

The Ministry of Social Justice and Empowerment of the Government of India has been holding national consultative meetings on proposed amendment to the Persons with Disabilities Equal Opportunities, Protection of Rights and Full Participation Act (PWD Act). Meetings have been held in Delhi, Hyderabad and Bengaluru.

recently in Kolkata on March 13, 2010. The debate centres on whether there should be amendments to the existing law, or whether there should be a new law.

The Persons with Disabilities (Equal Opportunities, Protection of Rights and Full Participation Act, or PWD Act) of 1995 had heralded a new dawn in the lives of disabled people in India. For the first time in the history of independent India, a separate law had been formulated which talked about the multiple needs of disabled people. Very soon, though, activists as well as disabled people felt that the law had too many loopholes. However, this Act did help disabled people to come together forming groups as they started making demands to implement this law.

To the delight of disability groups, India ratified the UN Convention on the Rights of Persons with Disabilities (Disability Convention) in October 2007. This Convention marks a formal shift from the archaic medical model to the social model and promotes the rights of people living with disabilities. Article 1 encompasses the overall objective of the Convention which is "to promote, protect and ensure the full and equal enjoyment of all human rights and fundamental freedoms by all persons with disabilities, and to promote respect for their inherent dignity".

The Convention recognises that persons with disabilities are right-holders in and deserve recipients of government schemes. In contrast, the PWD Act has a different formulation. The PWD Act was enacted *not* to implement the Principles enunciated in the Full Participation and Equality of People with Disabilities, or principles on the Full Participation and Equality of People with Disabilities, or principles that did not expressly recognise rights, but laid emphasis on the need to eliminate physical and social barriers so as to promote the participation of people living with disabilities. The PWD Act, thus, does not internalise any of the core principles that form the bedrock of the Disability Convention.⁷⁴

There is a definite need to review the existing legislative framework in India to examine whether it adequately promotes the rights contained in the Convention.

The Disability Convention imposes two key legislative obligations: (1) to ensure that the rights contained in the Convention are realized and (2) to eliminate discriminatory laws and practices that are discriminatory towards people living with disabilities. These are repealed or amended to bring them in line with the Convention.⁷⁹ Since its ratification by India, there has been much discussion of the manner in which Indian laws must be modified or harmonised to give effect to the obligations under the Convention. While the Ministry of Social Justice and Empowerment (MoSJE) has proposed 108 amendments to the PWD Act including 50 new provisions, the Disabled Rights Group (DRG) led by Javed Abidi has unequivocally stated that the PWD Act has served its time and that there is a need for a new law.

"Consultations in this respect at national and local levels are going on throughout India right now," Advocate Kanchan Panigrahi, who is blind herself, says that the old law will need more than 300 amendments to make it suitable to our times, and obviously it is better to frame a new one than make 300 changes in the old one. Shazia Bhaktry, mother of two disabled children agrees. She says it is ridiculous that government is even considering so many amendments. "Even in the amendments, positive actions are not mentioned," comments Sritama, a law student and member of Campaigners for Inclusion. "Any law without positive action will not work in this country," she says.⁸⁰ It is clear from the objectives of the UN Convention that civil and political rights and economic, social, and cultural rights stand on the same footing and that the state must make efforts to realize both. The PWD Act barely provides for civil and political rights and the amendments proposed by the MoSJE too, neglect these rights. The PWD Act adopts a narrow definition of disability and confines it to "blindness, low vision, leprosy cured, hearing impairment, locomotor disability, mental retardation and mental illness". As opposed to this, the Disability Convention recognises that "disability is an evolving concept".

and avoids using specific conditions and severities and broadly calls "persons with disabilities" to include those who have long-term physical, mental, intellectual or sensory impairments which in interaction with various barriers may hinder their full and effective participation in society on an equal basis with others.

The PWD Act will require a complete overhaul. The Act must be revised to comprehensively provide for all the rights recognised under the Convention. In a letter to the minister of social justice and empowerment (<http://mcpandlaw.micentral.mn.gov/leg/letter-to-hon-blr-minister-for-social-justice-and-empowerment>) the Usability Rights Group has said that the amendments proposed by the ministry do not mirror the rights-based framework of the Convention. In the past, the Juvenile Justice Act, 1986, was re-enacted in the form of the Juvenile Justice (Care and Protection of Children) Act, 2000 to give effect to India's obligation under the UN Convention on the Rights of the Child.

Involvement of stakeholders is inherent in a rights-based approach and their exclusion will be discordant with the goal and spirit of the Disability Convention. The form that the harmonisation should take must be thoroughly discussed and decided in consultation with various stakeholders and the government cannot afford to take the decision unilaterally. With strong voices rising from within the disability sector, can the state remain insensitive to this demand? "It's the decision of our allies; and we will not allow a few officers in the ministry to force down their opinion on us anymore, whatever comes," says Kapursh Chakrabarti, secretary of Swadhanam, a West Bengal-based organisation with more than 1,500 disabled members.

अमरिका युद्धवारे अणी मिळी आए असेचाता विनाशकरता। ग्रामपाले भोजनात, अंतिष्ठी
मिळावा दृष्टिकोन द्या बाबाकडे ज्ञान देवी आवश्यक आहे, उक्ता आणि भूमिकेतील अंतर्काळाती
कल्पनांचा आणु भावितव्य नवीनी कृत्य असेही २०५५ वर्षात दिला^४
प्रा. जगद्गुरु श्री ब्रह्मदीन जिंदगी प्राणात्य दिले आहे, तसेच कृती भावात्मक अंतर्काळातील
माझी जल लागाऱ्यी जाईल.

४३८ घोषणां

असर नसणाऱ्याची इच्छा सद्यो तीलेल्या जनासत्तें अपाच असेही लक्ष्यातील असेही
इतीला आहे: खालीलीला तीलीला ही बोहोचिंडी आणी जनगणना करी ती, विद्यावाच अणावाचका
द्यावाचार कीवटी करून अपाची विद्यावाचार करून आहो. हा विद्यावाची विद्यावाच नव्यात
प्रारंभिक नाला तरुणाटक्यातून त्वाच सुखावा देवयात अल्ला, त्वा सुखावाच्ये उपर्यात्याच्ये सुखावाच्ये
विचाराता अपाच अली ए त्वाचीं कुटुंबीय आण्या नापत्ता कुपाचल्या लणार भावील, याकडे कुटुंबी
कम्बळाचा दूधना दस्याऱ्या अल्ला दोखा आलावासाठी तीलील्या युद्धासमाचे माधार मिळावा -

(१) नव्यावाची व्याख्या अप्राप्याता करताता प्रवाचन आणावाची रुक्तावाची गोला! कानावाची

जली:

(२) अपाचाची व्याख्या भावाते दीनाची अस व्याख्याचा अनुकरण काढ देणावाची आला

(३) हा वाक्यात अपाच ए द्यावाचा कुटुंबीयाता भावातील अनुकरण आहो.

विष्णु विट्ठल वरकार १९३१ मधील अणावाची जनगणना किली भावी, विनाशका
विष्णु वरकारची ड्रग्गी झारी, तर विष्णु विट्ठलच्या प्रवाचनी व्याची नस्त अंतर्काळाची
विनाशका दृष्टिकोन दिला होता

जनगणना २०५५

जनगणना २०५५ असेच असावी उद्दिष्टपूर्ण उरली आहे. हा जनगणना २०५५त्याची
जनगणना २०५५ असेच असावी उद्दिष्टपूर्ण उरली आहे. यामुळे हा जनगणना २०५५
सर्वांत भावकाली लक्षात येण्यात आला, यामुळे हा जनगणना २०५५

प्राचीन लेखोंमध्ये साहिती ग्रन्थांने असेपुढी आणि नवीन शब्दांचा वर्णन केला.

The Indian Census is the most credible source of information on Demography (Population characteristics), Economic Activity, Literacy and Education, Housing & Household Amenities, Urbanization, Fertility and Mortality, Scheduled Castes and Scheduled Tribes, Language, Religion, Migration, Disability and many other socio-cultural and demographic data since 1872. Census 2011 will be the 15th National Census of the Country. This is the only source of primary data in the village, town and ward level. It provides valuable information for planning and formulation policies for Central and the State Governments and is widely used by National and International Agencies, Scholars, business people, industrialists, and many more.

The present set of results pertains to data collected in the Census 2011 on disability information on disability of individuals was collected during the Population Enumeration phase of Census 2011 through 'Household Schedule'. Similar information was collected during 2001 census also. Information for individuals residing in 'Normal', 'Institutional' and 'Homeless' households were collected. The table C-20, 'Enabled by age-group and type of disability' has been generated on the basis of processing 100% Census Schedules. Attempts to collect information on eight types of disabilities as required five in Census 2001. Designed to cover most of the disabilities listed in the "Persons with Disabilities Act, 1995" and "The National Trust Act, 1990".

Definitions) Changes 2001-11

In Seeing:-

~~One eyed persons were treated as disabled in Census 2001. At the Census 2011 such persons have not been treated as disabled in seeing. At the Census 2011 enumerators were asked to apply a simple test to ascertain blurred vision. At Census 2001 no such instructions were given.~~

In Hearing:-

~~Persons having hearing aid have been treated as disabled at Census 2011. They were not treated as disabled in the Census 2001. Persons having problem in hearing through one ear although the other ear is functioning normally was considered having hearing disability in Census 2001. But in Census 2011, such persons were not considered as disabled.~~

In Speech:-

~~Definition was made clearer in Census 2011 to recent persons with speech disability. For instance, "persons who speak in single words and are not able to speak in sentences" was specifically mentioned to be treated as disabled.~~

In Movement:-

~~Specific mention of the following was made in the definition for Census 2011
Paralytic persons [those who crawl] Those who are able to walk with the help of aid
Have spasms and permanent problems of lower muscles Have stiffness or tremors
in movement or have spasms, involuntary movements or tremors of the body or
have fits etc. Have difficulty balancing and coordinating body movement [Like
loss of function in body due to paralysis, Eczema etc. Have deformity of body
like hunch back or dwarf]~~

Mental Retardation:-

~~New category introduced at Census 2011 Mental Retardation was covered under the category of Mental disability at Census 2001.~~

Mental illness:-

New category introduced at Census 2011. Mental illness was covered under the category of Mental disability at Census 2001.

Any Other:-

New category introduced at Census 2011 to ensure complete coverage. This option enabled respondents to report those disabilities which are not listed in the question. In such cases, where informant was not sure about the type of disability this option of reporting disability as "Any Other" was available to her/him.

Multiple Disability:-

New category introduced at Census 2011. The question has been designed to record ~~as many as~~ those types of disabilities from which the individual was reported to be suffering.

Disabled Population by Sex and Residence, India, 2011

Residence	Person	Male	Female
Total	26,810,557	14,986,202	11,824,355
Rural	18,831,921	10,408,168	8,223,753
Urban	8,178,636	4,578,034	3,600,602

Percentage of Disabled to total population India, 2011

Residence	Person	Male	Female
Total	2.21	1.41	2.01
Rural	2.24	1.43	2.01
Urban	2.17	1.34	1.98

ability will prepared and distributed among the persons. Seminars and workshops were held at State level to create awareness. Banners and Posters on disability displayed. Events like Auto Rickshaw rally, car rally, Cycle rally etc. were organized. At District Directorate level many innovative modes of publicity were used. Enumerators' kit included a special file on disability.¹⁰

जरजारी आणि लीपन मिळालासाठी कौलापात्रांचा लाभ करते महसूले. वरोगाव्याहाराची सुरक्षाची शुभेकांत उदात घेवली तर हे सर्व कार्य प्रवाणींनी स्वयंस्वामी आहे. अमानुषी दिलेले आरबुण बुलवत ने हे प्रयोग करायचे आहे. त्याची अभियांत्रजपणी होत नाही. एटेजेट ड्रूप्ट फोलेट गिळाऱ्याची अभियांत्र अपारांना नियांना ठिठूल आवडवणे त्या नुरजा सुसिद्ध झूलाच्या नाहीत. अफल फोलेटापैकी कायद्यामात्रात नेव्वारीकिला नियांना आयोजन करत यात. त्याचा नियांनांनी मानानुसारे अनेक तोकाता दृष्टी गमावाची लागते. योड्याचात, नियांनांनी कलही अध्यात्मांवारे धर्मदात गोषी अपारांना देऊ करतो हे सारे प्रवल उवऱ्याची गाठलाल. नाहुा नरीच ड्रूप्ट अपेक्षित मासित, अथवा अपारांची कौलेली अपेक्षा इतर दुव्हंश घटकाराठी झालेली क्रांती गार्द्यात, नेतृत्वी तपांका आपल्लो त्यामुळे नंतकारच्या अपेक्षा गहलायाची नुसारी अभियांत्र घडवणारी तिएकी व्यवस्था हालेली दिलेली नाही.

संक्षेप

- १) ५० years of work for the Blind in India, op.cit., vol. p. 16
- २) Report on Blindness in India, op.cit., p. 39
- ३) Ibid., p. 40
- ४) George Pereira, 'The Handicapped in India and their Rehabilitation'
Published in - Indian Current, Vol.3, New Delhi, 14 September 1992.
p. 61.
- ५) http://www.mvih.gov.in/index.php?option=com_content&view=article&id=48&Itemid=68
- ६) <http://servicesfortheblind.gov.in>
- ७) https://www.mvih.gov.in/index.php?option=com_content&view=article&id=49&Itemid=69
- ८) Ibid Pg.No.70
- ९) Ibid Pg.No.70
- १०) Ibid Pg.No.71
- ११) Ibid Pg.No.72
- १२) Ibid Pg.No.73
- १३) George Pereira, Ibid., p. 41
- १४) S.N. Ganguly (Ed.), **Disable in India**, Barabati, 1983, p. 101
- १५) भारत लिंगप्रथा वास्तविक्याय, विचार, मुख्यमान सम्बन्ध, प्रकाशन: अनुलोदित, प. 42.
- १६) <http://socialjustice.mao.in/over.asp>
- १७) <http://socialjustice.mao.in/orgdocs/mosunder.asp?pid=61>

- १८) <http://www.rehabcommil.nic.in/>

१९) <http://socialjustice.mca.gov.in/citizenformunder3.php#n3>

२०) <http://www.nihile.org.in>

२१) <http://www.pomrbnivany>

२२) S.N.Gendragaukar, op.cit., p.10).

२३) भारत निवास सारसंग्रह, पुस्तक, १, १४

२४) Author P.M. and others, op.cit., p. 390.

२५) Sudesh Mukhopadhyay, 'Management of Educational Programmes for People with visual impairment'. See with the Blind, op.cit., p.7)

२६) Section 26 The Persons with Disabilities Act, 1995

२७) Section 27 The Persons with Disabilities Act, 1995:

२८) Educational Conditions and Facilities for Blind Students (Booklet) Department of Education, National Association for the Blind, Mumbai 1987, p. 59.

२९) S.N.Gendragaukar, op.cit., p.101.

३०) ibid., p.28.

३१) शेष संकेटरों आवास व क्रुद्धि निवास मिशन (प्रधान नियम) भारत सरकार, गोपनीय नियमितीय वाचन विभाग व २०१३ रेलवे भव. १ वी २००९४/२/२१।

३२) <http://npcb.nic.in/>

३३) Bhushan Tumati, 'Policy on Blindness in India', See with the Blind, Chinnam, Purandare and others, (ed.), Singapore, 1992, p. 42.

३४) Persons with Disabilities Act, 1995, op.cit., p. 2.

३५) ibid., p. 13

३६) ibid., p. 21

३७) www.socialjustice.mca.gov.in/

36) Deepashali Bhosle, Communication and Information Sector, Social Forces

On India [and his] been a journalist with The Times of India] National Policy for the Disabled: No clear roadmap for action (Article).

InfoChange News & Features, August 2006, <http://infochangemedia.org>

37) Ibid.

38) Ibid.

39) Swagata Kalita, India needs new legislation on Disability Rights

(Article), InfoChange News & Features, March 2010

www.infochangemedia.org

40) Ibid.

41) <http://www.un.org/disabilities/convention/conventionfull.html>

42) Swagata Kalita, Op.cit.

43) <http://www.un.org/disabilities/convention/conventionfull.html>

44) Swagata Kalita, Op.cit.

45) भारतीय कुरियाल संस्कृति (राजस्व), कर्मसूल तथा समाज सभ्य अपासनारी
संस्थाएँ, मुम्बई, २००५, पृ. १३।

46) भारतीय जनगणना २०११, भूकम्प भव्यात्मक रूपानुसार भूक्ति, पृ. ११।

47) Census of India 2011, Office of the Registrar, General and Census
Commissioner, India, New Delhi, 27.12.2011.

48) <http://www.linguageneralis.com/jan2010/disabilityinindia2011data.pdf>

प्रकरण संहारे

गिर्वाल

इण्ठाणा हा भूतांश्चलासी जागाती आहे ताणि सूक्ष्माक असत अहे, प्रभातीच्या दुरितातील केळपणेती (याती) पांढी आहे. इतोहालदेखत हा सांवत्तेन शालमारी, तातिमला व नीरसतीनीय माझेता नाहे. याच्युले अनेक नव्यांगीन विध्याची उत्तिमासाते भर-भर्ज आहे. तरी देवतांचे जागी गिर्वा इत्तदासाठ्या परिघासाठीकडे राहिले आहेत. ताण्युज्युलाडी, राङ्गाडी, गोवत्तेवाडी, चापाल्टन, निवाडी इत्यांची, अद्यांची, दुर्गेतासाठीकृष्णांगील भूमध्यांकरोवरुण नव्यांगी इतिहास, सत्त्वदौरियां इतिहास, तामांगीला इतिहास आहा तिथिव विलऱ्यांनी ओवेहासलेखता आहे. आहे, नवी देवतीन काढी लाई इतिहासलेखात या परिघासाठीकडे राहिले आहेत. अशांच येवा दुर्लक्षित [प्रथमांड संबोधन्यांनी दुर्लक्षण] शब्दात या इत्युपायासाठी केला आहे. आप-अपायक्या उद्दर्शी लागेल्या सामाजिक दुर्घाणा हा एक दुर्लक्षित तिथिं आहे. याती इत्तले आलार दुरुता प्रसादात घेतली तेली ताती. ताताल्होतातले नकात विकासित झाले, तेली लाडी, गुदी, आदिसारी, रोखारी, दिल्ली असा अनेक दुर्घाणी तापमात्रा नियंत्रणात. तरी फुस्ती आप-अपायक्यावाक्य उपायांवरुणा सुमाराता का विशेष दलावेतच याकृत असेहा सुमाजिक सुव्यवरणाच्या अनुसारी आलेले इतिहासी हेतुम प्रानुसारावे क्वी-विषयक: व्याख्यानिक आहे. आप-अपायक्यांनी हाती समाजाची एक अटके आहे, यी जागाविधी दृष्टिरूपात अपरिष्ठेय प्राण असू लकडी. याती विवरतारुप व्यापल्यांवरुणी ताम्हना लागेल्या उत्तमांगी धोगात. इतिहासात नाही. आहे असाले नाही या विषयाची दखल कृतेवालांवरुणी कीरिताही, निपाती नियम इत्यांत तेली ताती. आप-अपायक्यके सामाजिक दुर्घाणा हा लिहिलेलांवरुणी रातो यांनी ताताल्होताती दोघडलेला शुरेहासावा नीचवार्ष भाग अडके नव्यांना या विषयासाठा व्यापक संवेदन.

दृष्टुत संप्रीष्णनाला एकूण ताती प्रकाशांवरुणा वादिरक्ते आहे. तातीको पहिल्या प्रकल्पातील विवराते दर्शकृपा वृद्धांगीची चढी कली आहे. तेगांवृती संकलनाना असाल्यांदा उकलपती जातपूजा

जरीवालांकां गारबाईने अभ्यास कर्त्तव्य, सर्व व्यापक शिक्षणाना आणि संप्रिण आहे, तु सांदर्भात
मात्रात्मक अपग्रेडाची दरावेशी नोंदवत्त्वात फैलवली आहे.

अपेक्षा या तकनीकीं प्रमुखाने गोपीरिंद्र अवगत, समसित अपेक्ष्य करावाचिता
एपेक्षा या तीव्र मुकारत वर्णित्वा करते आहे. शास्त्रीय अपालटार्ड अवगत्वाचा लक्षा जलावाही
उपर्युक्त चित्तारी विकारजन्म अपाल भृष्टवेकलाचा अध इ. कुमाराच्युता आवाजी या आठ उक्ताचा
विविक्तता केले असू, तर मानवित्व तुष्टाचारातील भृष्टवेकला, भृष्टवेकला उपायातील तुष्टाचार, या
मीठा अवगत फैक्टरीकृत केले जाहे. अविद्यारथ्यांची विगतातील विविक्तता अपेक्ष्य व नानवित्व
अपेक्ष्य, याची दोन्ही असूत उपर्युक्त मानवी वित्ती अवगत, सत्त्व सामाजिक तर्फी मोठा दृष्टके सा दोन्ही
विविक्तता अवगत विविक्तता उलीकडे रोकिला आहे; चित्ताची तात्पात्र विविक्तता अवगत या तकनीकीं
किंवा आहे असू, अविद्यारथ्यांची विविक्तता विविक्तता याच्या विविक्तता नहावारी, दोषित, झोलते तुला के
विविक्तता नामाचित्ता अपेक्ष्य या तीव्र मनेतृ समाजाची केंद्री आहे.

अमलार्जुनी एक त्रिमात्रिक सामान्या असर्वज्ञ उपराज्या द्वारा विश्वासी व सुखारद्यागादावे
पर्याप्त लक्ष्याभ्यास और व्याहारिक लाभों ग्राहीन कर्त्तव्याद्युमि व्याधार्थी अप्यगाहके सरोद्देश
गमि, अर्थात् दिव्यवस्था ॥ सामरसाक्षात् (शिरसी) परं तत् विविधान्तः परिवर्त्तये आहे अथ जीवनसाम
प्रवृद्धीकरणात् व्याप्ति ॥ या द्वितीयांनन्द-प्राप्तेन जाहे, असलुके राज्यान्वये चैकेकीमात्रा युक्त विस्तरान्म
दिव्या आहे आगच्छाते शिरिः प्रत्यार्थ व्याधकडे गारुण्याची लग्नात् त्रुटीतुल्ये, या प्राप्तपूर्वीक
व्याप्ति की लक्ष्यान्वया त तिथे नव्यान्वय प्रदृश केली आहे : असर्व ती सकलवत्ती रप्ती शौभ्यात्मा व्युत्प

जनसंघात्मका अध्यात्म नेता आहे जगभरातील कृष्णकृष्ण पादपात्राच्या तृतीयोन्नत्याला अधिकाराच्या व्याख्यातानी दिलिपता बाढळने या दारकृष्णाच्या उपर्यागामित असे स्पष्ट करत आहे, का करते येण्याचा विस्तृत व्याख्यापिक, विस्तृत व्याख्याता इति वृत्तिकीर्तनातील वृत्त्या आवेदन, या स्वाधाराला उपर्यागाचे मूर्णांध न असेहदी असा एवं प्रकारात वर्णिकरण केले आहे. परंतु तात्त्विक दृष्टिकोनातून दृष्टिवाची व्याख्या असावा असेहा असिरोलक्षण आणेली नाही. तामुळे तो तर्वा व्याख्याकृष्ण व्याप्रकारातील गृहीतील जाणावते. डॉ. ईलन शीलर म्हणतात, “कृष्णाचीही तृतीय व्याख्यात्मकातील दृष्टिकोनातील व्याख्या याची नोंदवियाप्ती तो त्वावा दीक्षित्याच्या सहाय्यातील आणेले शोषणे व्यप्रकार किंवा त्रुटीलक्षणे काळ नाही. हे योग्यी आवश्यक आहे” । याद्वायिक्यातून फाहिनात ती तीर्थी तेकम्हलम्हादलाई नाही उल्लेख केले.

कानार्मा त्रिकालीने जोड़ा वे समाजवाद्या इसे बोलिए त्रिकालीन लाठना पाहता है। या सब
पाठोंचा सिधार तिलास आपरखण्डी खासी किंतोराची मरुं छांते ही खासी लक्षण छसा, शुभमारुद्धा
सामाजिक प्रस्तावी गीद्यांग आमांगा लजाल येते मुण्णुनच जलातो, अपांगा जीवन्कुलम सुगालम्बासाकी
दे लांगी समन्वेताले न्याची दर्दन भिंगी व उत्तराप्या भरियाच 2000 व अंधे जीवन्कुलम अवलोक्या
समर्पण करणे आवश्यक वाचते

प्राचीन वृद्धवाचा वेद या प्रकरणात घटला आहे

अंग शिक्षणासाठी नार्थ १७८५ राजी फ्रांस कर्यावाहीच्या वर्तमानात याचे यश सुना झेलण्या आहे. जाती अंगज जगभर प्रसरता आसेपासा उल्लेखनात ठाव ठाना अंगात शिक्षणाचा भर्त्य कृत्य दिली. अंग माजीही इतर भागांसोरात्तोव अंगात इतरा समाज कर्वा ठिकाला बाहिर, शिक्षण, स्वातन्त्र्य आणि कृपत च्या प्राप्तवर उभे नाण्यांची वापर सधी चाना प्रिज्ञापला होता. आविधानांचा विश्वास देयाणास तो जातीचा पहिला कृपिशील माणस झोता, याच विजातुलांबात्तुला अवाईवाणापा प्रारम्भ आला. और जीवनसुधार अवलंबीच्या माट्टलाईया विचार जाता अंदी याते गुरु केलेला. अव्यक्ताकाही भोठी क्रांतिकारक घटना सुणायी लागेल.

समान्य शिक्षणप्रमाणेच भास्त्रातील जंगीवाणाचा एरम प्राचीन देशांमध्ये तुलातील १८५ चे उशीरा आला. इतर जातीक कारणाबरोबर छिश्वन विश्वानंगांनी इताऱ्या दुर्लक्षित कृत्यात सुल्लादे केल्याने १८८५ राजी भास्त्रातील पहिली जंगीवाणी जमुतसर यांना दुर्दूळ आली. अविधिवाणांचा खरा निकारा महत स्वातंत्र्याचे बालखडात आला. त्यामुळे आष जीवनसुधार जागृतीला दृढ जावार प्राप्त आला. या स्वातंत्र्याचे जातीव्यक्तात दृढ.

काही अंगी आपल्या प्रतिभेद्या जोरावर, आपल्या प्रयत्नांनी तप्पुण रामाकृष्णी विश्वास तिकारी दाखलाता, याच व्यवस्था समाजाला विश्वावक बळणे लाभासाचे नार्म उत्तरात. अंग निकारामांक गळकीचा प्रारम्भ उ निकाराम अंगाच काही अंगीह्या प्रगल्भात्तुना आला. आहे या उद्योग स्वयंसेवी निकाराम आंदोलनावरूपात्त्वा याची भूमिका महत्त्वाची आहे. पण, या निकाराम प्रणाले दोघे उद्योग काही अंगीह्या आहे असू अंगीह्यी अंगासाठी केलेले लाई. डोळाती अंगभाटी किलल काय असेतील निकारामांकी निकाराम काय न कृत याचा उल्लेख निकाराम निकाराम काही नाही. प्रामुळे अंग लोकानसुधार चळवळ उपकार धूत गेली. प्रतलेण दोमगांधे उदाहरणाबद्धता बळ लिनिजा निमिंगा लुई लॉलिनसुधार चळवळ उपकार धूत गेली. प्रतलेण दोमगांधे उदाहरणाबद्धता बळ लिनिजा निमिंगा लुई लॉलिनसुधार चळवळ उपकार धूत गेली. अंगातील एकसेव भूमी निर्मी आहे की निकाराम अंगातील सर्व लाला लिनिजा जातात. या विषी अंगातील एकसेव भूमी निर्मी आहे की निकाराम अंगातील सर्व लाला लिनिजा जातात. या विषी अंगातील एकसेव भूमी निर्मी आहे की निकाराम अंगातील सर्व लाला लिनिजा जातात. तुई बळावी राजिणांनी यांनी उपर्युक्त निकाराम बळ लिनीवराबद्ध अंगातील भूमी निर्मी लिनी.

करणी आ असाया प्रियंगा कैन तीपाला महान्म आहे ते आव तिकाळीला असे प्रियंगावर कम्हतीत भेटावले रथम आहे. असोब सुदृढ लक्ष्या तमाची देशांमध्ये गवतावारीने जे जीवांकरसाचा दोषेदार पुर्व होत गाही. तुम फरती योगदान आ इतरांमध्ये देणे बाहे.

मात्रा ५० वर्षांत असाक्षयाणा यात्रेची शिल्पर इतका भाला आहे की, अंगाळी
प्रवासी जाऊ राष्ट्रात्या रोभा अंगाळीने गोलार्धातील पुतलीपांचीतला वितरै, अनेका रस्त्यांदै
उड्या जागत्यामध्ये यात्र्यांवर कायदेत असेही, त्यापेकी जागतिक यज्ञ नाही. आतर्यातील अन्य
विधा प्रणाली, आतर्यातील प्रतिक्रियांनी दुटी सरकार राष्ट्रात्या कृष्ण असेहा, उक्तीला
अंगाळी विठ्ठल, जाग विठ्ठल आतर्यातील सरकार या कृष्ण एवढारसी नम्हार के अंगुक राहे. निवास
(या) अपुकाराहे. यात्र्या कायीचा औळज्या आद्या थेसरा असे नाही पलक्कांशील नाचार्यांनी
कांग अप्यु असलाना राष्ट्रीय प्रमाणत तपा, अखिल भारतीया उमा तिच्या नानांवर अष्टव्य
प्रतीक्षेवा तरस्या. या तीव्र उत्तराड्या नाहीया यादवाबा खेलला आहे. प्रामीण्य काढ्यासून याचा द्वा
निवास आहे. असारे प्राणांमध्ये कृष्ण मठ आहे उत्तोष्यन्तप्या शुक्रांत आहे. अग्नी नद्या उ
निवास द्वारा प्रवासी आपांच्यातील तिच्या राष्ट्रीय प्रतिक्रियांनी तरस्या द्वा अंगुकांची घेवणे
वाच्यात तातोत राष्ट्रात्ये अनेक शहरांना तिच्यापुरुते गार्हित स्वरूपाने कांग राष्ट्रात्ये निवास
नाही. तर नाशननामध्ये चलूक्यांचा राष्ट्रात्या कांग राष्ट्रात्या प्रतिक्रियांशी विश्वासी
विजितावी आहे, तिच्यांची याज्ञेयपूर्ण प्रतीका प्रतिक्रिया कांग राष्ट्रातील राष्ट्रातील यांनी आहे. ता
विधा 'पुणे अधिकार विवाह' या मुळी तात्रे व नाशननामध्ये कांग राष्ट्रात्या प्रतिक्रिया कांग राष्ट्रात्या किंवा

गुरुमानिकामी पुणिती येता, जरावा घाला आहे. असल्यासुदृढार वक्तव्याची ओळखावाही, नाहीय
हृषीकेशदपांते अस्यास केला आहो. अरे लक्षण यात्रा, नाम-चक्रावर दे नववर्षाची तस्तावना।
कायमुक्ते नंद वैद्यनाथांचा शालकीर्त्त्या विवाहकाळा याची फत्ती प्राप्त झाली आहे. आस्तावा सदभावाची
ग्राम्य भूतपत्र नेते. खेळांचा घघकलाण आवाजात प्रारंभ व विवाह प्राप्तखुद्दावे निश्चयांपासूनच
आत्मा या दैवाल कागिरत उत्तरेल्या सर्व-स्वधरेची नामाभ्यु "नैनाला नैनीतिप्राप्ता
प्राप्त हे चिनाईड (तेपे)" या लक्ष्मीचे नाम विशिष्ट भवीत, वीक्षित. रात्रीचा रुद्रावार आहे. या लक्ष्मीची
स्वाधाना नाही. असेही वृक्षांशी रुद्रांशी मुख्यमुख्य घाली. रुद्राव लक्ष्मीप्राप्ता या स्वरूपाचा ५० वर्षांतील
जगद्युक्त अद्यायी योगला आहे. तसेचेतो त्यापना, शुद्धिहात यादिहून, विशिष्ट कार्य, प्रशिक्षण व
पुनर्वसनाचीभवा काढून, सांगेतिकी नीवा, सांगिधन तपाय, अस्तव प्रतिक्रियां व निरूपने कार्य, जगजागृही
कार्य, आणि विश्वक रुद्रकारा. घारण उत्तमिण्यात नैनीची भूमिका. नैनीची न्यायी व नैनीचा
नायांचे नैनीचे न्यायी योग्याची नैनीचारागे रुद्री केली आहे.

कोणीही उपायांके लक्ष्मी रुद्रावन विवाहातील विवाह अवाहनावरता नाही कायद्यावाची
असाज मान्यता निवाप्ती आवश्यक आहो. १९४५-काळात नीवाले उचित ची जाण, ज्ञान वी काशीलय
उक्तांकित कर्मचारी यांना, विशिष्ट न्यायाची व्यापत्तांची, अन्यकृत्यात लेलातील याचविधि. यापूर्वी व
जागतील अशा कर्तव्यांची उपरिकृती अपेक्षा अस्तावा नेही आपले धोयपांत्रा व भौतिक्याची धारा
पाच्या बळावर असाल्यामध्ये कावऱ्याच्या विविक्त विवाह प्राप्त केला गिले. याची नैनी, क्रूराव विवाहाक,
निविष्ट व्यापत्तांमध्ये, असाल्यामध्ये याचाविषयीची लक्षात रुद्राव नातीला नैनीचे कल्पनाची भूमिका,
ती नैनीचे नायांच्याचे नैनीचे
केवात ताता करतारी जलाती मोठी तातीची चूनी घारिता. १० उणिक्या आजीचे नैनीचे नैनीचे
निविष्ट व्यापत्तांची इतर वातावर लक्षात, त्यांसाठी स्वता, अंतिष्ठीची वाता. आणि या डाळीची रुक्मी
प्रशिक्षण सामाजिक काळेकांनी. लडानी राटीचा तरसा. नैनीचे नैनीचे नैनीचे नैनीचे नैनीचे ५० वर्षांत
तेसीने आपली नैनीचे, नैनीचे, युद्ध, आपली व्या-पुराव लक्ष्यप्रभावी वासीये व गहीचे व्या, नैनीचे व
जगिलाकी आपली, नैनीचे
नैनीचे. अस्यांची रुद्राव नातीची खोजीची घेते. प्रददा. तात्पत्र नाट आगी निस्तीर्थ पायाचीवर
नैनीचे. अस्यांची रुद्राव नातीची खोजीची घेते. प्रददा. तात्पत्र नाट आगी निस्तीर्थ पायाचीवर
नैनीचे. नैनीचे नैनीचे

तंस्त्रिमार्ती पाद दशलोचा वकळे फारे मीरा नवतां अद्यन् अमेणी समस्यावरे गुरा गल्ल जया विगतं ती
गल्ली तांय केला आहे, ती नावणापाहिला झोरे कुमाग दातारी कृपातले त्वाप्रपाण “आज
भासावे अधि-कल्पनाश्च शिवान्”^{१०} तरडा घावरस आहे, त्वापेही प्रथम तथा खाल्याचा
खाले तर ते नेबवे घ्यावे लागते.^{११} चालव्याघ नवतं कला कुमाशारा, कृपातारी, तांयाती,
दग्दीतीत व गुरुमितारी उल्लं आहे

वर्षा की जाति भासता है अंगुकलयण बनवाया निश्चित है॥ जाति भालौ नहरी, सपुत्र
समाजमध्ये अभ्याकड़े घासपायला गूढ़िकोन निरापावनका होता है वा रास्तेगेल ग्रासिकावरना उद्धारने
तख्ताला दिशेत लहकारी मिळत आहते, त्वारा भालौत नेहवी लापना इडली नवापनेद्या, त्वारा
सरवने २० लाख प्रथमध्या उद्धतामध्ये ल्यान लगार टेवती छोते या स्थानानुसारी पुढील ।५० त्वारा
तेव्हा जाति केले, त भावमा नेहवा स्थापनने भासतीय उद्धरण खेळननित्याची वृद्धमुक्ती
पाणी भालौ, आसे भृषता येडल आज या भेजत आर्ह लक्ष्यांने नेह ती भावतातील भवांग साठी
मध्ये बनवी आहे किंगाहुला भासतातील ऊंद जीववसुगार वृक्षबलोदा विकास निवृत्या चालानप
पहुळा भालौ आहे दृश्यप्रणा जन्मी बालात, छतक्या व्यापक भरीव रुद्राहमास उद्धरणाचा काणी दारणाती
वृक्षबलोदा वेगात विसर्जन पाठणारे ग्रन्थांचा भूषण नेहला तीला किंवा प्राप्त भालौ आहे, उद्धरी नवा
नेहवी कालापद्धती मध्ये दुष्किंचित यासद्ये त्वारणात्।

कली, डॉ अर्चना पूर्णी जाहे.
प्रायः प्रत्येक शहरातीची धुमिली करारी रपह किंवा आंतरिक काळावडी अभासाचा

प्राचीनतमान्तरे भरकारने विशेष लक्ष दिल्यावै आवश्यक नाही. भगव ब्रिटिश राजसंघाच्या अंतर्गत सरकारने या अधिनांगी ओळोधी दखल देणालो लेती वित्तिका उपकार पदार्थावै आवश्यक नाही अधि-अपगाव्या प्रभावावै दुलशंच केले. असे पात महाला वैषार नाही, विजहुणी लागत गाला सरवाच्या अंदी लोकांसाठे घडवाकीत वीलगी आण घसली. 'नवनवा इन्डियास्ट्रीज' या विजेत्या विषय, अविष्ट न पुनर्वसनासाठी स्वतः तसुकी प्रकार ठिकाणका उपाय घटनात्मक नाहुदी. अपग विकासासाठी युवी जागरूकांड मोरचानुसारा भरता दोखाच्या अधि जीवनाचिकाच्यासाठी काय केले. असेहु कल्याच्याकारी राज्याची भविका असाऱ दी. हे सब काय स्वयंवर स्वतंत्राचे झाह, हे तपह होते. सरकारने काय आव्यासावाबूले पांढांगी अधि-अपगाव्या देऊ लाल्यात्यरीज फारसे काढी केल्यावै दिसत नाही. मरणारव्या तांगी अधिनांगी अभावी अपग छळवक्त नव्यांनी यशस्वी होऊ राबती लाभ.

१९४५ यांचे अपगाव्याची उत्तरीकामदा समव इत्यावै ही पत्रस्थिती बदलू लागली. या इत्यावै अपगाव्या एका उपकारी अधिक दुर्भाल करायात आली. अपगाव्याची रूपन आपगाव्याची विरिंगी आल्यांने अपगाव्या तंत्रांकरणाच्या प्रक्रियेला बोग आला. आपल्या उमासाठी अगडण्याची दुडी अधि व्यवस्थेवै बदलावली. युनेक याच नगण्याव्याव्या नव्याव्याव्यासाठी ओळेले व्याप, लागले, किंवा, गिंगार, भनातेसे जगणे अशा अनेक मात्रांची सकारात्मक तदल घडून नेत आहेत.

२००६ याद्य भारत सरकारने राष्ट्रीय अपगाव्यावक वाराण जागीर केले. ता ओरेण्टल विहारी जंगल, सुरजगी भेट व तामरी रागाजे हे वह अपगाव्या विकासाची ज्योद्दारे अपगाव्याच वित्त ग्राहणावर अपगा केवालील अन्यातकानी. अलोक कुटी उर्ध्वोरुला अगेवै इप्पुके अपगाव्याची तया अपगाव्या किंवा कुन्या उमासपा दुरुस्ती करायाची माणगी इपगाव्यासे युक्त वेत आहे अपगाव्या अपगाव्यावर आसनाची शांतिका : शृंत्यार तापि मन्त्रावैथी या विध्याचा अपगाव्या कल्यानाचा ग्रासनाऱ्या भूमिकेवै अनेक प्रश्न उपाविष्ट झालात. वर अपगाव्यासाठी सर्व प्रकार अपगाव्या अपगाव्या विवाह तंत्रकांत अन्वयावाच अरोल तर नामुक राखून जी अपगाव्यावाला नाविकामा भाविष्य, केला गेली व्यापर वाढाविरुद्ध नसत आवृद्धा भारत सरकारने तगडी गरजवै अ॒४४. तसेही ज्ञालवाच अपगाव्या विवर सुगारांची अपगाव्या विपकासाच्या विभाने यांद्याल करैले.

शेकडी थें प्रा—अपगाव्या एक विभा अ॒४५ ने आमला सुमजावा आविष्यावै घटले शेकडी थें प्रा—अपगाव्या एक विभा अ॒४५ ने आमला सुमजावा आविष्यावै घटले

असे, त्वारक मनवी इमारे जाणकारी आले गाठेज, ते सद्याचा पुढी तुलीशी राठेले हाते व्याप्त्या निश्चासतराचा विद्यार ते जन्मदार्थ या सांगे जारे केलेले गेले दूर होण्या. आधुनिक आजलास मात्री नारायणी कलू लोगांनी आहे. अपारत्याज्ञा मत्याद्या तुमाच्यां देवता अनेकांनी भागल्या काहीत्याने तिळ्याका डेवाता अद्यपुणी कारा केले आहे. समाजही या बद्यांनी आणा काही देवा भासाम्हुऱिकारे ईज लाल गाठे. या भासाम्हिक परिवर्तनांनी निश्चितपणे कम्ही प्रशंसा आहेत. या भासाम्हिक राहीचनासाठी तात्सू घ्यवरधेची भूमिका महत्वपूर्ण आहे. त्याचा गोष घ्यायांचा प्रवर्ण या भासाम्हिक राहीचनासाठी या तरीकांनाऱ्या निमित्ताने तिळेल्या अभ्यासाचुन पुढे आलेले काही निश्चय पुढील घेणारे आहेत.

भासाम्हिक परिवर्तन्या आणि शांखेसी स्वामपत्र जरी निश्चयाच्ये झाली मात्राती, तरी असे किंविताया ते प्रमाणयाने असे जीवनसुधार येण्याकीवा तेहा विकास नाव मठाराट्टाले मधुन भाला जाग्रप्रमाण स्वातत्र्याद्वय काळात सामाजिक लोगांचा राजकीय सुद्धारणामध्ये व्यापारांचा आधारीकर होता, व्यापक्याणि असे जीवनसुधार येण्याकीवा तिळेले मुख्य भूमिका घडाराकाळी घडून भाला म आमाणीत तात्सू देशात नव्यत्व नव्हारणाले केले. पाठेली अखिल भासाम्हिक लोग सुनावा नकारात्मक उद्देश्याला जाली आणि द्विव्युत, सिखालीनी आपन फोलेसा असे शाळेतून आणाची जी कालेगार पिढी वाहव मठेली. तिळे लोष जीवनसुधार येण्याकीला तरी गेले आग केल्या तिळी. नव्हान्त असामिकान व्यापक व्यापक व्यापक अस्याचा आरप्रम अलपाइवाला ते आर दी च्यास, 'पुढे त्यांकुंद गेन्या असोंतेखन' चे उरम्पापत्र आव्याचा आप्या अगमकर आणि व्याकुंदनेत्र जालारिव्हरान अलंदामले ते तात्सूपक उद्यम जगदीश भटेले हे. तरी एकाच पिढीकीला दावरच्या आणि शाळमे विष्णवी होते तिळी. त्यांचे या नीमही उरम्पाची स्वामपत्रा १९५८ च्याली प्राप्ती हे अधिष्ठण आ. भासाम्हिक असे जीवनसुधार येण्याकीने तेहुत्त नव्हान्ते अल, याची भागणा या तात्सूला तापमेण्या कालेगार याची हे तो होतीच, पण त्यांकुंद प्रशार या लोकांनी बाहीने भासाम्हिक नव्यत्व विलोगाची लोकांनी नव्याची हे तिळे इतर अस्या ग्रामांकुंद प्रात्यक्षीकर काढिवते त्यांनी त्यात्मतनाने यांनी गिरल्या.

तिळाल असार, औरंगाबाद, वाजारारक्का संघ ५ नामांचिका तुलादारांची बाहीभूमी ने गिरावती आमुनिके बनलेल्या ग्रामांकुंदे असे जीवनसुधार येण्याकीसा तुरा गावाचा घडून भाली नारायणी नारायणी तुरे त्यांच्या व्यापक्यामध्ये प्रशार आले. यात्मतेले भासाम्हिक राही भागातील त्यांमध्ये नारायणी असेही तुरे त्यांच्या व्यापक्यामध्ये प्रशार आले. यात्मतेले भासाम्हिक राही भागातील त्यांमध्ये नारायणी किंतु एकत्र तिळाल भासाम्हिक राही भागातील त्यांमध्ये नारायणी किंतु एकत्र

‘पारस्परीन् अंथ जीवनसमाप्ति चक्रवीत्या पिकासामा वालारे लगारा। अग्रस्थी एक
मठक मृणाली ल्लाहीयोजरे बाजारा ॥। का संखाली जपेव दुर्दल द्विकाव्या पिकासामा दारदलले
लिखिएवा हो। इत्यागामी राम्यांशु धर्मिण न्यायः प्रेष्ट शास्त्रानुस्त्रेते आपस्त्री जे आहो
लेले ते तिक्कालामणे उपास्त्रलक्षणे गही। ऐश्वर्यिका जागापासाठे संखारने या जमीनच्या
याच आणलेन्नाही। एका आधी जालाली तटाच्या रुपातीले संखाव्या शिळांगाली पाच्या ठार्डी
मस्तकाने। याच छ्या अल्पावधी तरी केले ते वालालाडाने जालाली रुपाता आणलेल्ला दिले ती गोपा
कलाता। आहे वाफिलाप शिळा, अक्षिलाच दुनवेस्तन वा लादभांडी लागानांने जागता तिळेले
जालाली ताति १५५५ ता आगामियुक्त कुण्डा, असुक लिंदास वागावीक्षणांनी लाल्याची अगांगाली
संखां उपगाला उपासने त्रिपांडित यांनी किंवित जालेत आहे।

आमलां अंकुरापिक असती ही दक्षे शैडचल डॉटी आरवीसरकारव्या प्रदानकार्याविभागाव्या अधिकारी।
प्रदर्शी फैले एकला बड़े यात्री घुम लिहायासीन ज़ज़ावें दुर्लीले, गत्ता उन्नेस
हक्का दोत गाये आलेल्याव आढे

आम लीफलासुमार विषयकीला आणि एकुणव सामाजिक वरदलाच्या मुलाही
चाहुन्याच्या ही मुख्य प्रश्ना आहे किंवड्हा आपलेतांनी आमदारी विधायकाव्या वक्तव्यावा
वर्ता देण आवश्या आवाजिला। ही संकलनभूत दोन यांनी प्राप्ती दुसरी विधाया, समस्त
वर्गा, चारी, मत्तसाठा उंचकावारी हूं तथ्या मूल्यांच्या बाबूने जाणाऱ्या एव्ह योग्य आवाहनी देणे,
माझीपांचल नावल, ओद्योगिकरणी या वर्गांने क्रांती या भौतिक गोटीना जाफ्फर वेळासा दुर्दा प्राप्त
की. विनियोग प्रणालेसुल्यानी ही चाहाजिल, आमिन, रेवांगी व गांधीराव विलांडीचा कैप
द्वारा उल्लेख, भारतेतक इतरेक व्यक्तिगत गोपन आणायचा व आमल्या निवारित इतरांचा उरांगा
जाती प्रतिकार तेजावाने नाम्य केला. न्यायुक्त इतर दूर्दल इतरांप्रमाणी अस-अपासना व्यक्ती
विलासाची जाती रामाजिल असी मिळू कापली, नियोगी अमंक कंटूत्यापांडे प्रातिभवता असे
महाती उघावी असहाय, दुर्वल व फलांगी प्रतिमा पुरुष सामाजिक्यावर आवडाम, सुदृढ व
साकड्हा इतरांना कोरला. लुठ ब्रेल, जांनी तुलीहैन व डॉ. लिल लिल यांच्यासारखा। ३२८ वर्षां
मृदुलीभाऊ; मृदुली भाऊ; कृष्ण लालांवा, 'आसी जन्मन खापड करीत याहू, आपडी विवाहाची
प्राप्ती एकीच आहे जी खापड काळायाचा आमव्या अविकार गाव्य करावात आवा, हे केंद्री विवाहाची
प्राप्ती उकास' ता उकास अर्थापूर्ण आहेत. असाच विकारव्या एकांप्रत्याकू रायांली मंदी दुर्दा
रायील्या लीकावाची गाव्य तांचालकोळीत. फिरी परत्तव अमल्यांनी तो तत्त्वाची निरोगी मांडून
गोलीला गोलीकांची गाव्य तांचालकोळी. फिरी परत्तव अमल्यांनी तो तत्त्वाची निरोगी मांडून
गोली. १९४८ चित्या दुर्गांने गाव्यी उकासी नस्त, उकासी कल्याणे व अमल्यांनी गोली वैष गाव्य
गोली. १९४९ चित्या दुर्गांने गाव्यी उकासी नस्त, उकासी कल्याणे व अमल्यांनी गोली वैष गाव्य
गोली. १९५० चित्या दुर्गांने गाव्यी उकासी नस्त, उकासी कल्याणे व अमल्यांनी गोली वैष गाव्य
गोली. १९५१ चित्या दुर्गांने गाव्यी उकासी नस्त, उकासी कल्याणे व अमल्यांनी गोली वैष गाव्य
गोली.

आपूर्वीचा दुसराप्रधान भौतिक विधाया ना घारुनी आवा. एव्या आणि २०८०
विधायाव्ये लागलेला नक्कीनी भोगातुके एकांप्रत्याकू चीमुळे मुखी अप्या डाळे. असां तांनी
गोमांजु जमावा जावनहयवी दुर्लभ आले. नायांनी आमीचा उपायोग असाच्या विवाह
प्रतिकार आणि प्रत्यक्षावाहाची लालवाक करता: इल लिपे लिहायाची याटी. इल दावप्रदायदर
प्रतिकार आणि प्रत्यक्षावाहाची लालवाक करता:

वाह उड़ानके, टेपरेकोर्स, सोनाल वै गुड अपर्टमेंट्स मेनेजर बसींदा गोठया मनाणाथर दूर होजा
गुहल्या रामाभृष्टवा काशासे अधिकांशता खाती प्रसा लल्ले, औरोगाकांशभृष्ट मनुष दिलेले
तप्तीकर्ष काम प्रभाव्यत्ता कुशलतेन कला लागल्याने रोजानाच्या अनेक संघी निमिण शाळा २९
व्या गोठाया जांबरीस लेक अपासारता विकास कास्पान बद्धासामानी, शास्त्रप्रणाली जागा
मध्या जागृती शेतली, लेख्यती टेलिव्हिन अफिस्टर, बसील, अंगाधील, प्राणगाळ, प्रापासक इ
च्छाव घासाच्या काम कम लागाऱ्या, जानुके फुलार्टन भाक्सेल येत आला, वा सान्दा बदलानामी
पापुलिंगेन्ट बदलेल्या रामाजिन लाभिन्हा वै गोठिका प्रसा। ही गडव्यापूर्ण काशी अहेत-

समाजाच्या जागीरी बदलप्यासाठी सास्वततेका धूकाभी गडव्यापूर्ण भूमिका पाह पाडली
आहे २० व्या सखकाळ्या उत्तराधीनाच्या जाहिन्य, भगीत, नाऊ वै निमाट गाती शास्त्रप्रणाली
मनुषील असाची पारपरिष्ठ प्रतिगा पुस्तक जगाप्रगतावर तीक्ष्ण व जावेहम प्रतिगा निमिण केली
जष नार्सी तुलसीनस यांने 'अपूर्व्याची डोळे', फेलन फैलर यांने 'पांडी कहणी' व हन्ती छोकाडी
गांव 'रेड लघव्याची गिरी' व आलगवारी, लष तांडिकर दिन्दीदीत 'ओळ र मस्त', कुसुमाशय
लिखात गिहवागार, एवाहु झोरता दिल्याजीत १०० 'अपाचा रुम्भाम उसलाले ॥' अस्त्रा तुक
असे यांनी अकोहिनाच्या नीट आलेले 'सातताची घोगाणी' व 'हीन प्रेषाचा तेनाचा' वै नाऊ,
निमाट जामाट निमित १६० आणि कलामतांत उपर्युक्तमां इ। एकांगुष्ठ जाणी अहे पांडी
लिंदवासि, हवां 'वै सत्त्वा लिला गन्ताची दिल्याजीत 'बोळ' वै निमाट या जागीतावून असीत मोर्य
साडी मिळाली तर ते आपले नद्युत्ता सद्द करू दीक्षात, हांगी विकार लागावू लोणपरिष्ठ विहारीपाल
प्रयत्न फेलेता आहे ३५—३५५५ यांच्या रामाजिन काटकाला जागाचा ददलासाठी लक्ष्यूरिती
प्रेता आहे नाहीयाची आहे प्रत्युत्त त्युप्रकाशाची नयदा लुप्त धोना येते वा विगताचा फला
नामिनेश विलेला आहे।

क्षील व्यव घटकानी असे जोकलासुपा! चल्यवलिया निमाटासाठी तीव्रीत जागेलो यात
याचा असी असा नाहे ती, जेव वीपनमध्यार घट्याक चापुलाली महाली जाली आहे, वा खंडकीर्त्या
विकारात तडारळ निमाण कराणानी घटकाचा टख्त घणी विषे असावल्य आहे खुद गंगामहानी
उलोगाचे डल्युकुही अजी विभागाचा झाल्याची घटकाचीला अत्यरुपक उसलेल्या एकत्रिताचा जागावणी
प्रिमेचा घडली आहे जेवा आरम्भिक गोपनीयातील १% जागा प्राप्ताचाती रास्ता ठेणाऱ्या आल्या

प्रादृश्य, जिन्हें प्राप्तिकरण भेदका नोकसीमाठी अत्यनुचिती शिवाळ किला जात, सेवा आवधुक्ता व्यक्तिगतप्राप्ताम् गिरजे लालाखिकावृष्टि गुणाव व्यवसीये ता व्यवसायाद्युक्त योग्यता व्यक्तते गारुदाच्या लेसी एता अव्यक्तीला नोकसी फिल्मयाची नमुद कीले; यातारीली "अल्लाड्डी अंगाला नोकसी गिरजावी, पूर्णिमा व्यक्तिगता असू" या जागीरियाद्युक्त पूर्णिमा अव्यक्तीगत्यांनो नाराजी निमित्तां छाते प्रथमताच्या निश्चिन्ता अगुखोभा अभावांप्रमाणे; त्या सवास्त्रनेतृत्व लाईव्हारहा हे युग्मागोल कारणा असू दुर्दशी व्यक्तीद्वारा व्यवसायामान्यात दारिद्र्यम् असावत व निर्वास्तेचे प्रमाण नोंदे उपलब्ध्याने अध्यासात्मीय उपलब्ध्य प्रसंस्करणाचा शांडीसवलत्ताबा उपर्याग कायेक्ष्य कर्मदील व यांचीष्य मार्गावलीन असावत येता नालेला नाही। फिल्महना इकलाच्या प्राप्तिकरणाने गर्द्यायागर्गीय व उच्चापु अभ्यापूरती त्यांदित राईलला दिसते।

वर्षावलीच्या विचारातील जाणवी एवं अवधेचा स्थानी आधुनिक कालागड फैक्टरी ने बदलावा समजाचा प्रभागाती दूषिणोत ठीक वाढ घेतीचे भागात आणि तिची जाम वाळवणी कमता यांचा वास्तव जावधा सगऱ्यासे समजासमा होते. यितरी सधारनाही असावयाचा स्तर्याहरून वालताना तिचे अशव्यांत अपगृह उरले, परतु जेवा इखाती अथवा युक्ती शिक्षण अधिक असायते, तेंका ती अपग नसारी. तोरां शिळविषयाची अलिंगा डोक्याकुळे आहे. तसेही या वर्षावली ज्ञानामुळे घडले. ती ज्ञानीग २०१० वर्षाकाऱ्या विवरणातील दुजने ने आणख शिळविषयातील ज्ञानामुळे अधिक घरमध्ये जागाची सुधी देण्याचे प्रयत्नही करते. आणि वज्राळीला विशाला अलिंगा लागला. तरं तां मुठभर दुषिणित व ज्ञानी लोकांनी तो दूषिणोत नवीजाऱ्या ठीक.

मिणव्याहो लाम्बांजेक म्हटल्यांती आणि त्यांना नव्हेत पहल्याचे असो भागील
ज्ञोलचंबळारा विकास उपर घास ठाई आणि जोगनसुधार अल्पलीचा। निकारारांगाची नव्हाया
ची आणि निमिशी ठोका लाली नाही, जागातील चमुचाराच्या आवधील याकृपयार खल्याव्याला नारक ठेवा
माहील नवो Don't do it blindly ता दाढी भाषतील कागदाचा निखा 'मैम आम्ही आम्हां' आ
पाठी याखील याकृपयार, हे तसी अद्यताचा विषयासर करणारे तर आहेतच, पण मात्रकरीवर
मीणांमी दुष्टिकानाऱ्ये निसरेशक आणि प्राणकी आहेत 'अभद्र' ही तर निवासाची दुष्टिकानाऱ्य
मानलेला उकाल्याना असेहा तर असाला दृशी नाही, अशी येती प्रथं उत्तो पण निमिशी

प्राप्ति) एवं अवश्याम नामे पूरुषाणां। ओऽन्नासीत्तद्र वाटा। एम इण्डियन ब्राह्मणों द्वारा प्रेम कुर्वन्ती भासी लिखेक ग्रन्थान् लिखे, या वर्षक्रमान्वय उपर्यन्तावे नामे विश्वकृष्णसहस्री जाडते जाते नक्षेत्र अथा लगान्वत्तरामुके दीन अर्थ सभी थेगा। तात्त्वा न्देशजे वरेत्तासीय विश्वकृष्ण, तर फुला राष्ट्राने भगवान्मात्त्रामात्त्री भासीकरे उत्तमस्य अरण्य भीष जेडा लगानी लगान्व लिखे भए व्यक्तिशी सकाद ताथत तप्ता। तो उ दीनहोसा अर्थ गृहीत गत्ते, लगान्व ग्रष द्वारा यात्र यात्र तप्ते राष्ट्रानामे ग्रीष्म लीक शेजते लिजा खुतो विश्वकृष्णान्वत्त लिनिष्ट दद्वाई तत्त्व तत्त्व जात्ते, ही अग्रावी महिला लगान्वय भन्नामये अराते, ताही अस्त्र व्यासी राष्ट्र मर्माना शुगाला वाह्यामक, वैष्णव, नामानीना के प्राप्तामुक्त अचा चेवाए घासी लगा कला लाग्ला तर हा लद्धिमान भासाक येता लहड़ अस आगर्यास तप्तार नसामे किंजा तान्य विश्वी बहट उस्ताव्या भान्नमसामी दुष्यन दाकती क्षा घोषीत्या भन्नामधी वस्तेलो अर्थ त्याणसत्त्वी विश्वमा विश्वगामी आतते ता विश्वेभो न व्याप्तामी क्षेत्रीही अर्थ अकी लगाला जंग गाढ़ा भानी, हाशुदेकोल चक्कावेला तामाक दुखला जावे

त्याच्चरनामे बजकीद इच्छामीय अभावहा व्यव्यक्तिव्या विश्वसावील एवं अडाका। असे व्याप्तामुक्त रस्तेअ अप्या देशाव्या विश्वेभु अभाव विश्वरुद्देश आहेत अस-आगामी विकास नक्षेत्र अनिवार्या नाही। लगान्वके क्षादे तुक्काव्या तासाहे नवै दाउकोधू एवं लुगांव अप्याव्या जनावद्देश इडातेले आहेत, परिणामी तात्त्वकीय प्रतिक्रियेल लिंगकीले ता तेच्चा तप्तिव्यामिळे गेले। तत्त्वजा नाही, ता जाही थोडकर लक्षारात्यवा गाडल ते पुरुषांनी त्यक्तती तासाहेनी तेलोता। उपर्यन्तुके जासी शक्त्याने तंसाचा तप्तिव्यामिळावी धोल्याचा भासकेनुकी तसी गडले.

जाहेवाराते, विक्को तां जागतिल, उसावाराम पंजिसिंहास्य झोवास जहायाव अह २० व्या तप्तिव्या तुमशाकांत राताम उभावक झोवावा उपर्योग किंवा तात्त्व आहेत सत्त्वामे काळे प्रयो शप्तके भवावास व्युत्पन्न रातालेते अधिकार तात्त्व कला तागला जाई, ता तात्त्व विश्वकृष्णान्वत्त आसी अन्तिम किंवा, विजालीय विजावीतावात कामा। अप्यसद्देशस्थाव तात्त्व तालौकुटा कले भावि तुम्हाने विश्वकृष्ण असा शप्तकिंवय प्रत्यक्षीवरीव कामावा, तां भावेद्या व्युत्पन्न आहेत, तात्त्वातात्त्व तप्तिव्या विश्वकृष्ण एवं एवं शप्तकिंवय मात्त्वात्त्व तरले आहे, तात्त्वात्त्वात्त्व विश्वेण इमलेच्या साता, तात्त्वात्त्व आसी विश्वकृष्ण ताप्तिव्या, विश्वावस्तारः, जेवेक दृष्ट्यामुके बदलेलीव्या तात्त्वात्त्वात्त्व तात्त्वा कला आसी अप्यव्याप्तीव्या विश्वावस्तारः वाय व्युत्पन्न तप्तिव्या अप्य जीवनमुक्ता विलक्ष्मीभा विश्वावस्तारः

तिले नियमी सरकारी असे व्हेळो आणि नातांने साजऱ्यासाठी दुपा प्रश्नाल लाई केल्याने लक्ष्य असावित असे नीतींगाहार घडवलीया विकल्प राखले आला, मध्यांती ही चळवळी शासनांव्यवस्था संविधानी नाही अनुभवी असावित असा लिंगी घडवाऊया असाहिक प्रमलोली विकासावळके चात आहे.

ग्रन्थांक

- १) सदगोलादी पाठा, अकरण २, लक्ष्मिप. श. ५०.
- २) सदपालादी पाठा, अकरण २, लक्ष्मिप. श. ५१.
- ३) सदपालादी पाठा, अकरण ३, लक्ष्मिप. श. ५२.
- ४) हेत्ती विस्कडी, पंजु लंचवते गिरीम., अनु ज्ञानप्ल. पुस्तिका, मुम्बई, १९८९, प. २२३.

संदर्भ-सांकेतिक-भूमि

प्रारंभिक स्थायने

संस्कृती स्थायने

- १) भारतीय अनुशासन २००१, कुटुंब पड़क अधिवाकालिका समिति, गवर्नर जनरल ट्रस्ट, अमरपाला आयुषा योग्य कालाशन, मुम्बई पाल नेल्लार, नवी दिल्ली १००००८
- २) विशेष शिक्षणिक गुरुज्ञ अनुशासन-योग्य शिक्षकोंगठी शोध परिषद, महाराष्ट्रात्मा प्राप्तिक शिक्षा परिषद, प्राचीनिक विद्यालय अनुशासन, नवी दिल्ली २००१
- ३) शासन नियंत्रण आवस्थाएँ, विभिन्न शिक्षण सिमाना, महाराष्ट्र राज्य प्रशासन, नवी दिल्ली का अनुसंधान

इतिहासिक स्थायने

- १) *Abijit Samiti, National Association for the Blind, National Association for the Blind, Bombay, 1964*
- २) *Annual Reports of National Association for the Blind (NAB), India, 1952-2003, (Unpublished), 1952-2003*
- ३) *Ashikar Ahmed S., Braille Teaching Course, National Association for the Blind, Mumbai, 1999*
- ४) *Blind Welfare, Magazine)National Association for the Blind, Mumbai, 1950-2003*
- ५) *Constitution of National Association for the Blind (Unpublished)*
- ६) *Constitution of the Punj-Bihari Men's Association (Unpublished)*
- ७) *Educational Concessions and Facilities for the Blind Students (Booklet), Department of Education, National Association for the Blind, 1st*

- Bombay, 1987.
- (ii) **Facing the Challenge** (Booklet), National Association for the Blind, Mumbai, 2002.
- (iii) **Fifty years of service to the Blind** (Booklet), National Association for the Blind, Mumbai, 2002.
- (iv) **Fifty years of Work for the Blind in India**, Ministry of Education, Government of India, New Delhi, 1994.
- (v) **Uttar R.M.: Integrated Education of the Visually Disabled**, National Association for the Blind, Bombay, 1987.
- (vi) **Memorandum of Association and Rules and Regulations**, National Association for the Blind, Mumbai, 2002.
- (vii) **Our History, Our Work, Our Future Plans** (Booklet), Puna Blind Man's Association, Pune, 1995.
- (viii) **Persons with Disabilities (Equal Opportunities, Protection of rights and full participation)**, Act 1995, Commercial Law Publishers, New Delhi, 2004.
- (ix) **Prospectus of Department of Rehabilitation**, National Association for the Blind, Bombay, [n.d.]
- (x) **Prospectus of Utkarsh Job Development Centre for the Blind**, National Association for the Blind, Bombay, [n.d.]
- (xi) **Report on Blindness in India**, Government of India, New Delhi, 1924.
- (xii) **The Blind, You can make them see** (Prospectus), PIMA's H.V. Desai Eye Hospital, Pune, 2003.
- (xiii) **They Dare to Dream** (Prospectus), NAIB-IITM Polytechnic for the Blind, Mumbai, [n.d.]

- २५) *Town Directory series- 14, Maharashtra, Director of Census Maharashtra*,
Government of India, New Delhi, 1990.
- २६) Upendra Dhami, *Chronology of Events and Activities of National
Association for the Blind (Booklet), Low Braille Memorial Research
Centre of NAB, Bombay*, 1996.

तेज गांधी

- १) *Blind Welfare, (Braille Magazine), National Association for the Blind*,
Mumbai, 1990-2002

दुर्लभ दादांने

कठवी शाखा

- १) शास्त्री आमदारां (पुस्तिका), लोकशास्त्र असेपा, पुणे, प्रकाशन कर्ता अनुचित।
- २) शास्त्री एच. डिलिहास अष्टव्या काव्य, अनु. विठ्ठल लेणे, अनिंद्योदय प्रकाशन, पुणे, १९८५.
- ३) कलर हेल्पर, वेन लासियरी, अनु. शास्त्री युवा वाचुरा आणि कंघनी, पुणे, १९८३.
- ४) शोभा भुजा (सपा व संश.), गारीब जगत्पिष्ठान काव्य, चंडे १, असाराती, पुणे, १९८८.
- ५) शोभा लट्टपाळांडी (सपा), शोभा विश्वासोऽहा, चंडे-१ माहिराज गांडी गांडी शोभा युवां, १९७६.
- ६) देसाई किनारा, शास्त्री आमदारां (पुस्तिका), आमदारां परिवा, पुणे, व्यापार सर्व अनुचित।
- ७) कर्त्ता वा. लुई बेल, अनु. अष्टव्या नित्यसंकलन, औरिल लीग्स प्रकाशन संघ, १९८०.
- ८) दुर्लभ, दुर्लभाती, नवगा. प्रकाशन, पुणे, २००४.
- ९) शोभा युवांन, "असा लम्पाकडे पालियाचा निसेणी दृष्टिकोंवा" (लव), भवित्व लोकसत्ता.

ठाणे, दिनांक १८/३/१९९०

- १०) भारतीय संस्कृत, अपनाया रोमली सामाजिक ख्रोहिताना जागरा, लखु, २००४
- ११) भारतीय उथ, अपमानज्ञवर विजय, देशभूत आणि कौणी, पुणे, १९६४।
- १२) लिळाली टेची पण लपायते रिहाई, कला नारायण पुस्तिकाळ, औरंगाबाद कामना प्रसिद्ध, प्रशासनाची, नुसार, १९६५।
- १३) संक्षिप्त पोडिंड कृतिलाल (अमिताल), अपनाये हळ, नवागट आणि कांचारी खालील, नुसार, २००५।

हिंदी साहित्य

- १४) राम डॉ. अब्दाल, विकलाणोंके लिए शिक्षा, प्रशासन विकास सूचना और प्रशासन-सामाजिक संस्कार, नई दिल्ली, १९८७।

इंग्रजी साहित्य

- १५) Beach Frederick Converse (Ed.), *The Encyclopaedia Americana*, Vol.4, The American Company, New York, U.S.A., 1903.
- १६) Benton William (Ed.), *Encyclopaedia Britannica*, Vol.3, 23rd Edition, Encyclopaedia Britannica Inc., Chicago, London, 1953.
- १७) *Census India 2001*, Chronical Books, New Delhi, 2005.
- १८) Pernandes Gummavathi and others (Ed.), *See with the Blinds*. Co-published by Christopher Blinded Mission, Bengal, 1999.
- १९) Gajendragadkar S.N. (Ed.), *Disabled in India*, 5th Edition, Somayya Publications, Hyderabad, 1983.
- २०) Goen M.S. (Ed.), *Encyclopaedia of Social work in India*, Vol. I, Forwarded by S. Radhakrishnan, Publishing Division, Government of India, New Delhi, 1968.

- 7) Kichlu T.S., *A Century of Blind Welfare in India*, Penguin Publishers, Delhi, 1991.
- 8) Lohia P.R. and others (Ed.), *Encyclopaedia of Social Work in India*, Vol. 3, The Director Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India, New Delhi, 1981.
- 9) Madan G.R., *Indian Social Problems*, Vol. 2, 4th Edition, Allied Publishers, New Delhi, 1993.
- 10) Pearce George, "The Handicapped in India and their Rehabilitation" (The Article), *India Current*, Vol. 3, Date 14th Sept. 1992.
- 11) Robin Jean, *Louis Braille*, Royal National Institute for the Blind, London, 1974.
- 12) Seigman Edwin R.A. (Ed.), *Encyclopaedia of Social Sciences*, Vols. I-II, 11th Edition, Macmillan Publication, New York, U.S.A., 1954.
- 13) Sillig David L. (Ed.), *International Encyclopedia of the Social Sciences*, Vol. 2, The Macmillan Company and the Free Press, U.S.A., 1963.
- 14) Soham S. V., *A New Approach Dictionary for Living English*, Fourth Edition, Pune, 2000.
- 15) Walter Miller (Ed.), *The Standard American Encyclopedia*, Vol. 2, 15th Edition, Standard American Corporation, Chicago, U.S.A.

WEBSITE

- 1) Website of NAB: www.NAbIndia.org
- 2) www.linguisphereindia.com

- 3) www.censusindia.gov.in
- 4) www.nivh.gov.in
- 5) [www.servicesfortheblind.gov.in.](http://www.servicesfortheblind.gov.in)
- 6) www.socialjustice.nic.in
- 7) www.rehabcouncil.nic.in
- 8) www.nhfdc.nic.in
- 9) www.punarbhava.in
- 10) www.npcb.nic.in
- 11) www.infochangeindia.org
- 12) www.un.org

‘बोलती’ पुस्तके

- 1) अहुजा सुवर्णा, अंध शिक्षा का प्रारंभ और विकास, नॅशनल असोसिएशन फॉर द ब्लाईड, (ऑल इंडिया टॉकिंग बुक द्वारा ध्वनिमुद्रित), वाचक अमर चतुर्वेदी, मुंबई, १९९६.
- 2) कुझीन्स नॉर्मन, आंधब्याचे डोळे अनु. शांता शेळके, पुणे अंधजन मंडळ, (टॉकिंग बुक स्टुडिओ द्वारा ध्वनिमुद्रित), वाचक वर्षा नामजोशी, पुणे, २००३.

मुद्राकारी

- 1) ‘नॅशनल असोसिएशन फॉर द ब्लाईड (नॅब), इंडिया’ या संस्थेचे निवृत्त कार्यकारी संचालक सुभाष दातरंगे यांची विजय कदम (लघुप्रबंधलेखक) यांनी घेतलेली मुलाखत, अहमदनगर, ६ जुलै २००६, (अप्रकाशित).